૨૫૩૫

ઈશ્વર પ્રાર્થના માળા



ભાગ પહેલો.

ગદ્ય પદ્ય ગાયન સહિત

અમદાવાદ પ્રાર્થના સમાજે

છપાવી પ્રગટ કરી.

[illegible]

આવૃત્તિ ચોથી

[illegible]

(૧૦૦૦ પ્રતો.)

[illegible]



અમદાવાદ મધ્યે.

મામાની હવેલીમાં આ. યુનાઈટેડ પ્રિંટિંગ અને જનરલ

એજન્સી કંપની લિમિટેડ"ના પ્રેસમાં

રણછોડલાલ ગંગારામે છાપી.

સંવત ૧૯૪૨. સને ૧૮૮૫.

કિંમત ૦—૧૨—૦

(આ ચોપડીના સર્વે હક સ્વાધીન રાખ્યા છે.)

ॐ तत् सत् परमात्मने नमः

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ जगत्नो कर्ता अने नियंता परमेश्वर एक अप्रतिम आनंदमय अने अद्वितीय छे; ए वधा गुणोनी साथे ते न्यायी तथा परमकृपालु छे, अने तेनां सरजेलां प्राणीओनुं ते पालन पोषण करीने तेओनी प्रार्थना यथाघटित सांभळे छे, अने पोताना सद्गुणी साचा भक्तोने मोक्ष आपे छे. ए समर्थ प्रभुना गुण, महिमा, मंगळभाव, तथा स्तुति गाइ तेनी शुद्ध भक्ति तथा उपासना करवी ए मनुष्यनो मुख्य धर्म छे. उपासना करवाना घणा विधि छे, परंतु अप्रतिम ईश्वरनी अनन्य भावथी मानसिक भक्ति करवी एज उत्कृष्ट भक्ति अने एज तेने प्रिय छे एम सर्व परमार्थदर्शक सर्वोत्तम पंक्तिनां शास्त्रनो सिद्धांत छे. ए सृष्टिनो कर्ता छे, ने तेनी भक्ति करवी ने तेने प्रसन्न राखवो ए ज्ञान माणस संपादन करी शकेछे माटे मनुष्यदेह उत्तम छे. ए ज्ञान ईश्वरदत्त छे, अने केवळ बीजरूपे माणस मात्रमां रहेलुं छे. जेम जेम विचारशक्ति वधती जाय तेम तेम ए बीज वधी पूर्णताने पहोंचे, एवो ईश्वरी नियम जणाय छे. प्राचीनकाळमां माणसोनी विचारशक्ति केळवाएली नहि ने तेमना धर्म संबंधी काचा विचार हता. ते वेळा तेमनी समज प्रमाणे ईश्वरनां अनेक रूप कल्पी तथा तेने माणस प्रमाणे इंद्रिय भोग हशे एम मानी तथा ईश्वरी शक्तिना कल्पित विभागो करी तथा तेओनां जुदां जुदां काम कल्पी तेमनी सेवा पूजा करता हता ने हवडां पण लोको अज्ञानथी तथा वहेमथी एवी गौण भक्ति करेछे. पृथ्वी उपर राजा जेम अलंकार, वस्त्र,

धन, अने भोजनादिकथी संतोष पामे छे, अने प्रसन्न थायछे तेम तेओ थता हशे एम धारी, अनेक प्रकारे एने शरीरे सुख अने वैभव दान करवा लाग्या, अने करेछे. अनेक देवोने विचित्र रूप आप्यां छे. पराक्रमी अने वीर पुरुषो तथा स्त्रीओने ईश्वरना अवतार किंवा अंश धारी पूजे छे. कोई यज्ञ हवन करी बलि आपे छे. उत्तम भक्तिनी पद्धतिनो विचार एके काळे माणसना मनमां आवी सकतो नथी, कारण के बुद्धि केळवाईने प्रकाशित थाय त्यारेज सत्यनुं ज्ञान प्राप्त थायछे. बुद्धि केळवाय नहि त्यांसुधी माणसोनी विचार शक्ति मंद रहे अने अंतःकरण अंधकारमां रहे ए स्वाभाविक छे. बीजी विद्याओ, जेमके यंत्र विद्या, ज्योतिष्यविद्या, गणितशास्त्र, शारीरविद्या, भूस्तरविद्या इत्यादि विद्याओनो विद्वान पुरुषो शोध करीने तेमने पूर्णतामां लाव्या छे ने लावे छे, तेज रीते लोको सृष्टिनी रचना तथा नियमो उपर वधारे विचार करवा लाग्या त्यारे अखिल ब्रह्मांडनो ईश्वर एक अगोचर अने निराकार छे एवुं ज्ञान थयुं अने सृष्ट वस्तुने के कृत्रिम पदार्थोने ईश्वरमानी तेनी भक्ति करवी ए गौण अथवा नीची भक्ति छे, अने तेनुं मानसिक ध्यान तथा वंदन ए पराभक्ति एटले उत्तमभक्ति छे एवो सिद्धांत करीने ते विषे प्रमाण वचनो लख्यां. आ सिद्धांतो उपरथी, सृष्टिनी रचना उपरथी, अने पाको विचार करवाथी श्री जगदीश्वरनी उत्तम भक्ति करवी ए मुख्य कर्तव्य धर्म छे ए नक्की जणाशे. ए विश्वपालकने भूली न जतां एनुं वारंवार चित्तमां स्मरण राखवाथी, तेनो उपकार मानवाथी अने तेनी स्तुति करवाथी उभय लोकमां कल्याणछे. ईश्वरनी स्तुति तथा प्रार्थना जे भाषा आपणे समजता होईए तेमां करवी, कारण के आ-

पणा मनमी वात आपणा परमपिता परमेश्वरने निवेदन करती वेळा आपणे शुं बोलिये छिये ते आपणे समजवुं जोइए. ते विना प्रार्थनानी आपणा मन उपर असर तथा ईश्वर साथे तल्लीनता थई सकती नथी. आपणे शुं मागीए छीए ते आपणे जाणवुं जोईए. कृपालु ईश्वरनी सर्व भक्त जनो भेगा थईने भक्ति करे ए हेतुथी प्रार्थना समाज स्थापन थई छे ने तेना उपयोगने वास्ते प्रार्थना माळाना बार अंक तथा गायन भाग तथा गद्य प्रार्थना रचवामां आवेली ते पुस्तको घणांखरां खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति काढवामां आवी छे, तेमां घटतो सुधारो तथा वधारो करीने तेना पंदर अंक कीधा छे. प्रार्थना करनाराओने सुगम पडवा प्रत्येक अंकमां गद्य पद्य, गायन अने छेली आरती ए रीते अनुक्रमथी गोठवण करवामां आवीछे. कठण शब्दोनो कोश आप्यो छे तथा गायननां पदना राग, ताल ने चालनी समज गायननी अनुक्रमणिकामां आपी छे.

प्रार्थनामां ईश्वरना चरण तथा मस्तक हस्त ए मात्र अलंकार रूपे लखेलां छे. वस्तुतः ईश्वर एक अप्रतिम अने अद्वितीय छे एज सिद्धांत मान्य छे.

माटे एवा परम कृपावान मंगलमय सच्चिदानंद परमेश्वर उपर श्रद्धा राखीने तेनी भक्ति करी तेने शरण थवुं एज मनुष्यदेह धारण करवानुं फळ छे अने एथी आत्मानुं कल्याण छे.



त्रीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

प्रार्थनामाळानी बीजी आवृत्ति सने १८७५ नी सालमां कहाडी तेनी २०००प्रतो छपावी हती. ए बधी प्रतो खपी गइ ए घणुं संतोषकारक छे; एनो गुजरातमां खप छे एटलुंज नहि

पण देशावरमां एनी खपत घणीछे. मुंबाइ, पुंना, नासीक, पंढरपुर, पंजाब, सिंध, काठीयावाड तथा कच्छथी एनी मागणी आवेछे; माटे आ त्रीजी आव्रत्ति कहाडवामां आवीछे.

बीजी आव्रत्तिमां जे गोठवण करेलीछे तेज आ आवृत्तिमा कायम राखवामां आवीछे. छंदना नियममां तथा शब्दमां तथा वर्ण विचारमां भूल हती ते मात्र सुधारी छे तथा १३ मा अंकना गायनमां एक पद वधार्युं छे. आरंभे धर्मसिद्धांत लख्याछे तेनुं अवलंबन करीने ईश्वरनी अंतराराधना करवी एज उत्तम उपासनानुं विधान छे; मूर्त्ति अथवा सृष्ट वस्तुनी पूजा ए ईश्वरनी खरी भक्ति नथी. ईश्वरनी प्रार्थना करवामां तथा पापथी मुक्त थवामां कोइनी माध्यस्थीनी जरुर नथी. इंद्रादिक देवताओ तथा देवियो मनकल्पित देव छे सूर्य, अग्नि, जल, वायु, ए ईश्वरनी बनावेली वस्तुओ छे तेमां ईश्वर निर्मित आश्चर्यकारक शक्ति जोइने प्राचीन ऋषियोए तेओनुं वर्णन करवामां अतिशयोक्ति करी अलंकार रूपे देवसंज्ञा आपी छे, पण वस्तुनः तेओमां देवत्व कांइ नथी. वळी उषा (प्रातःकाळ) तथा वसु (धन) इत्यादि घणा कल्पनाना देव मानी तेमनी स्तुतिना मंत्रो रचेला छे; पण ऋषियो पाछा एम पण कही गयाछे के इंद्र, वरुण, अग्नि ए सर्व सूर्यनां नाम छे. ए उपरथी तथा बीजां ऋषिवचनो उपरथी सिद्ध थायछे के खरो पूजनीय देव एक ईश्वरछे. बीजी कोइ वस्तु जड अथवा चैतन्यमां देवत्व नथी-ईश्वरविना बीजी कोइ वस्तुमां देवत्व अथवा थोडुं पण ऐश्वर्य मानवाथी ईश्वरनी स्वतंत्रता, महत्व, तथा वेदनां महावाक्योने बाध आवेछे. श्वेताश्वेतर उपनिषत् अध्याय ६ मंत्र ८--९

नतस्यकार्यंकरणंचविद्यते । नतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते॥
परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते। स्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच॥८॥

अर्थ--ईश्वरने शरीर नथी, इंद्रियो नथी तथा जगत् रचवाने एने कांइ सामग्री अथवा हथियारनी अवश्यता नथी;एना समान कोई नथी तथा एनाथी कोई अधिक नथी; एनी शक्ति महान तथा अनेक प्रकारनी छे; एनुं ज्ञान, क्रिया,बल स्वाभाविक छे.

नतस्यकश्चित्पतिरस्तिलोके। नचेशितानैवचतस्यलिंगम् ॥
सकारणंकरणाधिपाधिपो।नचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः।९

अर्थ—ईश्वरनो कोई धणी नथी, कोई एनो नियंता नथी, एने शरीरादि चिन्ह नथी, ते पोतेज सर्वनुं आदिकारण, जीवोनो अधिपति छे, एने उत्पन्न करनार तथा एनो अधिपति कोई नथी. इत्यादि घणां प्रमाण वचनो उपरथी तथा ईश्वरदत्त बुद्धिथी विचार करवाथी सत्य समजाय छे के जीवोनो उपास्यदेव एक, सत्य, अप्रतिम, अजर, अमर परम मंगल करुणामय तथा परमपवित्र परमात्मा छे, ने एनी पवित्र मनथी उपासना करवाथी जीवनुं कल्याण छे. भक्तिमान् पुरुषो एवाज ईश्वरनुं ध्यान वंदन स्तुति प्रार्थना करेछे.

गद्य पद्य प्रार्थनामां ईश्वरना हस्त पादादिकनी कल्पना अलंकार रूप छे ए वात बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावनामां लखवामां आवीछे; ते उपरांत विशेष समजवानुं ए छे के प्रार्थनाना स्तोत्र तथा संगीतमां देवनादेव, देवाधिपति, देवेश, एवा शब्दो आव्या होय अथवा आवे तो ते प्रथमना देव शब्दनो अर्थ ईश्वर परत्वे करवो नहि. देव एटले दिव्य, उत्तम प्राणी एट-

लोज ए ठेकाणे अर्थ समजवो; पुण्यशाली प्राणि पुण्याचरणथी परलोकमां उत्तम पदवीने पामे ए वात असंभवित नथी.

बीजुं ध्यानमां राखवुं जोइये के भक्ति करवानुं अंतरनुं तथा बाहारनुं विधान सर्व प्रकारे पवित्र तथा नीतियुक्त होवुं जोइये. ज्यां अनीतिनो देखाव के भास थाय तथा जे ध्यान के क्रियाथी मन विकार पामी असदवृत्तिनो भाव उत्पन्न थाय अथवा थवानो संभव होय एवा अर्चन विधिनो सर्वथा त्याग करवो जोइये.

उपासना करनारे उपरनी सर्व सूचनाओ लक्षमां राखवी ने परमकृपालु परमेश्वरने शरणापन्न थई तेनी उपासना करवी जेथी ईश्वर प्रसन्न थशे अने तेओना आत्माने अक्षय सुख मळशे.

सत्यमेवजयते.

चोथी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

प्रार्थनामाळानी बीजी आवृत्तिनी प्रतो २००० छपावी ते खपी जवाथी त्रीजी आवृत्तिनी २००० प्रतो छपावी ते घणी खरी खपी गइ. माटे चोथी आवृत्तिनी छपावी प्रगट करी छे.

आ सृष्टिनो उत्पन्न करनार स्थितिमां राखनार तथा पालन करनार परमपवित्र परमेश्वर छे तेनी श्रद्धापूर्वक उपासना स्तुति प्रार्थना करवी ए मनुष्यनुं कर्तव्य छे.

सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमे

व्योमन्सोऽश्नुतेकामानसहब्रह्मणाविपश्चिता.

सत्य स्वरुप ज्ञान स्वरुप अनन्त ब्रह्मने पोताना हृदयाका-

शमां आत्मस्थ जाणे छे तेनी ए सर्वज्ञ महामंगल प्रभूनी साथे पोतानी सर्व शुभ कामनो उपभोग करेछे.

समोदतेमोदनीयंहिलब्धातरतिशोकंतरति

पाप्मानंगुहाग्रन्थिभ्योविमुक्तोऽमृतोभवति-

जे आनंदमय परब्रह्मनो लाभ लेइने आनान्दित थाय छे, ते शोकथी पापथी विमुक्त थाय छे; तेनी सर्व हृदय ग्रन्थियो छुटी जाय छे अने ते अमृत थाय छे, माटे इश्वरनी उपासना करवामां प्रमाद के अनादर करवो नहीं.

इश्वर अवतार लेता नथी तथा अप्रतिमछे अने वास्ते केटलांक प्रमाण वचनो त्रीजी आवृत्तिनी प्रस्तावनामां लखेलां छे.

आ चोथी आवृत्तिमां कांइ फेरफार कर्यो नथी अक्षर लीपीमां हस्तदोष हतो ते तथा कोइ कोइ शब्दोनी भूल हती ते सुधारवामां आवी छे. आ आवृत्तिनी छाप प्रथमनी छाप करतां श्रेणी राखवामां आवी छे.

विशेषमां एटलु छेके प्रार्थना माळाना बे भाग करवामां आव्या छे पहेला भागमां अंक १५ सुधी प्रथम प्रमाणे छपाव्या छे. बीजा भागमां १५ अंक १६ थी ते ३० सुधी छपाशे तेनुं जुदु पुस्तक थशे.

इश्वरनी शुद्ध साची अने उत्तम विधिनी प्रार्थना करवा उपर मनुष्यनी मनोवृत्ति थाओ अने तेनी इच्छानुसार चाली तेनी प्रीति संपादन करे. एवी इश्वर तेओने प्रेरणा करो.

श्री जगदीश्वरो जयतु.

अंकनी अनुक्रमणिका.

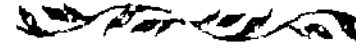
गायननी अनुक्रमणिका.

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
४	शरण तने भगवान.	काफी.	त्रिताल.	समरुं सदा भरपूर.
,,	तुजविण अन्य नहीं प्रभु त्राता.	,,	,,	
,,	अवगुण दोषो दया-निधि.	खमायची जिल्हो.	दादरो.	बहुचर नामतणी लेह मने लागी रे.
५	जगदीश छो अनुप.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	कृपानिधि पूर्ण मन काम करो.	बिहाग.	त्रिताल.	निरधनको धन राम.
,,	स्तवन शुभ तारुं करुं रे.	खमायची जिल्हो.	त्रिताल. पंजाबी.	
,,	नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे.	सोरठ जिल्हो.	त्रिताल.	
६	प्रणमु सदा परेश.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	करुणा करो रे कृपाळ.	काफी.	त्रिताल.	समरुं सदा भरपूर.
,,	एक अखंड अनंत.	खमायची जिल्हो.	त्रिताल	नारायण नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.
,,	प्रभु पद पंकजे सदा हुं पाय लागुं रे.	,,	दादरो.	बहुचर नाम तणी लेह मने लागी रे.
७	भगवंत ब्रह्म प्रभु.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
७	परमात्मा परिपूर्ण प्रभु	खमायची जिल्हो.	त्रिताल.	नारायण नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.
,,	विनति करुं करजोडी	,,	,,	
,,	जगदीश्वरने हुं वंदु.	सोरठ.	,,	
८	जय जगवंद्य जय.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जय जगवंद्य दयासिंधु.	जिल्हो.	एको.	मेरेगिरधर गोपाल दुसरा न कोइ.
,,	विनति प्रभु सांभळो मारी.	काफी.	दीपचंदी.	
९.	तत् सत् ब्रह्मपद.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	अपराध क्षमा करो मारो.	काफी.	दीपचंदी.	
,,	नियंता नाथरे.	काफी जिल्हो.	,,	
१०	मंगल समय आज.	भैरव तथा सर्व राग- मां गवाय.	चोताल.	
,,	प्रभुता तमारी छे मोटी.	सोरठ.	त्रिताल.	
,,	परब्रह्म प्रणाम करुं तमने.	,,	,,	
,,	तारोरे दयाल.	सोरठ जिल्हो.	त्रिताल. पंजाबी.	

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
११	सगुण समर्थ सत्य.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जग त्राता.	नट.	ब्रह्मताल.	
,,	जगदीशने शीप नमावुं.	काफी.	दीपचंदी.	
१२	नमु नित्य विश्वपति.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	विश्वनाथ तुं विना.	जिल्लो.	एक्को.	मेरे गीरधर गोपाल दुसरा न कोई.
,,	प्राणपति सुणो विनति अमारी.	खमायची मिश्र काफि जिल्लो.	त्रिताल.	
,,	कृति सामुं प्रभु कदी नव जुवोरे.	कहारवो.	,,	
१३	धन्य धन्य धन्य धन्य.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	विधाता धन्य छे.	काफी जिल्लो.	दीपचंदी.	
,,	अति अद्भुत कला प्रभु तारी.	काफी.	त्रिताल.	
१४	वंदुं परब्रह्म चरण.	भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.	चोताल.	
,,	जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर.	यमन कल्याण.	दीपचंदी ता.	लावणीनी गत.

अंक.	पद.	राग.	ताल.	चाल.
१४	सच्चिद्घनना स्वरुपमां	खमायची जिल्लो.	दादरो.	बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.
१५	शुभ गुण गायगायरे.	काफी.	चोताल.	
,,	नमु जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर पर पद मंगलदाता.	विलावल.	त्रिताल.	अष्टपदी.



धर्मसिद्धांतो.

१ ईश्वरएकएवास्तिसमृष्ट्युत्पत्तिस्थितिलयकर्त्तासृष्टपदार्थेभ्योभिन्नोस्त्यविभक्तैश्वर्यश्चसर्वज्ञःसर्वव्यापीसर्वशक्तिमान्न्यायकारीकरुणामयःपरमपवित्रोस्तिसचैवपूज्यः

२ भक्तिरेवधर्मः

३ सप्रेमश्रद्धोपासनास्तुतिप्रार्थनासदाचारश्चेतिभक्तिः

४ भक्त्येश्वरःप्रसीदत्यात्मनऐहिकमामुष्मिकंचश्रेयोभवति

१ ईश्वर एक छे, ते सृष्टिनो उत्पन्न करनार, स्थितिमां राखनार तथा संहार करनार छे; सृष्ट पदार्थो थकी ते भिन्न छे, एना विना बीजो कोइपण देव नथी; ते सर्वज्ञ सर्वव्यापी छे, सर्व शक्तिमान्, न्यायकारी, तथा करूणामय परमपवित्र छे, तेज ईश्वर पूज्य छे.

२ भक्ति एज धर्म.

३ सप्रेम श्रद्धा उपासना स्तुतिप्रार्थना अने सदाचार ए भक्ति.

४ भक्तिवडे ईश्वर प्रसन्न थायछे अने आत्मानुं ऐहिक आमुष्मिक कल्याण थाय छे.



शुद्धि पत्रक.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३	७	दयालुं	दयालु
२८	८	भमण	भ्रमण
२९	२३	प्रवृत	प्रवृत्त
२२	६	विनवथी	विनयथी
२२	१५	निभावां	निभावो.
२६	२३	वरणे	चरणे
२७	१९	महाच्शक्ति	महाशक्ति
३२	१६	पाय	पाये
४१	२५	चरण	चरणे
५३	२३	थोनी	थोहे
५७	१४	पश्चाताप	पश्चात्ताप
६६	१२	ग्रकृतिना	प्रकृतिना
६७	२२	सालिनी	शालिनी
६८	१	श्रद्धा	श्रद्धा
६८	५	र तुति	स्तुति
६९	२३	अम	अमे
८०	२३	उद्धारां	उद्धारो
८२	१५	घर्म	धर्म
८४	२४	उपाकार	उपकार
९०	१६	अद्भुत	अद्भूत
१०२	२१	धर्मभ्रष्ठ	धर्मभ्रष्ट
११५	६	दादिद्री	दरिद्री

११७	४	स्रष्ठिकर्ता	स्रष्टिकर्ता
,,	१५	,,	,,
१२०	१८	वंदु	वंदुं
१२८	९	सदूगुण	सद्‌गुण
१२९	१७	कृपाविण	कृपावीण
१३०	३	विभु	विभू
,,	१०	दीनवंधु	[illegible]नवंधू
,,	२०	हृदे	हृदे तात
१३१	१४	शिरसाष्ठागे	शिरसाष्टांगे
१३२	२७	अति दूभुत	अतिअद्‌भुत
१३४	२	स्राष्ठिकर्ता	स्राष्टिकर्ता

अंक १ लो.

ललित.

जय जय प्रभू, ब्रह्मचिद्घना, पतितपावना, पापमोचना;
प्रणमिये अमे, प्रेमभावथी, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति. ॥१॥
सकल विश्वमां, व्यापिने रह्यो, जिव प्रते करो छो अनुग्रहो;
प्रबल सत्य छो, श्रेष्ठ सर्वथी, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥२॥
ऋषि मुनी वदे, वेदनी श्रुति, तदपि ना जडे, तारि तो गति;
अति अगम्य छे, सृष्टिनी कृति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति॥३॥
अवधि बुद्धिनी, बांधि छे तमे, नियममां रही, चालिये अमे;
मति नहीं जशे, पार ते थकी, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥४॥
तुज दया थकी, दुर्मती टळे, तुज दया थकी, सन्मती मळे;
तुज विना कृपानाथ को नथी, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥५॥
परम प्रेमथी, पोषणो करो, नियम ए दयानाथनो खरो;
विभु वरेण्य छो, विश्वना पति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥६॥
क्षण प्रतिक्षणे, रक्षणो करो, सकल दुःखसंकष्ट संहरो;
नव कदी करो, नाथ दुर्गति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥७॥
सकल विश्वमां शान्तिकारक, प्रणत प्राणिना, प्राणतारक;
नव जुवो तमे, दोष दुष्कृति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥८॥
करुणनाथ हे, हे कृपाघना, दुरित कर्मनी, मागिये क्षमा;
विभु विचारशो, भक्तनी स्थिति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥९॥
प्रणमिये अमे, वारवाररे, विनतिने करो, अंगिकार रे;
प्रभु प्रसादथी, थाय सद्गति, प्रभु परात्परा, प्रेर सन्मति.॥१०॥

आखा विश्वनो रचनार अने नियंता, प्राणीमात्रनो सृजनार अने पाळनार जे सर्व शक्तिमान् परमेश्वर तेनी दया अने तेनी कृपा पामवाने हुं शी रीते योग्य थाउं ? ते महा प्रभुनुं स्वरूप केवुं हशे? ते महा कृपालु, ते करुणा सागर, महा प्रतापी परमात्माने पगे लागी तेनी क्षमा मागवी ए मारो, अने माणस मात्रनो धर्म छे. मारा हृदयमां, मारा चित्तमां, आ वेळा कोण वश्युं छे! परमेश्वरना किया गुणो उपर हुं लक्ष दउं ? तेना हरेक गुणथी हुं मोह पामुं छुं. बधा महान गुणोथी ते भरपूर छे, तेनो महिमा, तेनो प्रताप अतुल्य अने अपार छे. मारो आत्मा ए महा प्रभुने शी रीते पामे! तेना महा तेजनो कांइक अंश मारा हृदयमां, मारा मनमां प्रकाशे तो तेनुं कांइ अल्प ज्ञान मने थाय.

हे जगत्‌पिता ! हुं तमारो पाड किया शब्दोवडे मानुं? तमारी कृपाथी हुं आज सुधी जीवी मोटो थयोछुं. तमारी मेहेरथी मने खावाने अन्न मळ्युं छे, तथा रात्रे ओढवा पाथरवानुं मळ्युंछे. उंघुंछुं सारे तमे मारुं रक्षण करोछो, अने दिवसे मने पाळनार पण तमेज छो. मारो सघळो आधार तमे छो. तमारा आश्रय विना आ संसारमां माराथी एक घडी टकाय नहि, एक क्षण पण जीवाय नहि. जे जे सुख हुं पाम्यो छुं, अने हवे पछी मने जे सुख मळे तेनो आपनार तमारा विना बीजुं कांई नथी. मारा बेली तमेज छो. जेम मने पाळनार छो तेम मने रुडे मार्गे चलावनार थाओ; मने सुमति आपो के हुं नीतिशास्त्र प्रमाणे वर्ती सद्‌गुणी थाउं. मारी बुद्धिने भमावनार अने आडे मार्गे लइ जनार संसारमां घणी लालचो छे ते सर्वेने पा-

रखवाने ज्ञान आपी, अने तेओने जीतवाने दृढता आपी आपनो सेवक थवाने मने योग्य करो. कियां कर्मो करवाथी पाप लागे, अने कियां कर्मो करवाथी पुण्य थाय ते समजवानी मने बुद्धि आपो, अने पापथी दूर रही माराथी पुण्यनां काम थाय एवुं करो. हे कल्याणकारी महा प्रभु! तमे प्रसन्न थाओ एवी रीते हुं चालुं, ए प्रमाणे हुं वर्तु, एज मारी मनकामना छे, एज मारो मनोरथ छे. हे दयालु महापिता ! आ मारी दीनवाणी सांभळी मारा दंडवत् प्रणामने अंगीकार करी मारी प्रार्थनाने सफल करो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिखरिणी.

अनाद्यंता देवा, अनुपम अविद्याथकि परा,
परेशा विश्वेशा, प्रणमुं परमात्मा प्रभुवरा;
सदा पादाब्जे हुं, अति विनयभावेथि विनवुं,
विभू विश्वाधीशा, अनुग्रह तमारा अनुभवुं. ॥१॥
अती पापी हुं छुं, विषय महि लाग्युं चित घणुं,
कृपादृष्टी वीना, नव रहि सकुं हुं क्षणु अणु ;
नियंता त्राता छो, कुशलसुखदाता दुखहरा,
विधाता धाता छो, शरण तुज आव्यो अघहरा. ॥२॥
चढो वारे मारे, अति दिन गणी सेवक मने,
कृपासिंधू वंदुं, प्रणतजनबंधु प्रभु तने ;
रची ब्रह्मांडोने, नियम अति भारे बहु करया,
जिवो शुं विस्तारे, विध विध प्रकारेज पसरया. ॥३॥

ग्रहो वर्गो सर्गो, गणितक्रमथीरे गगनमां,
तमारी सत्तार्थी, निशदिन रह्याछे भ्रमणमां ;
दया पूरी देखुं, सबल प्रभु पेखुं सकलथी,
जिवो संरक्षार्थे, प्रगट पय कीधुं प्रथमथी. ॥४॥

प्रभु स्रष्टा जाणुं, फरि फरि वखाणुं विनयथी,
दया वीना तारी, मन नहि खसेरे विषयथी ;
प्रभू आ संसारे, सकल शुभ कर्मोज करवा,
सृजाव्या जीवोने, भव विषय मोहोथि तरवा. ॥५॥

किधां दुष्कर्मो में, कयम करि सकुं शुद्ध मनने,
दयासिंधू वंदुं, विमलमति आपो प्रभु मने ;
प्रभू घांटी मोटी, निजबलथि ना जाउं उतरी,
कृपादृष्टी पूरी, करि करग्रहोरे प्रभु हरि. ॥६॥

महा सिंधूमांथी, तरणबल शुं हुंज पशुने ;
सदा संभाळी ल्यो, शरणगत जाणीज शिशुने;
असत्पंथे चालुं, तदपिज करोछो अनुग्रहो,
क्षमावंता देवा, अवगुण अमारा नव लहो. ॥७॥

दयावंता दाता, दिन गणि निभावो प्रभु मने,
नमी साष्टांगे हुं, विनयथि विनंती करुं तने ;
अनूकंपाथी तो, विकसित करो मारि मतिने,
प्रभू पोचाडी द्यो, परम सुख आपी सुगतिने. ॥८॥

करावो सत्कर्मो, सकल शुभ धर्मो प्रभु तमे,
शमावो जे कीधां, दुरित बहु कर्मो अहिं अमे ;
सुउद्योगो आपो, दुख सकल कापो करि कृपा,
अमो मिथ्या जाशे, प्रभु कदि करो जो अवकृपा. ॥९॥

तमे कष्टो कापो, परमपद आपो प्रभु मने,
तमारो के'वायो, विदित बधि मारी कृति तने;
पिता माता भ्राता, परमपददाता दुखहरा,
दयानाथा धाता, सकलभयत्राता भवधरा. ॥१०॥
क्षमा आपी देवा, दिन प्रति दया नित्य करवी,
प्रजा केरी क्रीया, प्रभु कदि मने तो न धरवी;
तरया भक्तो तारा, भवजलथि तारा स्मरणथी,
भमावो मा भामां, विमुख नव राखो चरणथी. ॥११॥
प्रभु पापो कापो, परम करुणा लावि चितमां,
निवारो संतापो, त्रिविधिदुखतापो जगतमां;
किधाछे में दोषो, कृति कदि न जोशो जगपति,
सदा सन्मार्गोनी, अति विमल आपो प्रभु मति. ॥१२॥
कृपाळु मायाळु, बहु बहु दयाळु प्रभु हरे,
प्रमाणो छे शास्त्रे, निगम बहु वाक्योथि उचरे;
दयादृष्टी देवा, दिन जन प्रते नित्य करशो,
करुं तारी सेवा, सकल भय संताप हरशो. ॥१३॥
परा भक्तीथी हुं, प्रणिपत करुंछुं प्रभु सदा,
स्विकारी ल्यो स्वामी, अनुग्रह विसारुं नहि कदा;
थयोछुं विश्वेशा, बहुज अपराधी तदपि हुं,
तमारे विश्वासे, सुखथि भवमां हुं वशि रहुं ॥१४॥
महा देवा दाता, नमि नमि करुं नम्र विनति,
प्रभू बीजो त्राता, तुज विण अमारो अहिं नथी;
निराधाराधारा, निरुपम नियंता चिदघना,
पुरो अर्थो सारा, करि अति कृपा भक्त जनना. ॥१५॥

—⁂—

नाराच.

महाधिराज स्वामि सर्वना समर्थ छो तमे,
तमारि विश्वमां महायता थकी वश्या अमे;
अनन्य भक्ति भावथी प्रमारि बेउ हाथने,
नमी नमी नमी हुं नित्य वंदुं विश्वनाथने. ॥१॥
प्रभु कृपानिधान सर्व शक्तिमान छो बहु,
सदा पदारविंदमां हुं ध्यान राखिने रहुं;
कदी महान भक्त तो न पामशे विषादने. नमी नमी० ॥२॥
सजावनार सृष्टिकार्यथी दिसो तमे अहीं,
अती दया क्षमा कृपा प्रभुस्वभावमां रही;
स्मरुं हुं ते त्रिलोकनाथ एकरे अजातने. नमी नमी० ॥३॥
असंख्य चकचकीत गोल व्योममां दिसे घणा,
ग्रहो उपग्रहो तणा गणीतमां नही मणा;
अपार शक्ति धारनार तारनार नाथने. नमी नमी० ॥४॥
अतर्क्य शक्ति छे प्रवेश अल्प जीव शुं करे,
प्रभूकृपाथकीज भक्तकार्य सर्व तो सरे;
नमी गयाज नास्तिको मुकी दिधो विवादने. नमी नमी० ॥५॥
अनीति दुष्कृती तणी क्रिया थई अती घणी,
अनाथ नाथ नित्य सत्य सर्वना तमे धणी;
कृपाकटाक्षथी करो क्षमा महापराधने. नमी नमी० ॥६॥
समस्तजंतुपोषणक्रिया किधी कृपा थकी,
दयाघना दया तमारि तो जणायछे नकी;
कदीज पुत्रदोषथी न रोष थाय तातने. नमी नमी० ॥७॥
तमे दयाल छो कृपाल भक्तपालरे प्रभु,

विनंति सर्व सांभळी सहाय तो करो विभु;
प्रणाम वारवार हुं करुंछुं प्राणनाथने. नमी नमी० ॥८॥

मालिनी.

जय जय जगदीशा सृष्टिकर्ता कृपाला,
त्रिभुवनप्रतिपाला प्राणदाता दयाला;
तुजपद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ,
विदित विभु अमारी आपने सर्व वात ॥१॥
नवलि मति अमारी मागणी सर्व कीधी,
करवि उचित केई नाथ लक्षे न लीधी;
घटित विभु हशे जे तेज स्वीकारि लेशो,
प्रणत जन जिवोने पूर्ण आशीष देशो ॥२॥

गायन.

पद.

प्रभु सर्वशक्तिमान, करुणाकृपानिधान,
धरिये तमारुं ध्यान, सन्निध पधारो.
भगवंत तुं समान, नथि कोई बलवान,
संकट सेवकतणां, सघळां निवारो. प्रभु०
अनुग्रह उपकार, करो तमे वारवार,
चित्तथी तमारा प्रभु, कदि न विसारो,
किधा बहु अपराध, क्षमा करो विश्वनाथ,
विभु मात तात तमे, करुणा विस्तारो. १ प्रभु०

पद.

करुं प्रभुने हुं प्रणाम, संपूर्ण प्रेम धरीरे प्रभु करुं प्रभुने०

अचल अगोचर त्रिभुवनव्यापक प्रभु छो अंतर्याम,
तुज यश महिमा गुण गावाने वाणी पामे विराम,
मति नहि चाले जरीरे प्रभु १ करुं प्रभुने०
अनुग्रहथी अवगुण न जुवो करुणासागर नाम,
जीव तणा परिपालक जाणुं राखी चित्तमां हाम,
भवथी जाउं तरीरे प्रभु २ करुं प्रभुने०
अगणित में अपराध किधा छे नव पामुं कहिं ठाम,
अति करुणा प्रभु करि मुज उपर आपो अविचल धाम,
धीरज धारुं खरीरे प्रभु. ३ करुं प्रभुने०
सृष्टि तणी रचना रची पोते पृथक रह्या निष्काम,
भक्ति थकी भगवंत पमाशे दाम हुं जाणुं आम,
अति सत्ता प्रसरीरे प्रभु ४ करुं प्रभुने०
सर्व काल हुं शरण तमारे अन्य नहि विश्राम,
ऐहिकामुष्मिक सुख आपी सफल करो शुभ काम,
करुणा पूर्ण करीरे प्रभु ५ करुं प्रभुने०

पद.

ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं, नित्य निरंतर ध्यान धरुं,
भर्ग वरेण्यथी व्याप्त विभु, विश्वेश पदे हुं प्रणाम करुं,
प्रेरो प्रभु मति सद्गति आपो, ए वचनो मुखथी उचरुं. १ ते सविता.
सर्वज्ञ सर्वान्तर्गत, सकलेश्वरने हुं सदा समरुं,
सर्व कर्मना साक्षी गणुं हुं, निंद्य कर्मथी नित्य डरुं २ ते सविता॰
सृष्ट वस्तुथी भिन्न अगोचर, एक तत्व जे अकल खरुं,
ते करुणा सागरने चरणे, शरण रही करद्वय प्रसरुं. ३ ते सविता०
भक्तिपरा भगवंत तणी, अति श्रेष्ठ गणी न कदी विसरुं,

विश्वनाथ विश्वास तमारो, धरी नीतिथी नव हुं फरुं ४ ते साविता०
आति दीन अल्पज्ञ अशक्त, क्षण प्रतिक्षण अपराध करुं,
परम कृपाथि क्षमा करशो तो, भवसिंधुथी सत्य तरुं. ५ ते साविता०

पद.

मन कर्म वाणी थकी प्रभुने वंदुंरे,
परमात्मा परब्रह्म परात्पर,
प्रणमुं प्रीते प्रणतजनबंधुरे. १ मनकर्म०
विश्वोद्धारक विभु सुखकारक,
प्रभु तुज भाक्तिमां सदा हुं आनंदुंरे. २ मनकर्म०
शरण तने हुं दीन जन बालक,
तमे पालक समस्त जीवजंतुरे. ३ मनकर्म०
पूर्ण करो प्रभु योग्य मनोरथ,
दीनदयाल छो कृपाल दयासिंधुरे. ४ मनकर्म०

आरति.

जयदेव जयदेव जयजगदाधारा जयजगदाधारा,
अंतर्यामि अपारा (२) सर्वोत्तम सारा ॥१॥ जयदेव०
स्वायंभू विभु आप, त्रिभुवनमां व्यापो (२)
सुख संतोषो आपी (२) किल्विष सहु कापो ॥२॥ जयदेव०
मंगळ सुंदर रूप करुणामय तारुं (२)
प्रेम भावथी मारा (२) चितमां नित्य धारुं ॥३॥ जयदेव०
श्रद्धा रूपी अर्घ्य आपुं हुं चरणे (२)
गंधाक्षत भक्तीनां (२) अर्पी रहुं शरणे ॥४॥ जयदेव०
एकाग्रेथी ध्यान धारुं हुं चित्ते (२)

प्रेम पुष्प वधावुं (२) प्रभुशीर्षे नित्ये ॥५॥ जयदेव०
सदाकाळ सन्निध जाणीने देवा (२)
ज्ञानारातिथी निरखुं (२) ए उत्तम सेवा ॥६॥ जयदेव०
विस्तारी विश्वेश अति अद्भुत माया (२)
साष्टांगे तमने हुं (२) प्रणमुं जगराया ॥७॥ जयदेव०
अवगणना अपराध अतिशय छे मारा (२)
क्षमा करो करुणाथी (२) प्रभु जगदुद्धारा ॥जयदेव०



अंक २ जो.



भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ साचा, अमो प्राणियोनी सुणो नम्र वाचा;
तमे विघ्न संकष्ट सर्वे निवारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥१॥
प्रभू पूर्ण विश्वास तारो अमारे, महा संकटेरे चढो नाथ वारे;
अमारी स्थितीओ तमे लक्ष धारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥२॥
खरा भेद तारा न कोईज पाम्या, यथा ज्ञान तर्को करीने विराम्या;
कृपानाथ तुं एक छुं सत्य सारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥३॥
तमे सत्य धार्युं हशे तेज थाशे, अमारुं विचार्युं सहू व्यर्थ जाशे;
तमारा गणी सेवकोने उगारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥४॥
तमारा प्रभू सर्व संकल्प सत्य, तथापी कृपाधीन छे सर्व कृत्य;
अमे जाणिये शुं तमारा विचारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥५॥
महा कष्टमां धैर्य पूरुं धरावो, तमारुं रुडुं ध्यान नित्ये करावो;
अमारा बधा दोषनेरे विदारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥६॥

महा कालनुं चक्र माथे फरे छे, जिवो देहनो गर्व मिथ्या करे छे;
क्षणध्वंसि आ घाट छे रे अमारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥७॥
अरे कालरे इष्ट के रिष्ट थाशे, जिवोने न किंचित्कदापी जणाशे;
तमारा अगम्यो गुणो छे अपारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥८॥
अमे पापियो पामरो अल्प प्राणी, कृतींओ नथी तुं थकीरे अजाणी;
निवारो श्रमे क्रूरताना विकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥९॥
अहंकार मिथ्या अभीमान मोटां, करीए अमे मूर्खताथीज खोटां;
अरे रंक ने रायनो एक आरो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥१०॥
दिसे दृश्य वस्तू बधी नाशवंत, तमे सत्य छो विश्वव्यापी अनंत;
महा सिंधुमांथी दयानाथ तारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥११॥
अमे आ जगत्मां बधारे प्रवासी, तमारी कृपाथी रहीए निवासी;
करो छो तमे सर्वने उपकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ॥१२॥
अरे ईश इच्छा तमारी बलिष्ठ, तमारा थकी को नथींरे वरिष्ठ;
वदे वेद वाणी वळी शास्त्रकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥१३॥
प्रभू जे करो धैर्यथी सर्व से'वुं, सदा नम्रभावेथि आधीन रे'वुं;
खरो धर्म छे ओ प्रभू ए अमारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.१४
जगाधीश दीसे तमारा प्रतापो, कृपादृष्टिथी विश्वमां शांति आपो;
दयाथी सुणो दीनताना उचारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. १५

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः

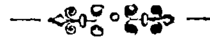
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्यपूज्यश्च गुरोर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥

हे ईश्वर! सर्व चर अने अचर वस्तुनो पिता तुं छुं, सर्वनो पूज्य, परम गुरु, तुं छुं. हे अतुलपराक्रमी परमेश्वर! त्रणे लोकमां तारा जेवो बीजो कोइ नथी, तो ताराथी चढतो क्यांथी?

हे परम कृपालु परमात्मा! आ वेळा तारुं चिंतन, तारी स्तुति; अने तारी प्रार्थना करुंछुं. तारा गुण गाउंछुं, तुं सर्वज्ञ अने सर्वव्यापक छे, मारुं मन आ समये शा कामनमां लागेलुं छे तेथी तुं अजाण्यो नथी. आ समय कोई बीजा विषय उपर मारुं चित्त न लागतां केवल तारा पवित्र स्मरणमां निमग्न रहे, तारुं ध्यान धरे, तारा स्वरूपने ओळखवाने प्रयत्न करे, एवी मारी संपूर्ण इच्छा छे. बीजा कोई जोडे सरखावी न सकाय एवो जे अनुपम महा प्रभु, तने हुं अभिवंदन करुंछुं. तारी स्तुति करवाने हुं अल्प जीव असमर्थ छुं. मारा विचार अने मारी वाणी तारां वखाण करवाने, तारो उपकार मानवाने छेक अशक्त छे; तारा माहात्म्यनुं वर्णन करवाने मारी भाषामां योग्य शब्दो नथी. हे अनादि अने अनंत परमेश्वर तारा कृत्योनो विचार करतां मारी अल्प बुद्धि पाछी हठे छे. आकाश भणी दृष्टि करुंछुं तो सानंदाश्चर्य पामुं छुं. सूर्य, चंद्र, ग्रहो, उपग्रहो, असंख्य तारा, जोई घणुं आश्चर्य पामुंछुं. तेओ शुं हशे, शा अर्थे रचेला छे, केवां प्राणियो तेओमां वसे छे, त्यांनी लीला तथा शोभा केवी हशे, तेओनां महत्व अने अंतरादिनो विचार करुंछुं, त्यारे मारी तर्कशक्ति निराश थई नीची पडेछे. नीची दृष्टि करुंछुं तो आ पृथ्वी चमत्कारोथी तथा अति सुंदर वस्तुओथी भरेलीछे. ते जोई मारी बुद्धि चकित थई जाय छे, अने तुं आ जगत्‌नो कर्ता नियंता अने पालन करनार छुं एवो मने स्वाभाविक बोध थाय छे.

हे प्रभु! हुं केवल अशक्त पामर प्राणी छुं. अज्ञान, अहंकार अने मनोविकार प्रबल थईने मने आडे रस्ते दोरे छे, अपराध करवानुं सूझाडे छे, माटे हे महाप्रकाशमान परमेश्वर!

अति नम्रताथी तथा शुद्ध अंतःकरणथी तारी प्रार्थना करूंछुं के मारी बुद्धिने शुद्ध कर, मारा पापनुं ज्ञान मने थाय, तेनो पश्चात्ताप थाय, एवी सुमति मने आपीने, फरीथी तेवां काम न करवाने मारुं मन दृढ थाय, निरंतर तारी सेवा करूं, मारा संसारव्यवहारिक धर्म बजावुं अने तारी खरी भक्ति अने उपासना करूं एवो उत्साह तथा दृढता आपी मारा अपराध क्षमा करी मारुं, हे दयालु भगवान्! रक्षण करो. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः



स्रग्धरा.

शान्ताकारा कृपालु, प्रभुविण नहि को, अन्य आधार मारे;
आवुं द्वारे तमारे, अति दिन जन हुं, राखि विश्वास भारे;
आशा धारी तमारी, विनयथी विनवुं, विघ्न संताप कापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो.१
सर्वान्तर्यामि साचा, सुख बहु करता, सर्वसंतापहर्ता;
सत्ता सर्वत्र धर्ता, प्रिति अति करिने, प्राणिना प्राणभर्ता;
भक्तीभावे भजुं हुं, भवभयहर रे, नीति सन्मार्ग आपो;पापो०२
सृष्टीशोभाप्रभाथी, प्रगट बहु किधी, पूर्ण शक्ती तमारी;
वस्तू मात्रे विचारी, विभु निज बळथी, धर्म दीधोज भारी;
व्यापो संपूर्णताथी, प्रभु त्रिभुवनमां, छे तमारा प्रतापो.पापो०३
आकाशे शोभि रे'छे, अगणित गतिथी, गोलसर्गोज सारा;
राशीचक्रे रवींदु, ग्रह उपग्रहथी, सर्व नक्षत्र तारा;
सानंदाश्चर्य पामुं, प्रभुनिज कृतिनी, छे कलाओ अमापो.पापो०४
अन्योन्याकर्षणोना, अतिदृढ जडने, मुख्य तें धर्म आप्या;

भेदो सर्वे ऋतुना, करि निश दिनने, काल प्रत्येक स्थाप्या;
भासे चातुर्य पूरुं, नहि कदि नियमो, ने तमे तो उथापो;पापो•५
जीवो संरक्षणार्थे, बहु बहु विधिथी, वस्तु सर्वे सजावी;
सत्ता सर्वत्र व्यापी, प्रभु निज कृतिनो, हेतु दीधो बतावी;
एवा कारुण्यमूर्ती, शुभगुणयुतना, हुं करुं नित्य जापो.पापो० ६
सर्वे स्थाने विराजो, विभु सुखकर हे, विश्वमांगल्यकारी;
श्रद्धासद्भक्तिभावे, प्रणमि प्रभु करुं, शुद्ध अर्चा तमारी;
लज्जा राखो अमारी,मति विमल करो,हे प्रभू मायबापो.पापो०७
विद्यासद्बोधज्ञानामृतफलरसनां, नाथ पानो न कीधां;
कीधां कार्यो न रुडां, दिन बलहिने, द्रव्य दानो न दीधां;
मानी आज्ञा न तारी, करि अवगणना, ते क्षमा नाथ आपो.पापो०८
विश्वाधीशा महेशा, नाहि कदि मनमां, लावशो भक्तदोषो;
पूरो वाञ्छा अमारी, जगपति जगमां, आपि संपूर्ण तोषो;
सर्वे तारी दयाथी, भवपति टळशे, दुष्ट संस्कार शापो. पापो०९
विघ्नापत्ती विदारो, त्रिभुवनपति हे, प्रार्थना लक्ष धारो;
वृत्ती मारी सुधारो, विपति दुख समे, सन्निधेरे पधारो;
पाळी पूरी कृपाथी, प्रभु हरि हरशो, सर्व संसार तापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो.१०



उपेंद्रवज्रा.

नमुं नमुं अद्भुत कर्मकर्ता, नमुं नमुं सृष्टि समस्त भर्ता;
नमुं नमुं सर्वशरण्य नाथ, अनादि विश्वेश विभू अजात. १
अचिंत्य अव्यक्त परात्परेश, समस्तसाक्षी अति श्रेष्ठ ईश;
अनाद्यनंता विभु निर्विकार, गुणो तमारा प्रभु छे अपार. २

अतर्क्य आनंदमयस्वरूप, अखंड छो एक तमे अनूप;
अपार सत्ता सघळे दिसे छे, जिवो तमारा बलथी जिवेछे. ३
अनंत अंतर्गत वृत्ति जाणो, श्रुती तथा शास्त्र विषे प्रमाणो;
विचित्र लीला अति शक्ति तारी, कदी न पामे गतितो अमारी. ४
तमे अविद्या थकि पार गाजो, सदा जिवोनी समिपे विराजो;
अदृश्य छे रूप प्रभू तमारुं, जुवो तथापी सहु कृत्य मारुं. ५
नही तमे छो सुर दैत्य रूपे, नही पुरूषे नहि नारिरूपे;
स्वतंत्र सर्वादि विकारहीन, नथी थता नाथ उपाधिलीन. ६
तर्या नथी कोइ तमारि माया, अतर्क्य वेदश्रुतिमां गवाया;
समान वृत्ती धरिने रहोछो, जिवो प्रते नित्य कृपा करोछो. ७
अपाद छो तोय गती करोछो, करो नथी तोय करे ग्रहोछो;
अचक्षु छो तोय तमे जुवोछो, अकर्ण छो तोय तमे सुणोछो. ८
तमे स्वइच्छाबलसुक्रियानी, धरो प्रभू शक्ति प्रपूर्णतानी;
स्वयंभु सर्वादि स्वयंप्रकाश, करो तमे पाप सहू विनाश. ९
क्रिया जिवोनी तमने विदीत, नही अमारे वदवी विहीत;
समस्तसाक्षी प्रभु तुं परेश, पिता तने शुं कहुं हुं विशेष. १०
कृपानिधे हे करुणेश्वरा हे, दयानिधे हे परमेश्वरा हे;
नमी नमीने करिये प्रणाम, करो अमारा परिपूर्ण काम. ११

भुजंगी.

दयासिंधु देवा विनंती अमारी, दयाथी दिले नाथ लेशो विचारी;
खरुं हीत कल्याण जीवो तणुं जे, जगाधीश जाणो तमे पूर्ण रीते. १
शिशू लाडिने मागणी सर्व मागे, तथापी पिता जे घटे तेज आपे;
कृपालू तमे सर्वथी श्रेष्ठ सारा. तमे पूरशो योग्य अर्थो अमारा. २

गायन.

पद.

तमे सर्वथी महान, आपो रूडुं नीतिज्ञान,
आश्रय आधार सत्य, राखिये तमारो;
प्रभु सत्वगुणमय, करिये अति विनय,
अल्पज्ञ जीवोनी स्थिति, मनमां विचारो. तमे०
अमे तो अशक्त प्राणी, वधु शुं वदिये वाणी,
क्षमा विना नाथ नथी, निर्वाह अमारो,
पाप कर्म परहरो, विघ्न सर्व दूर करो,
मंद छे अमारी मति, प्रभु ते सुधारो. तमे०

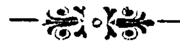
पद.

प्रभु अपराध क्षमा कर मारो, निंदित कर्मो जे में कीधां;
ते प्रभु सर्व विसारो, १ प्रभु अपराध क्षमा कर मारो.
शरण रही प्रभु चरणे वंदुं, भवजल पार उतारो. २ प्रभु
दास तणुं रक्षण करवानो, छे प्रभु धर्म तमारो. ३ प्रभु०
कृपाघना कृपादृष्टि करीने, मति प्रभु मारी सुधारो.४ प्रभु०
करद्वय जोडी विनति करूंछुं, संकट सर्व निवारो. ५ प्रभु०

पद.

दीननो दयाल छोडी कोने शरण जाउं, दीननो०
मात तात जाणी प्रभु, चरण प्रते धाउं;
पामिने प्रसाद पूर्ण, कृतकृतार्थ थाउं. २ दीननो०
नीतिभक्तिरूपी पुण्य तीर्थमां हुं नाहुं;
परम इष्ट ब्रह्मनी, हुं स्तुति गुण गाउं. २ दीननो०

प्रभु कृपानिधाननी हुं, पूर्ण कृपा चाहुं;
संकट समय नाथ, पल्लव हुं साहुं. दीननो० ३
नमी नमी परात्परा हुं, शरण तारे आवुं;
प्रेमपुष्पअंजलि, प्रभुपदे वधावुं. दीननो० ४



आरति.

जयदेव जयदेव जयमंगलदाता जयमंगलदाता,
विश्व तणा विभुधाता[२] भक्तजनत्राता जयदेव० ॥१॥
करुणासिंधु कृपाल कृतियो नव जोशो[२]
अल्पमती जीवोना[२] अतिशय छे दोषो जयदेव० ॥२॥
सच्चिद्घन आनंद त्रिभुवनना स्वामी[२]
सर्वज्ञांतर्यामी[२] सचराचरगामी जयदेव० ॥३॥
संकट समये नाथ प्रभु आवो वारे[२]
भय सर्वे संहारो[२] शरण अमे तारे जयदेव० ॥४॥
अंतर्भावथि नाथ करुं तारी सेवा[२]
दुरित कृतीओ मारी[२] क्षमा करो देवा जयदेव० ॥५॥
अभिवंदन भगवंत करुं निशदिन तमने[२]
कृपा करीने आपो[२] प्रभु सन्मति अमने जयदेव० ॥६॥
सदाचार ए मुख्य छे भक्ति तारी[२]
सदा तमारे चरणे[२] वृत्ति रहो मारी जयदेव० ॥७॥
जगदीश्वर जगतात तापत्रय हरशो[२]
मनवाञ्छित प्रभु मारां[२]सकल पूर्ण करशो जयदेव०॥८॥



अंक ३ जो.

ललित.

जगतनाथरे, नम्र थै अमे, विनयभावथी, वंदिये तने;
श्रवण आ करो, स्वल्प प्रार्थना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १
विषय भोगमां, राखिछे रति, नव कदी अमे, भक्ति तो किधी;
शरण आविने, मागिये क्षमा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २
सबल शक्ति छे, ताहरी प्रभु, कादि कळी सकाती नथी विभु;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ३
ग्रहगणो तणा, गोळ जे दिसे, भ्रमण शक्ति छे, सर्वने विषे;
प्रभु चमत्कृतीमां नथी मणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ४
जगतसृष्टिमां, चातुरी अति, नियमपूर्वके, छे बधी कृति;
जिव प्रते किधी, छे बहू दया, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ५
मनुषने दिधी, श्रेष्ठ सर्वथी, सत असतना, ज्ञाननी मति;
दुर करो प्रभू, दुष्ट वासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ६
सकल प्राणिना, मात तातरे, विदित छे तने, सर्व वातरे;
तदपि सांभळो, दीन याचना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ७
शमदमादिना, नीम ना लिधा, जन हितार्थरे, कार्य ना किधां;
निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८
अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;
नव जुओ तमे, दोष दीनना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ९
विपति कालमां, धैर्य आपशो, प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो;
तुज दया विना, सर्व छे वृथा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १०

पतित पावना, प्राणना पति, परम प्रेमथी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने, नित्य वंदना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ११
जगहितार्थनां, कार्य जो थशे, प्रभु प्रसन्न तो, ते थकी थशे;
नव तने गमे, ढोंग गर्वना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १२
विकट जाल छे, विश्वमां घणी, तुज विना नथी, अन्यरे धणी;
सघळि टाळशो, रे विडंबना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १३
दिनदयाल रे, दास तारशो, परम भक्तनां कार्य सारशो;
दुरित कापशो, सर्व जन्मनां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १४
चपल छे घणा, धर्म चित्तना, विकल वेग छे, इंद्रियो तणा;
वश नही थशे, रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १५
जगतमां रही, नीति पाळिये, सुकृतमां सदा, काल काढिये;
अति वरिष्ठ छे, ए उपासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा-भक्ति तो गमे, तुज पदे रती, राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे, बाह्य साधना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १७
नियम ताहरा, नित्य मानिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;
नरकनी नही, थाय यातना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १८
तुज कृपाथकी, बोलिये अमे, तुज कृपाथकी, चालिये अमे;
तुज कृपाथकी, थाय कामना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १९
नबळि वाणिये, जे कह्युं अमे, प्रभु स्विकारि ल्यो, सर्व ते तमे;
सतत राखशो, प्रीतिभावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २०
समिप आवियां, प्राणि पामरो, शरण राखिने, रक्षणो करो;
दुरित दुर्गुणो, छे अती घणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २१
कर प्रसारिने, वंदिये अमे, करगरी कहीए खरुं तने;
प्रभु शरण्य छो, सर्व जीवना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २२
दिन प्रते दयादृष्टि राखशो, दुरित कर्मने, कापि नांखशो;

प्रभु अमारि छे, एज वाञ्छना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २१

—०—

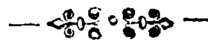
हे परमदयालु परमेश्वर! आ संसारयात्रामां मारां कर्तव्य कर्म करवामां मने घणी तरेहनी अडचणो नडे छे. मारुं मन भ्रमित थई आडे मार्गे घसडाई जाय छे. तारी सहायता विना ए दूर थाय तेम नथी, माटे आ मारी अल्प प्रार्थना श्रवण करी मारुं मन निर्मल कर.

बहारना बोलो अने देखावथी तुं कदी छेतरातो नथी. अंतःकरणमां जे जे खोटा विचारो थाय छे ते तुं अंतर्यामी जाणे छे, अने खोटां कर्म कर्यां होय तेज प्रमाणे तेमने तुं गणे छे. दीन शब्दोथी तारी प्रार्थना करी क्षमा मागुं छुं अने नीति तथा सदाचरणमां रहेवानुं कहुं छुं. परंतु मनमां कोइने दगो देवाना, कोइनो विश्वासघात करवाना, कोइनी हिंसा करवाना, कोइनो माल छीनवी लेवाना, के बीजा कोइ पाप कर्मना विचार चालता होय तो सघळी प्रार्थना निष्फल जाय, अने तारी बमणी शिक्षाने पात्र थाउं, ए निश्चय छे. अंतःकरण शुद्ध थया वगर आवा बहारना बोलथी तुं न्यायी प्रभु मारां पापनी कदी क्षमा करनार नथी. माटे हे करुणासिंधु! हुं एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करुंछुं, के मारुं अंतःकरण प्रकाशमान कर अने मने खरो रस्तो देखाड. एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करुं, अने पाप कर्म मनमां पण न आणुं, तोज मारी मुक्ति छे. थएला कुकृत्यने वास्ते पश्चाताप करी माफी माग्या पछी वारंवार हुं एवांज कुकर्म करवामां प्रवृत रहुं तो पछी तारी क्षमानी आशा

राखुं ए फोगट छे. माटे हे सर्व शक्तिमान् परमेश्वर! वारंवार पाप कर्म करतां अटकवानी मने प्रेरणा कर, अने पाप कर्मना विचार पण मनमां न आवे एवी मति आप.

ज्यारे मारुं मन तारा विचारमां तल्लीन थई जायछे त्यारे आ सृष्टिना दरेक चमत्कारमां तारी अथाग शक्ति अने डहापण जणाया विना रहेतां नथी. ते वखते तारुं तेजोमय स्वरूप अने तारा उपकार आपोआप देखाई आवेछे. तारा नियमो अने इच्छानी छाप मारा अंतःकरणमां एवी तो वागेछे, अने तेनी असर एटली तो थायछे के, तेथी उलटुं चालवानो धिक्कार आव्या विना रहेतो नथी; पण हुं आ संसारनी मायानां काम करुंछुं त्यारे, मारा अधम स्वभावने लीधे, मारा मनोविकारने लीधे, ए असर ओछी थई जाय छे. लोभ, मोह, काम, प्रबळ थई विवेकबुद्धिने दाबी नांखे छे, मारां ज्ञानचक्षु फूटी जायछे. हुं अंध थई मनोविकार दोरी जाय ते रस्ते चढुंछुं, अने घणी जाळोमां फसाई पडुंछुं. आवी वखते, हे जग-त्राता परमेश्वर! तारी मदद वगर हुं बहु अथडाई पडुंछुं. मनोविकारने नरम पाडी विवेकबुद्धिने प्रबळ करवाने तारा विना मारे कोइनो आश्रय नथी. माटे हे कृपालु सर्व शक्तिमान परमेश्वर! खरा अंतःकरणथी, अने एक निष्ठाथी हुं तारी प्रार्थना करुंछुं के तुं मने खरे रस्ते चढाव; स्वार्थ, लोभ, काम, वगेरे अनीतिथी मारा अंतःकरणने दूर राख; द्वेष, अभिमान, लोभ, वगेरेने लीधे मने अने मारा जातेभाईयोने पोतानो खरो धर्म बजाववामां जे हरकतो पडे छे ते तुं दूर कर; निरंतर तारी इच्छा अने तारा नियमो प्रमाणे चालवाने मने मदद कर; मारां पाप अने संकट दूर कर; अने तारी इच्छाविरुद्ध होय एवी मारी सघळी मन-

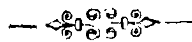
कामनाओ, अने कुसनो समुळगो नाश कर. तथास्तु.



स्त्रग्धरा.

विश्वाधारा अपारा, अति विनय थकी, वंदु पादारविंदे,
प्रेरो सद्धर्म नित्ये, नहि कदि फसुं हुं, वासना दुष्ट छंदे;
संसाराब्धिप्रवाहे, प्रभु कर धरिने, धर्म नौकाथि तारो,
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनवथी तमने, कष्ट सर्वे निवारो. १
जाणो अंतःस्थ वार्ता, वधु प्रभु तमने, शुं करुं हुं विलापो.
विश्वासे हुं रहुं छुं, भवपति अमने, सर्वदा शान्ति आपो;
आराधं एक चित्ते,प्रभु मुज हृदये,भक्ति श्रद्धा वधारो. वंदुं हुं. २
कुसो कूडां करुंछुं, अविहित अवळे, मार्ग हुं संचरुं छुं,
तोए विश्वास राखी, प्रभु शुभ पदनुं, ध्यान चित्ते धरुंछुं;
जाणी मारी दयारे,त्वरित प्रभु करो,नाश सर्वे विकारो. वंदुंहुं. ३
दोषो मारा घणा छे, अगणित दुरितो, रे बहु क्रूर गूणो,
मागुं ते शी क्षमारे. नवाळि कृति तणो, एक खूणो न ऊणो;
प्रीतीभावे निभावो, प्रति दिन प्रभुना,मानुंछुं ऊपकारो; वंदुं हुं.४
तारो तारो प्रभु हे, कर ग्रहि अमने, विश्वसिंधूथि तारो,
बीजो एके न आरो, तुजविण विभुरे, विघ्न सर्वे विदारो;
साचो विश्वास तारो,दिन जन मुजने,चित्तथी ना विसारो; वंदुंहुं.५
भूलुं संसारमायाथकि भवपति हुं, भ्रान्तिमां पूर्ण डूलुं,
साचा मानी प्रपंचो, अतिशय मदथी, मूर्ख हुं खालि फूलुं;
साष्टांगे पाय लागी, प्रणिपत करुंछुं, वृत्ति मारी सुधारो; वंदुंहुं.६
शी शी शोभा वखाणुं, विभु तुज कृतिनी, शक्ति छेरे अपार,
मोटा मोटा महन्तो, अति श्रम करिने, थाकि पाम्या न पार;

अज्ञानी प्राणि हुं ते, तुज गुण महिमा--ना करुं शुं विचारो; वंदुंहुं. ७
अंतर्यामी अनादी, त्रिभुवनपतिने, श्रेष्ठ संपूज्य जाणुं,
एकान्ते एकचित्ते, अप्रतिम प्रभुनी, शुद्ध भक्ती वखाणुं;
श्रद्धाथी प्रार्थना जे, करुं प्रभु तमने, लक्षमां सर्व धारो; वंदुं हुं. ८
प्रातर्मध्याह्न संध्या, अति शुभ समये, स्वामिने पाय लागुं,
वाञ्छा पूरो अमारी, करद्वय प्रसरी, नित्य प्रत्ये हुं मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, क्षण प्रतिक्षण हुं, दुःख मारां विदारो; वंदुंहुं. ९
आपो चारे[1] पदार्थो, प्रभु करि करुणा, पुत्र संतान पाळो,
पाळो सर्वे प्रजाने, सहु दिन जननां, दुःख दारिद्र्य टाळो;
धारुं आधार तारो, विनति करुं प्रभु, वाणि मारी स्विकारो; वंदुंहुं. १०



वसंततिलका.

जेने न जाणि सकशे मन इंद्रि धर्म,
जेने न पामि सकशे गुण देहकर्म;
एवा परात्पर प्रभू अति शक्तिमान,
पादारविंद नमि नित्य धरुं हुं ध्यान. १
जे पूर्ण ईश्वर प्रभू निजशक्तियोगे,
उत्पन्न विश्व करि ते थकि छे वियोगे;
जीवो तणी गति कृती चितमां धरे छे,
भक्तोनुं रक्षण कृपा थकि ते करे छे. २
जेना बळे अखिल विश्व विराजमान,
जेणे अनेक रचना रचि छे महान;
ते एक ब्रह्म अविकार अनादि देव,

१ धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष ए चार.

पामी सदा शरण तेनि करुं हुं सेव. ३
जेनो महान महिमा नहि कोइ पाम्या,
तर्को करी ऋषि मुनी मनथी विराम्या;
ते एक नित्य अज ईश्वर लोकपाल,
बुद्धिप्रकाशक प्रभू नमुं सर्व काल. ४
छो नित्य मुक्त अति शुद्ध विबुद्ध ईश,
सर्वेथि पार परिपूर्ण प्रभू अधीश;
जीवो तणी कृति तमे सघळी निहाळो,
सत्ये रही पृथक सृष्टि समस्त पाळो. ५
आ मृत्युलोक महि छो प्रभु सत्य त्राता,
स्वर्गापवर्गसुखसन्मतिशान्तिदाता;
भक्तो प्रते प्रभु करो करुणा कृपाओ,
माङ्गल्य कार्य करवा अति शीघ्र थाओ. ६
विश्वेश भक्त जनना भवपाश कापो,
सामीप्यमुक्तिपदनो प्रभु लाभ आपो;
अंतःस्थ वृत्ति जिवनी तमने विदित,
पादारविंद प्रणमी धरुं ध्यान नित्य. ७
हे दीनवत्सल दयानिधि दीनबंधु,
कारुण्यमूर्ति तमने स्मरि नित्य वंदुं;
वंदी करुं स्मरण हुं उपकार तारा,
त्राता तमे भव विषे प्रभु सत्य मारा. ८
कोट्यावधि प्रतिदिने अपराध थाय,
मागुं क्षमा प्रभु रहो अमने सहाय;
आधार आश्रय कृपानिधि सत्य तारो,
संसारसिंधुभयथी प्रभु नाथ तारो. ९

एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं तमारुं,
कल्याण मंगल करो सघलुं अमारुं;
साष्टांग नाथ तमने करिये प्रणाम,
पूरा करो प्रभु तमे शुभ सर्व काम. १०

मालिनी.

परम प्रभु तमारी, छे कलाओ अपार,
यश गुण महिमाना, कोइ पाम्या न पार;
स्तवन करि अमे आ, प्रार्थनाओ उचारी,
विहित विभु हशे जे, तेज लेशो स्विकारी. १
शरण रहि तमारे, वंदिये वारवार,
प्रभु अति करुणाना, मानिये ऊपकार;
नहि नहि नहि कोई, नाथ बेली अमारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथि तारो. २



गायन.

पद.

प्रभु छो अति दयाल, दीनजनप्रतिपाल,
शरणे तमारे अमे, भवसिंधु तारो;
करो सर्व रूडां काज, सेवकनी राखो लाज,
अवगुण अपराध, लक्षमां न धारो. प्रभु०
भक्तनो समाज आज, मळीने महाधिराज,
विनति करिये प्रभु, ते तमे स्वीकारो;

कृपा करी कर ग्रहो, अवगुण नव लहो,
चित्तना शमावी क्लेश, शान्तिने वधारो, प्रभु० १

पद.

भवपति संकट सर्व हरो.
अपराधो अतिशय में कीधा, अनुग्रह पूर्ण करो. भवपति० १
अनन्यभावथी राखुं तमारो, आश्रय एक खरो. भवपति० २
करजोडी हुं विनति करुं छुं, प्रभु ते चित्त धरो. भवपति० ३
करुणादृष्टिथी मुज हृदये, प्रेमल भक्ति भरो. भवपति० ४

पद.

शरणागतने निभावो, प्रभु सर्व दोष शमावो;
कृतियो न लक्षमां लावो, प्रभु सर्व दोष शमावो.
विनय थकी विनति अमे करिये, सन्मति नित्य बतावो. प्रभु सर्व० १
जगदीश्वर जगवंद्य दयाला, दुःख संकटथी बचावो. प्रभु सर्व० २
दुष्ट विकारो तणी जालोमां, विभु नव अमने फसावो. प्रभु सर्व० ३
सदा सदाचरणमां अमारी, वृत्ति विशेष रखावो. प्रभु सर्व० ४
अवलंबन आधार तमारो, सद्धर्म कर्म करावो. प्रभु सर्व० ५
प्रतिपालन प्रभु नित्य करो छो, ते उपकार स्मरावो. प्रभु सर्व० ६
कृपाधना कर ग्रहीने अमारां, किल्बिष सर्व हठावो. प्रभु सर्व० ७
भक्ति थकी भगवंत अमारुं, चित्त कदी न डगावो. प्रभु सर्व० ८
क्षमा करी अपराध अमारा, उत्तम मार्गे चढावो. प्रभु सर्व० ९



आरति.

जयदेव जयदेव जय करुणासिंधु, जय करुणासिंधु,
करजोडी प्रभु तारे (२) चरणे नित्य वंदुं जय देव०॥१॥

अंक ४ थो.

तत् सत् ब्रह्म महेश मुक्तितणा दाता(२)
व्यापि रह्यो सत्ताथी(२)विभु सविता धाता जय देव०॥२॥
प्रात समय परमेश प्रभु पदने वंदुं (२)
सत्कर्मो करवानो (२) विधि हुं आरंभुं जय देव०॥३॥
सायंकाल महेश सकल क्रिया मारी (२)
तुज चरणे अर्पीने (२) मागुं कृपा तारी जय देव०॥४॥
सर्वात्मा सर्वेश सुखशांति आपो (२)
कृपाकरी करुणानिधि(२)कष्ट सकल कापो जय देव०॥५॥
कीधा अति उपकार वळि नित्ये करशो (२)
दोष दयानिधि मारा(२)चितमां नव धरशो जय देव०॥६॥
अवलंबन आधार सत्य प्रभु तारो (२)
शरणागत सेवकने (२) भव थकि उद्धारो जय देव०॥७॥
अभिवंदन करि नाथ ध्यान चित्ते धरिये (२)
प्रेम तणी पुष्पांजलि(२)चरणार्पण करिये जय देव०॥८॥

अंक ४ थो.

भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ सत्य, किधुं छे तमे आ बधुं सृष्टिकृत्य;
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. १
अतीशे तमारुं प्रभू छे महत्त्व, सज्यां छे महाच्छक्तिथी सर्व तत्त्व;
भुमी व्योम वायू अने तेज आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. २

तमारी स्तुती वेद शास्त्रे वखाणी, विरामी मुनीओ तणी वृत्ति वाणी;
जगाधीश तारा गुणो छे अमापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ३
पराभक्तिथी प्रार्थना वंदनाओ, कृपाथी स्विकारी तमे हाथ साहो;
करो नाथ मारां क्षमा सर्व पापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ४
अमे मंदबुद्धी अती अल्प प्राणी, कृतीओ नथी तुं थकीरे अजाणी;
विना तुं सुणे को अमारा विलापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ५
कृपानाथ दोषो न जोशो कदापि, अमे पाप कर्मो करीए तथापि;
अमारां बधां दुःख दारिद्र्य कापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ६
महाकष्टमां धैर्य धाता धरावो, सदा सर्वदा कार्य रूडां करावो;
निवारो त्रिवीधी तणा सर्व तापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ७
तमे छो प्रभू अन्नदाता अमारा, तमे छो प्रभू सर्वथी श्रेष्ठ सारा;
तमे छो अमारा प्रभू मायबापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ८
सदा वंदना आपने छे अमारी, तमे प्रेमथी ल्यो विनंति स्विकारी;
सदा दासने सद्गती नीति आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ९

हे जगदीश्वर! तारूं स्वरूप माराथी कळी सकातुं नथी; तुं महा शक्तिमान्, परमपवित्र, अने दयावान् छुं आ वेला हुं तने नमस्कार करी शांत मनथी तारा उपकारनुं स्मरण मनमां राखी तारी प्रार्थना करूंछुं. हुं केवल रंक अशक्त, पापी प्राणी छुं; संसारी प्रपंच, तथा विकारोना पाशमां गुंथायलो छुं; तारी शुद्ध उपासना माराथी थई सकती नथी. सवार थयुं सांज पडी, ए रीते घटमाल चाली-जायछे, माराथी तने सारूं लागे एवुं कांइ कार्य थतुं नथी, माटे हे विश्वोद्धारक, विश्वपालक पिता! तारा आगळ केवल लज्जायमान थई तने साष्टांग दंडवत् वंदन करीने कहुंछुं के, तुं मारा अपराध उपर विचार नहि

करतां मारुं नित्य पालन पोषण तथा रक्षण करेछे, ए तारो मारा उपर घणो उपकार तथा प्रीतिभाव छे. मारां पातक जे क्षमा करवा जेवां हशे ते क्षमा करीश ए तारा दयालु स्वभावनो मने पूरो विश्वास छे. जे पाप में जाणी जोईने कीधां हशे ते तुं क्षमा करवानो नथी एवो मने भय लागेछे. पण हे कृपालु प्रभु! तुं मारा शरीरनी तथा मननी नबळाइ जाणे छे, ए नबळाइने लीधे थयेला दोष तुं क्षमा करीश अने फरीथी न थाय एवी मने बुद्धि आपीश.

मने खरेखरो विश्वास छे के, तारी खरी भक्ति तथा शुद्ध उपासना उपर मारो लक्ष रहेशे, अने नित्य तारी प्रार्थना हुं करीश तो माराथी कुकर्मथी दूर रहेवाशे, कारण के, तारी भक्ति तथा उपासनामांज ए फल रहेलुं छे, माटे हे दीनदयाल परमेश्वर! तने महा समर्थ, अने सर्व प्राणीनो तारनार समजीने, खरा प्रेमथी तारे चरणे मारुं मस्तक नमावी प्रार्थना करुं छुं के दुष्ट नठारां कर्मोथी मारुं मन खशेडी तारी भक्ति तथा उपासना करुं अने सदाचरणथी चालुं एवी मने तुं सदा चेतवणी आपी मारुं रक्षण कर. मारुं कर्तव्य कर्म करवामां गमे तेवी विपत्ति के दुःख पडे तो ते सहन करवानी मने शक्ति, उत्साह, अने धैर्य आपजे..

हे परम कृपालु ईश्वर! तुं सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, तथा सर्वनो नियंता छुं. तारा प्रकाशथी आ सर्व जगत् प्रकाशमान छे. तारुं रूप हुं मारां चक्षुवडे देखी सकतो नथी; पण आ सृष्टिनी सुंदर रचना, तथा आकाशमां ग्रह, ताराओनी शोभा तथा तेना नियमो जोवाथी मारा मनमां दृढ निश्चय थाय छे के तुं आ जगत्नो कर्ता छुं. तारां सरजेलां प्राणीओ

उपर करुणा करवी ए तारो स्वभाविक गुण छे. तें मने विवेकबुद्धि आपीछे ते वडे विचार करुंछुं तो मने एज प्रेरणा थाय छे के, तें आ संसारमां मने तारी भक्ति तथा मारा स्वजाति मनुष्य प्राणियो उपर प्रीति राखवाने उत्पन्न कर्यो छे, अने ए माटे मारुं मुख्य काम करवामां हुं आलस्य करीश तो हुं तारो खरो सेवक गणाइश नहि, तथा तारी प्रीतिने पात्र थइश नहि; तारी प्रीति मेळववाने माटे मारे तारी इच्छाने अवश्य आधीन रहेवुं जोइये, ने तेम न रहुं तो मने आ लोकमां अथवा परलोकमां दुःख थाय तेमां तारो वांक काढवानो नथी, मारुं कर्म मारे भोगववुंज जोइये. आ विचार मारा मनमां दृढ थवाने तारी सहायतानी जरूर छे, माटे हे करुणामय प्रभु! तने वारंवार प्रणाम करीने कहुंछुं के कृपादृष्टि करीने मने एवी सुबुद्धि आप के हुं कोइ उपर वेरभाव राखुं नहि, बीजानी अदेखाइ करुं नहि, कोइनुं द्रव्य लई लउं नहि, कोइनो घात करुं नहि, मारा मनुष्य भाईओ उपर समान भाव राखी तेओने सुखी करवामां तन मन अने धनथी श्रम करुं, अने सदाकाल नीतिना नियम पाळुं. आ मारी विनति हे परमकृपालु पिता! तुं स्वीकारजे. शांतिः शांतिः शांतिः

ललित.

सकल विश्वना, नाथरे तमे, शरण आविने, वंदिये अमे;
मनुष अल्प ते, शुं करे स्तुति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १
नियम तें प्रभू, जे किधा हशे, तदनुसार तो, ते क्रिया थशे;
नहि कदी फरे, एकरे रती, गहन तारि छे, रे प्रभू मति. २

जिव जनो घणा, यत्नने करे, तदापि आदर्युं, तारुं ना फरे;
अकल छे प्रभु, तारि तो कृति, गहन तारि छे,रे प्रभू गति. ३
नमि नमी अमे, विश्वनाथने, विनविये सदा माततातने;
प्रभु कला कळाती नकी नथी, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ४
क्षणज मात्रमां, शुं थशे अहिं, दिन अमे जिवो, जाणिये नहि;
आति तमारि छे, रे चमत्कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ५
प्रभु मनोरथो, धारिये घणा, नहि पुरा थशे, रे कृपाविना;
अनुग्रहो करो, राखिने प्रिति, गहन तारी छे, रे प्रभू गति. ६
नियम नाथ छे, सत्य ताहरो, जनम जे थयो, जाय ते खरो;
सबल सत्य छो, सर्वना पाति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ७
अवसरे तमे, आवि सान्निधे, शुभ सहाय तो, रो' दयानिधे;
पतितपावना, प्रेर सन्मति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ८
विकट पंथ छे, विश्वमां घणो, सकल आशरो, छे दया तणो;
प्रभुपदे सदा राखिये रति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ९
विषयभोगमां, लिप्त ना थवुं, सतत शुद्ध सन्मार्गमां जवुं;
दुर करो दयानाथ दुर्मति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १०
प्रभु तने गमे तेज थायछे, जिवतणा श्रमो, व्यर्थ जाय छे;
दिन प्रते करो, रे दया अति, गहन तारिछे, रे प्रभू गति. ११
दृढजनो कदी, धैर्य ना मुके, जनहितार्थनां, कार्य ना चुके;
तुज कृपा थकी,थाय ना क्षति,गहन तारिं छे,रे प्रभू गति. १२
नियम ताहरा, जे विधे हशे, सुख दुखो क्रमे, प्राप्त तो थशे;
विपति संकटे, द्यो तमे धृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १३
धन जुवानीनो व्यर्थ गर्व छे, तुज कृपा विषे, अर्थ सर्व छे;
शरण राखजो, आपि सद्गति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति.१४
प्रणत प्राणियो, पामरो अमे, हृदयमां सदा, चिंतिये तने,

प्रभु सुणो तमे, नम्र वीनति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १५



वसंततिलका.

हे ब्रह्म ईश जगदीश जगन्निवास,
पादारविंद नमि नाथ तने हुं दास;
नित्ये निरंतर करुं स्तुति प्रार्थनाओ,
हे विश्वनाथ प्रभु नित्य प्रसन्न थाओ. १
तारा अपार महिमा नहि कोइ पामे,
वाणी सहीत मनवेग सहू विरामे;
तारा अभेद्य पटमां नहि कल्पनाओ, हे विश्वनाथ० २
तारी कृपा थकि वदे विभु मूक वाणी,
तारी कृपाथि गिरि पंगु चढेज प्राणी;
तारी कृपाथि जगमां सघळी लिलाओ, हे विश्वनाथ० ३
मारां कुकर्म सघळां तमने विदीत,
विस्तार नाथ करवो नहि रे घटीत;
कारुण्यभावथि करो करुणा कृपाओ, हे विश्वनाथ० ४
लज्जा रहीज सघळी प्रभु हाथ तारे,
मारो निभाव करवो नहि नाथ भारे;
तारा प्रसादबलथी भयना अभावो, हे विश्वनाथ० ५
तुं नित्य सत्य अज ईश्वर सृष्टिपाल,
बुद्धिप्रकाशक तने नमुं सर्व काल;
टाळो कृपा करि बधी दुरवासनाओ, हे विश्वनाथ० ६
जे जे अहीं बहु सुखो प्रभु प्राप्त थाय,
ते सत्य तारि सघळी करुणा जणाय;

सद्भक्तनी पुरि करो प्रभु वाञ्छनाओ, हे विश्वनाथ० ७
संसारमां सकलमंगल क्षेमदाता,
तारा विना नहि अहीं प्रभु अन्य त्राता;
भक्तो तणी दुर करो दुख आपदाओ, हे विश्वनाथ० ८
सृष्टिस्थितिप्रलयकारक लोकनाथ,
अल्पज्ञ प्राणि जननो ग्रहि नाथ हाथ;
प्रेमे करी प्रभु करो परिपालनाओ, हे विश्वनाथ० ९
विद्या विवेक मति संपति सर्व आपो,
संभाळ मारि करि संकट सर्व कापो;
द्यो धर्मकर्म करवा शुभ सूचनाओ, हे विश्वनाथ० १०
माता पिता प्रभुवरा अति दीन बाल,
एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं त्रिकाल;
नित्ये प्रणाम करिने करुं याचनाओ, हे विश्वनाथ० ११
आधीन छुं प्रभु मने भयथी उगारो,
संकष्ट दुःख समये समिपे पधारो;
मागुं विनंति करि पाप तणी क्षमाओ, हे विश्वनाथ० १२
संपूर्ण प्रेम करिने उपकार कीधो,
आ मृत्युलोक महि मानवि देह दीधो;
राखो सदाचरणमां चितभावनाओ, हे विश्वनाथ० १३
हे भक्तवत्सल दयानिधि दीनदोषो,
क्रोधायमान थई ईश कदी न जोशो;
हुं दीन दास शरणागतने निभावो, हे विश्वनाथ० १४
तारुं सदा स्मरण ध्यान करुं हुं दास,
द्वारे उभो नव करो मुजने निराश;
पूरी करो प्रभु तमे मनकामनाओ, हे विश्वनाथ० १५

कतर्व्य कर्म जगमां राहि नाथ थाय,
सद्धर्म नीति नियमो सघळा पळाय;
ए शुद्ध तारि अति उत्तम अर्चनाओ, हे विश्वनाथ० १६
विश्वेश वंद्य विभु आश्रय सत्य तारो,
संसारसागर थकी प्रभु नाथ तारो;
साष्टांग नित्य तमने करुं वंदनाओ, हे विश्वनाथ० १७



शिखरिणी.

पिता माता नित्ये, प्रणमि करिये, नम्र विनति,
दयादृष्टी राखी, श्रवण करशो रे जगपति;
अमारी इच्छाओ, विदित किधिछे सर्व तमने,
रुडी केई तेनुं, नथि कचित तो ज्ञान अमने. १
अमो जीवोनुं छे, मन प्रभु अती मंद नवळुं,
तमे जाणो स्वामी, जिवतणुं हिताहीत सघळुं;
मनोर्थो माग्याछे, शुभ स्तुति तमारी करि अमे,
हशे जे जे रूडा, सफल करशो ते प्रभु तमे. २



गायन.

पद.

मंगल छे नाम तारुं, मंगल छे धाम तारुं,
मंगल छे काम तारुं, त्रिभुवन नाथ तुं;
तुज पद छे वरद, कृतकर्मफलप्रद,

अव्यक्त अखंड एक, अकल अबाध तुं. मंगल छे०
एवो तुं प्रभु महान, सघळे विराजमान,
जाणी ले बधी अमारी, अंतरनी वात तुं;
अवगुण छे अगाध, गणती न थाय नाथ,
तरवुं छे तारे हाथ, प्रभु मात तात तुं. मंगल छे० १

पद.

शरण तने भगवान्, प्रणमुं पाय पडीरे प्रभु शरण०
वृथा गयो भवजन्म अमारो, नव राख्युं निज भान,
दास सदा जाणीने तारो, तारो भवथी निदान,
करि करुणाज वडीरे प्रभु, शरण तने० १
सगुण स्वरूपे गुप्त रह्याछो, अन्य नथी तुं समान,
नव जाण्युं महा ऋषि मुनियोए, तारुं निश्चल स्थान,
विरम्या नेति वदिरे प्रभु, शरण तने० २
किंचित् नथी हुं योग्य परंतु, मागुं छुं वरदान,
कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्, मानीने बलवान्;
आवुं तुज द्वार चढीरे प्रभु, शरण तने० ३
शरणागतनी लज्जा राखो, विश्वाधीश महान्,
मनवाञ्छितफल निश्चय आपो, हे प्रभु कृपानिधान,
अवसर आव्यो अडीरे प्रभु, शरण तने० ४
परमात्मा परब्रह्म प्रभुनुं, गाउं शुभ गुणगान,
भक्ति परार्थी करुं हुं तमारा, ज्ञानामृतनुं पान,
सफली एज घडीरे प्रभु, शरण तने० ५

पद.

तुज विण अन्य नाहि प्रभु त्राता.

विनय थकी हुं विनति करुं छुं, विश्व तणा विभु धाता. तुज०१
सर्व ऋषि मुनि शुकसनकादिक, तुज महिमागुण गाता. तुज०२
दीनदयाळा तुज करुणा विण, कोण करे सुख शाता. तुज०३
आश्रय एक तमारो धारुं, सुख दुःखना प्रभु ज्ञाता. तुज०४
साष्टांगे हुं वंदुं विभुने, परपदमंगळदाता. तुज०५

पद.

अवगुण दोषो दयानिधि नव ल्हेजो रे
धर्मनियम उल्लंघुं तथापि, प्रेमे करो परम अनुग्रहो रे. अवगुण०१
शरणागत आधीन तमारे, दास जाणी अमारो कर ग्रहो रे. अ०२
भक्त जन प्रभु परम कृपार्थी, नव पामे संकट दुःसह्यो रे. अ०३
हे भगवंत दीन जन उपर, दयादृष्टि तमारी नित्य रहो रे. अ०४

आरति.

जयदेव जयदेव जय जगदाधीशा जय जगदाधीशा,
प्रकृतिपरा परमेशा (२) प्रणमुं प्रभु ईशा जयदेव० ॥१॥
साक्षि तमे सर्वत्र सत्ता थकि व्यापो (२)
कृपाकरी सेवकने (२) मति निर्मल आपो जयदेव० ॥२॥
नमि नमि नमि नमि नाथ पाय तने लागुं (२)
प्रभु आपो पुरुपार्थो (२) ए शुभ वर मागुं जयदेव० ॥३॥
मुज अपराध अगाध चित्तमां नव धरशो (२)
कृपाघना करुणा करि (२) पाप क्षमा करशो जयदेव० ॥४॥
प्रभु छो परम कृपाळु कार्य सफल करशो (२)
संरक्षण करि मारां (२) कष्ट सकल हरशो जयदेव० ॥५॥
परमेश्वर अस्तित्व सत्य करी मानुं (२)

श्रद्धा भक्ति उपासन (२) शुभ अर्चन जाणुं जयदेव० ॥६॥
पराभक्ति प्रभु ध्यान हृदय विषे धारी (२)
अभिवंदनपूर्वक हुं (२) करुं अर्चा तारी जयदेव० ॥७॥
ए उत्तम उपचार अर्पुं तुज चरणे (२)
अंतर्यागथि अर्चन (२) करि रहुं प्रभु शरणे जयदेव० ॥८॥

अंक ५ मो.

ललित

प्रभु परात्परा, पूर्णकामदा, प्रणमुं हुं तने, प्रेमथी सदा;
विनति जे करूं, चित्तमां धरो, प्रणत प्राणिनां, पापने हरो. १
परम ब्रह्मनुं, ध्यान हुं धरूं, परम भक्तिथी, प्रार्थना करूं;
बहु बलिष्ठछे, शक्ति ताहरी, नव कली सके, वृत्ति माहरी. २
अखिल विश्वना, नाथ नित्य छो, सगुण रूपथी, पूर्ण सत्य छो;
अकल छे कला, सृष्टिसर्गनी, नहि तहीं गती, जीव वर्गनी. ३
दुरित कर्म तो में कियां बहु, तदपि आपने आश्रये रहुं;
अवगुणो तणा, दोष ना लहो, करुणसागरा, ए अनुग्रहो. ४
भवनिमग्न हुं, भ्रान्तिमां भमुं, विषयमोहना, छंदमां रमुं;
अति दया करी, हाथ झालशो, त्रिविधदुःख संताप टाळशो. ५
दिनदयाल हे, हे कृपाघना, कर प्रसारिने, याचुं याचना;
प्रभु सहायता, संकटे करो, तुज कृपातणो, आशरो खरो. ६
शरण छुं प्रभु, प्रार्थना करूं, विनय भावथी, वाक्य उच्चरूं;
दुरित कर्मथी, नित्य हुं डरूं, विहित धर्ममां सत्य संचरूं. ७

विषय वासनामां हुं ना फसुं, सुजन संगतीमां जई वसुं;
विमल ए मती, मागुं हुं विभु, परम प्रेमथी, प्रेरशो प्रभु. ८
नमि नमी कहुं, नित्य नाथने, प्रभु उगारि ल्यो, भक्त साथने;
सकल जीवना, दुखहारक, प्रभु विना नहीं, अन्य तारक. ९
उभय हस्त हुं, जोडिने उभो, अभय दान द्यो, रे मने विभो;
प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो, मामिपमुक्तिनो, लाभ आपशो. १०
विनति सांभळो, विश्वना धणी, विभुस्वभावमां, छे दया घणी;
सदय चित्त जो, राखशो सदा, नहि कदी प्रभू, पामुं आपदा. ११
विदित आपजे, सर्व मर्मरे, प्रभु क्षमा करो, दुष्ट कर्मरे;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, पुरी करो प्रभू, भक्तकामना. १२



हे विश्वेश्वर! विश्वव्यापक! हुं आ वेळा तने प्रेमपूर्वक प्रणाम करी मारा चित्तमां तारुं ध्यान धरुंछुं; तें मारा उपर दया तथा उपकारो कीधा छे तेनुं स्मरण करुंछुं; तुं सर्वज्ञ छुं, तुं सर्वनो पिता छुं, हुं तारो नम्र, दीन, अने अशक्त बालक अनेक दोषोथी भरेलो छुं. छोकरांना दोष उपर मातपिता लक्ष आपतां नथी अने तेनुं कल्याण तथा सुख चाहे छे; ए न्यायथी तुं तारा सरजावेला जीवोनुं पालन करेछे. हे करुणामय प्रभु! बे हाथ जोडीने तने हुं नमस्कार करी मागुंछुं के हुं तने कदिं भूली जाउं नहि एवी बुद्धि मने आपजे, अने सदा सारे मार्गे चढावजे. तें मने विवेकबुद्धि आपी छे, पण मारुं अशक्तपणुं केटलुं छे ते तुं जाणे छे; तारी कृपा तथा सहायता विना माराथी कांइ पण सत्कार्य थइ सकवानुं नथी. माटे तुं वारंवार सारां काम करवानी मने प्रेरणा करजे. तुं न्यायी छे तेनी साथे दयाळु छे, तेथी मारा नाना अपराधोनी क्षमा करीश एवो

मने विश्वास छे. तारा विना हुं कोने शरण जाउं? तारा विना हुं कोनी पासे माफ मागुं? तुं मने पाळनार तथा तारनार छुं, माटे हे भक्तवत्सल भगवान! मारी दीनवाणी सांभळी हुं आ जगत्मां रहुं त्यां सुधी तारा ध्यान, भजन, तथा रूडां काममां मन रहे एवो मने रस्तो बतावी मारुं संरक्षण करीने हे विश्वनाथ! मारो उद्धार करजे.

छेल्ले तने साष्टांग नमस्कार करी कहुंछुं के मने अनीति तथा दुराचारथी सदा दूर राखजे.

वसंततिलका.

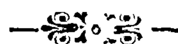
हे विश्ववंद्य जगदीश्वर दीननाथ,
शक्ती-तमारि सघळी सबली अगाध,
व्यापी रही जगतना जिव तारवाने;
भक्तोनुं ज्ञान बहु मान वधारवाने. १
एवा महान बळवान महेश्वराने,
विज्ञानवान भगवान भवेश्वराने;
पाय पडी नमि नमी स्तुति हुं करुंछुं,
प्रीत्यर्थ पूर्ण परब्रह्म पदे नमुंछुं. २
जीवो सृज्या जगतमां प्रभु हेतथी तें,
भूल्या भमे भव विषे निज कर्मथी ते;
तेमां हुं दोष करि पेट भरी रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ३
संभाळ लीधि अति तें करुणा, कृपाथी,
पृथ्वी विषे वशि रहुं प्रभुनी दयाथी;

दोषो अनेक वळि दुष्कृतियो करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ४
विध्वंश संकट सहस्र अनंत काप्यां,
संहारि सर्व भयने सुख नित्य आप्यां;
मिथ्या प्रपंच मद मोह विषे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ५
माया महान मदथी नथि नीज भान,
अज्ञान कापि मति शुद्ध करो निदान;
बीजो न आश्रय धरुं अति दीन हुं छुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ६
तारा अनुग्रह थकी वदुंछुं हुं वाणी,
तारा अनुग्रह थकी गति पाद पाणि;
तारा अनुग्रह थकी जगमां वसुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ७
जो ना करो प्रभु कृपा क्षणमात्र एक,
कार्यो न थाय मुजथी तृणमात्र छेक;
थाओ सहाय शरणागत थै रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ८
हे विश्वपालक विभू अज तुं समर्थ,
तारी दयाथि सरशे सघळाज अर्थ;
प्रेमे करी परमइष्ट तने भजुंछुं,
तारो तमे प्रभु नमे चरणे नमुंछुं. ९
आ सद्य काल वळि सर्व थते ज काले,
धारुं सदा स्मरण तारुं समस्त काले;
तारो अनुग्रह दया कदि ना भुलुं हुं,

तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १०
तारा अनुग्रह वडे वडि देह धारुं,
कर्तव्यधर्म वळि ज्ञान रुडुं अमारुं;
आपो सुनींति तमने विनती करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ११
सद्धर्मकर्म करतां चित तो चळेछे,
अज्ञानथी विषयभोग विषे मळेछे;
आपो प्रभू सुमति दुर्गतिथी डरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १२
हे पूज्यपाद परमेश्वर हीतकारी,
धारो चिते धरि दया विनती अमारी;
राखो मने हृदयमां भ्रमणे चढुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १३
पापो कियां प्रभु अमे अगण्यां अपार,
लोभी थई न कियुं कर्म रुडुं लगार;
सर्वे विदीत तुजने भवमां भमुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १४
जाणो समस्त अपराध अगाध मारो,
आपो क्षमा घटित धर्म खरो तमारो;
साष्टांग पाय नमि नाथ तने कहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १५
कामादियुक्त मनमां विचरे विकार,
ते शुद्ध स्वच्छ थइने सुधरे विचार;
मागुं हुं भक्ति परब्रह्म तने स्मरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १६

हे विश्वदेव करुं सेव सदा तमारी,
द्यो धर्मकर्म करवा मति निर्विकारी;
राखो समीप प्रभु प्रार्थन हुं करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १७
स्वामी समर्थ जिव सर्व उगारवाने,
तो शो प्रयास निजदासज तारवाने;
माटे महेश परमेश पदे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १८
अत्यंत लाभ जगमां जगदीश थाय,
तोए न वृत्ति कदि गर्वथकी भमाय;
धारो दया प्रभु हुं द्वार उभो रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १९
जे जे भलुं भव विषे भवनाथ देखुं,
ते ते विषे परम प्रेरक तुंज पेखुं;
चिद्रूप व्याप्त परिपूर्ण मने धरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. २०
संसारपंथ चरतां चितमां हुं धारुं,
तारुं स्वरूप सुखरूप अनूप सारुं;
थाओ सहाय प्रभु ए विनति करुंछुं,
तारो प्रभु शरण छुं चरणे नमुंछुं. २१
संबंधि होय जगमां वळि मित्र मारा,
तेने मने सुख हजो सुफळोज सारां;
सर्वेनुं मंगळ सदा शुभ चिंतवुंछुं,
तारो प्रभु शरण छुं चरणे नमुंछुं. २२
भावे थकी भवपतीपदने पुजे जे,

चित्ते चिदात्म धरि ध्यान प्रभू भजे जे;
पूरे मनोर्थ प्रभु सत्य करी कहुंछुं,
तारो मने शरण छुं चरणे नमुंछुं. २३
सौभाग्य तेनुं शिवरूप सदैव धारे,
दुर्भाग्य तेनुं चितथी प्रभुने विसारे;
विश्वेश मंगलपदे प्रणम्येथि जाय,
दोषो अशेष वळि निर्मल चित्त थाय. २४
आलस्यवृत्ति वळि निर्दयताविकार,
चित्ते रह्या बहुज दुर्गुणना विचार;
माटे कृपाथि मन शुद्ध करो महेश,
पाये पडुं प्रभु तने वदुं शुं विशेष. २५



भुजंगी.

जगन्नाथ हे देव हे स्वामि साचा, नमुं हाथ जोडी वदुं नम्र वाचा;
दया लावि चित्ते दयादान आपो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १
महा मोहना पाशमां हुं पड्योछुं, महाकालने मूख आवी अड्योछुं;
महापापना पुंज छे रे अमापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. २
प्रभूपादमां राखिये पूर्ण भाव, करो प्राणदाता अमारो निभाव;
तमारी कृपाथी टळे सर्व पापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ३
तमे कष्ट कोटयावधीनांज काप्यां, पुरो प्रेम आणी कृपादान आप्यां;
तमारी कृपाथी वधेछे प्रतापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ४
अरे मोटि आशा चिते तारि राखुं, बहू दीन थै दनि वाणी हुं भाखुं;
कदी ना जुवो में किधां सर्व पापो, प्रभु पाळिने पाप संताप कापो. ५
तमे विश्वकर्त्ता तमे विश्वभर्त्ता, दयाळु प्रभू दुःखीना दुःखहर्ता;

तसे शक्त संहारवा सर्व शापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ६
मने रंकने रक्षणो सर्व दाता, महासिंधुमां छो तमे सत्य त्राता;
उगारो सदा सद्गती आप आपो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ७
सदा सर्वदा ओथ आखी तमारी, महा कष्टमां मूकशो ना विसारी;
विना तुं न जाणे अमारा विलापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ८
जुवो जो तमे कर्म मारांज सामुं, अती पापि हुं केम रे प्रेम पामुं;
किधा में नथी धर्म सत्कर्म जापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ९
प्रभू रे प्रभू रे प्रभू रे प्रभू रे, नमीने नमीने नमीने कहुं रे;
नथी अन्य त्राता क्षमा आप आपो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १०
अति प्रेमना भावथी चिंतवुं छुं, अती नम्र थै नम्र वाक्यो वदुं छुं;
नथी आशरो आशरो एक सत्य, प्रभू हुं नमुं हुं नमुं नित्य नित्य. ११
अतीदीन जीवोनि संभाळ लीधी, अति प्रेम आणी कृपादृष्टि कीधी;
मने तारवाने क्षमावंत थाओ, दयादृष्टिथी दीनना हाथ साहो. १२

अनुष्टुप्.

कृपाळु छो जगन्नाथ, जीवना प्रतिपाळक;
शरणे राखशो स्वामी, जाणीने दीन बाळक. १
इच्छा आशा अमारी जे, हती ते आपने कही;
केइ तेमां हशे योग्य, ते अमे जाणिये नहि. २
मनोर्थो जे हशे सारा, ते तमे नाथ आपशो;
कृपादृष्टि करी नाथ, किल्विषो सर्व कापशो. ३
सत्य आधार छे नाथ, अमारे आपनो खरो;
सुतवात्सल्यभावेथी, कृपासिंधु कृपा करो. ४

गायन.

पद.

जगदीश छो अनुप, करुणामयस्वरूप,
श्रवण करो अमारी, विनति कृपा करी;
सात्विकगुण प्रधान, धारो छो दयानिधान,
भक्तपर छे तमारि, दृष्टि तो दयाभरी. जगदीश०
भासे जे बधो विराट, प्रभु छे तमारो ठाठ.
सघळो ए सत्य घाट, राखो सत्तार्थी धरी;
तमे छो प्रभु वरिष्ठ, सत्ता छे अति बलिष्ठ,
अमारां बधां अरिष्ट, लेजो संहरी हरि. जगदीश० १

पद.

कृपानिधि पूर्ण मनकाम करो.
अति दुर्गम दुस्तर भवपंथ, भक्तने नथी अघरो. कृपानिधि० १
प्रभुचिंतन शुभपदवंदनथी, मंद मुज मति सुधरो. कृपानिधि० २
सदयहृदय करुणामयमूर्ति, चित्तमां नित्य ठरो. कृपानिधि० ३
दीनवत्सल दीनबंधु दयाल, दुर्मति सर्व हरो. कृपानिधि० ४

पद.

स्तवन शुभ तारुं करुं रे, प्रभु अल्पमति अतिदीन. स्तवन शुभ.
प्रभु तारी प्रभुताई, त्रिभुवनमां गवाई,
सदा रहुं छुं तने आधीन. स्तवन शुभ तारुं करुंरे. १

पद.

नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे;
जगन्नाथ जगतात प्रभु, तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे. नाथ तारे०

सय सबल सर्वांतर्यामी, निस निरंतर प्रभु निष्कामी;
करुणामय मंगलमूर्ति सदा, तारुं स्मरण हृदय धरीरे. नाथतारे० १

— ❧ —

आरति.

जयदेव जयदेव जय मंगलकारी जय मंगलकारी
अति करुणा विस्तारी (२) प्रभु छो उपकारी. जयदेव० १
षड्गुणयुत भगवन भक्ति सदा आपो (२)
करुणा करि सेवकनां (२) भय संकट कापो. जयदेव० २
शुभ मंगल गुण गाय भक्त जनो तारा (२)
अविचल शुभ पद आपो (२) विभु विश्वोद्धारा. जयदेव० ३
कोट्यावधि अपराध प्रभु निश दिन देखो (२)
दया करी दिनदोषो (२) चितमां नव लेखो. जयदेव० ४
सकल विश्वमां व्याप्त प्रभु सत्ता भासे (२)
सुंदर नियमो निरखी (२) चित निस उल्लासे. जयदेव० ५
प्रेम पुष्पनी माळ प्रभुने शुभ चरणे (२)
अर्पण करि दृढ श्रद्धा (२) थकि रहिये शरणे. जयदेव० ६
दुराचारथी दूर प्रभु राखो अमने (२)
दिव्य पिता प्रभु करिये (२) विनति अमे तमने. जयदेव० ७
मळि मंडळि महाराज अभिवंदन करिये (२)
सदा पराभक्ति थकी (२) स्मरण हृदय धरिये. जयदेव० ८



अंक ६ ठो.

भुजंगी.

परब्रह्म विश्वेश व्यापी परेश, परमात्मा प्रभु सर्वसाक्षी महेश;
कळाती नथी शक्ति तारी अगाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १
तमारा थकी सृष्टि विस्तार पामी, तमे पूर्ण रूपे रह्याछो विरामी;
जगत्तंत्र सर्वे तमारेज हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. २
नियंता तमे नाथ सर्वत्र भासो, सहु स्थानमां पूर्णताथी प्रकाशो;
अखंडीत आनंदरूपी अबाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ३
किधा सृष्टिना वर्ग आश्चर्यकारी, नथी चालती त्यां मती तो अमारी;
अमारुं करो रक्षणो दीन रात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ४
खगोळे ग्रहो मंडलो सूर्य चंद्र, विराजी रह्युंछे रुडुं राशियंत्र;
रच्योछे तमे सर्व ए सत्य घाट, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ५
तमारुं अधिष्ठान छे शुद्ध सत्य, थयुंछे तमारा थकी सृष्टिकृत्य;
तमे छो स्वयंभू अनादी अजात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ६
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, सदा सर्वदा चित्तने शान्ति आपो;
विभू विश्वव्यापी विदारो विषाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ७
तमे शुद्धचैतन्यरूपे विराजो, सदा काल सर्वत्र सत्ताथि गाजो;
तमे सर्व जाणो प्रभू गुप्त वात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ८
अमारे खरो आशरो छे तमारो, कृपानाथ नित्ये करो उपकारो;
प्रभू सर्वना छो तमे मात तात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ९
सुणो प्रेमथी सर्वदा प्रार्थनाओ, करो पूर्ण भक्तोतणी कामनाओ;
प्रभूपादपद्मे सदा जोडि हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १०
अमारी स्विकारो सदा वंदनाओ, कृपाथी करो सर्व पापक्षमाओ;
सदा सन्मति प्रेरशो प्राणनाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ११

करे जे पराभक्तिथी प्रार्थनाओ, पुरी थाय तेनी सहू वाञ्छनाओ;
न पामे प्रभूधामथी ते निपात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १२
अमे नम्र थै वंदिये वारवार, विनंती अमारी करो अंगिकार;
अमे मानिये प्रेमथी धन्यवाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १३

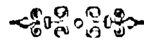


"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति" तमनाद्यनंतमेकं परमेश्वरं प्रणतोस्मि.

जे थकी आ सृष्टि उत्पन्न थईछे, जेणे करीने जीवेछे, अंते जेनी पासे जायछे, अने जेने पामेछे एवा अनादि अनंत एक परमेश्वरने हुं प्रणाम करूंछुं.

हे प्रभु! तमे आ वेला मारी पासे विराजमान छो, हुं अति नम्रभावथी तमारा समीप आवी प्रार्थना करूंछुं ते कृपा करीने श्रवण करो. तमे निरंजन निराकार सर्वव्यापी सर्वनियंता सर्व कर्मना साक्षी छो. तमे मारुं रक्षण करो, मने पापथी वेगळो राखीने मारुं मन पवित्र करो, मारा मनने शान्ति आपो. मनोविकार एवा तो प्रबल छे के मारी नबळाइने लीधे हुं तेने निःशेष काढी सकतो नथी; तेमज आसपासना मोह, लालच, अने विषयो एटला बधा छे के मारा पोताना श्रमथी तेओने हुं दूर करी सकतो नथी. माटे हे जगदीश्वर! हुं तमारे शरण छुं; तमारे आधीन छुं; हुं अल्पज्ञ अने अशक्त छुं ते तमे जाणोछो, माटे नीतिमार्गे चढवामां तमे मारा सहाय थाओ; असत्यता, क्रूरता, अंतरना तथा वहारनां पापकर्मथी दूर राखी मने सन्मार्ग बतावो, अने सन्मति आपो. हे भक्तवत्सल भगवान्! मारी सद्गति करो. हुं तमने पूज्य मानीने तमारी भक्ति करुं, सर्व

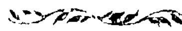
मनुष्य जाति उपर प्रीति राखुं, मारा वेरीओने पण क्षमा करुं, अने कर्तव्य धर्म बजावुं, एवी मने प्रेरणा करो; मारा अंतःकरणमां पवित्रता, दया, दृढता, अने श्रद्धानुं स्थापन करो, तमारी साची भक्ति तथा शुद्ध उपासना करुं अने सत्य निर्दोष धर्म पाळुं एवी मने सद्‌बुद्धि आपो. तथास्तु.



वसंततिलका,

हे देव ईश जगदीश जगन्निवास,
धारुं न आश्रय बिजो करुं तारि आश;
आधार सत्य हरिनो चितमां धरुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुं छुं० १
विश्वेश सर्व शुभ कर्म कदी न जाण्यां,
कुसो महान मनमां हरिं में न आण्यां;
भक्ती तमारिं करवा सुमति चहुंछुं, पाळो तमे० २
अत्युग्र पाप करवा मति मारि थाय,
ते ना जुवो प्रभु दयाथि रहो सहाय;
हुं भक्तपाळ भवतारकने भजुंछुं, पाळो तमे० ३
तारी कृपा जगधरा कदि जो न थाय,
मिथ्या प्रयास सघळा श्रम व्यर्थ जाय;
आधारहीन अतिदीन मलीन हुं छुं, पाळो तमे० ४
साक्षी तमे सकल कर्म विकर्म ईश,
पाळी निभाव करशो सम हुं नमीश;
शिक्षा भयोथि चितमां अति हुं डरुंछुं, पाळो तमे० ५
देहाकृती गति दिसे अति शुद्ध सारी,

अंतःस्थ वृत्ति चितनी अति दुर्विकारी;
एवो थई हुं प्रभु मन्निध संचरुंछुं, पाळो तमे० ६
हे भक्तवत्सल विभू भयथी उगारो,
पूरी कृपाज करि हाथ ग्रहो अमारो;
चित्त धरी फरिफरी प्रभु वीनवुंछुं, पाळो तमे० ७
अत्यंत पाप वळि दोष थया विशेष,
ते सर्व टाळि मति शुद्ध करो महेश;
संसार सागर थकी तरवा जपुंछुं, पाळो तमे० ८
जाणुं समस्त जगलोक सहायकारी,
तोए वृथा भ्रमित छे चितवृत्ति मारी;
गावा पुरा प्रभुगुणो असमर्थ हुं छुं, पाळो तमे० ९



गीति.

ज्यां नव भासे दिनमणि, निशमणि ग्रहगण हुताश नव भासे;
भासे ब्रह्म सदा त्यां, ते थकि त्रिभुवन प्रदीप्त अति भासे. १
जे थकि उद्भव जगनो, जेणे करिने प्रकाशने पामे;
जेमां जई विरामे, जे तणि करुणा दिसे सहू ठामे. २
जय जय जय जगदात्मा, जगदीश्वर जन्म रहित प्रभु जे छे;
जाणि जीवदयाओ, अतिशय संभाळ तेनि ते लेछे. ३
ते परब्रह्म परात्मा, पदपंकज हुं प्रणाम करि मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, निशादिन प्रभुभक्तिमां हुं अनुरागुं. ४
त्रिभुवनपति हुं तारो, भवसागरथी कृपा करी तारो;
शान्ति सदैव वधारो, प्रार्थन स्वत मारुं लक्षमां धारो. ५
अपराधी हुं थयोछुं, तुज विण नथि को शरण्य प्रभु.मारे;

आव्यो छुं तुज द्वारे, आश्रय छे तुज कृपातणो भारे. ६
भवपति भवसागरथी, तरवा नथि नाथ शक्ति तो मारी;
अल्पमती अविचारी, नव करि सकुं हुं स्तुति पुरी तारी. ७
गगने ग्रहगणरचना, रचिछे सुंदर अती चमत्कारी;
निश्चल नियमो बांधी, अतिशय सत्ता तमेज विस्तारी. ८
सर्वेश्वर सर्वात्मा, सच्चिद्घन स्वामि सन्मतीदाता;
धाता त्रिभुवनत्राता, सर्वांतर्यामि विश्वपितुमाता. ९
नमुं नमुं नमुं नमुं निसे, निर्मल मनथी नमुं तने देवा;
दिव्य पिता प्रभु तारी, इच्छा अनुसरि सदा-करुं सेवा. १०
अवलंबन छे तारुं, नव तरछोडो मने दयाधीश;
बालकशिशुनी कृतिथी, कदि नव चितमां चढावशो रीस. ११
प्रभुअस्तित्वप्रमाणो, जगरचनामां अति प्रबल भासे;
सुंदर नियमो निरखी, निश दिन मनवृत्ति मारि उल्लासे. १२
प्रभुना एज तमारी, दोषो देखी न रोष चित धारो;
अति करुणा विस्तारो, सेवक जनने कदी न वीसारो. १३
अर्भक हुं प्रभु तारो, यद्वा तद्वा वदुं हुं जे वाणी,
मानि कृपानिधि लेशो, सुतवात्सल्यस्वभाव चित आणी. १४
सप्रेमांतःकरणे, परमेश्वरने पदे-हुं अभिवंदुं;
शुभमंगलफलदाता, तुज शरणे रहि सदा हुं आनंदुं. १५
अपराधि हुं अपराधी, अतिशय तारो थयोछुं अपराधी;
वळग्यो बहु उपाधी, उत्तम भक्ती तमारि नव साधी. १६
उत्तम गती अमारी, निश्चय उत्तम कृती थकी थाय;
कोट्यावधि मुज दोषो, प्रभु तुज करुणाकटाक्ष थकि जाय; १७
पतितोद्धारक प्रभु छो, पावन करशो तमे मने नाथ;
श्रम नथि किंचित तमने, वर मागुंछुं-प्रसारिने हाथ. १८

मालिनी.

कर चरण वडे जे, में किधां कर्म खोटां,
श्रवण नयन चित्ते, जे किधां पाप मोटां;
अतिशय करुणाथी, द्यो क्षमा नाथ हुंने,
जय जय करुणाब्धे, हुं नमुं नित्य तुंने. १

उपेंद्रवज्रा.

शरीर वाणी मनथीज पापो, प्रभु किधां में अगण्यां अमापो;
क्षमा करीने चितमां शमावो, दया करीने दिनने निभावो. १

उपजाति.

तमे प्रभु सर्व पिताज माता, तमे सखा बंधु तमेज धाता,
विद्यामतीसद्गतिशांतिदाता, तमे प्रभु प्राणि समस्त त्राता. १

शार्दूलविक्रीडित,

साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिद्घना,
अंतर्यामि विदीत सर्व तमने जीवो तणी कामना;
दोषो छे अगणीत शी गति थशे अंत अमारी प्रभु,
राखीए करुणा दया तुज तणी आशा अमे तो बहु. १
माग्या छे प्रभु प्रार्थना स्तुति करी अर्थो अतीशे अमे,
ते मध्ये परिपूर्ण अर्थ करशो जे योग्य जाणो तमे;
त्राता छो प्रभु आप सर्व जिवना शर्णे सदा राखशो,
लोकोना उपयोगि कार्य करवा रूडी मती दाखशो. २

गायन.

पद.

प्रणमुं सदा परेश, पराभक्तिथी विशेष,
विमल अमारी मति, करशो दया करी;
सच्चिद्घन तमे, अति अल्प जीव अमे,
प्रभुपदमां अमारी, श्रद्धा छे खरेखरी. प्रणमुं०
तमे छो स्वयंप्रकाश, सघळे तमारो वास,
कृपा थाय तो जवाय, भवसिंधुथी तरी;
अखंड अंतर्याम, पूर्ण करो मनकाम,
करिये अमे प्रणाम, तमने फरी फरी. प्रणमुं०

पद.

करुणा करो रे कृपाल, मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु करुणा०
अद्भुत शक्तिथी सरजाव्युं, भूमिमंडल विशाल;
गगन मही ग्रहनक्षत्रोनी, शोभी रही मणिमाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० १
जीव संरक्षण अर्थे कीधां, अन्नौषधी रसाल;
ए रचनाना पूर्ण भेदनी, नव लागे कदि भाळ,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० २
अनुग्रह पूर्ण करी प्रभु ल्यो छो, सेवकजन संभाळ;
प्रेम थकी प्रभुपदपंकजे, वंदी वदुं हुं बाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० ३
पतितपावन परमपवित्र, भक्ततणा प्रतिपाल;
शांतसौम्यसात्विकगुणरूपे, दर्शन द्योनी दयाल,

मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० ४

पद.

एक अखंड अनंत अगोचर, ईश अद्वितिय उपासुंरे
अति अद्भुत जगनी रचनाने, निरखी निरखी उल्लासुंरे;
सत्य शुद्ध सचराचरव्यापक, ब्रह्मपदे हुं विलासुंरे.
एक अखंड० १

विषयवासना तुच्छ गणीने, चिद्घनने अध्यासुं रे;
रटन भजन प्रभुयशगुणकीर्तन, निश दिन हुं अभ्यासुंरे.
एक अखंड० २

में अपराध अगाध कीधाछे, अतिशय मने विमासुं रे;
क्षमा करो करुणासिंधु प्रभु, ए वचने विश्वासुं रे.
एक अखंड० ३

पराभक्तिथी प्रभु सेवुं तो, नरक थकी नव त्रासुं रे;
परात्परा परलोक विषे प्रभु, चरण समीप निवासुं रे.
एक अखंड० ४

पद.

प्रभुपदपंकजे सदा हुं पायं लागुंरे
निर्मल-मनथी स्मरण करीने,
पराभक्तिमां हुं वृत्ति अनुरागुंरे. प्रभुपद० १
आ भवमां प्रभु परमकृपानी,
नौकाविना कदी हुं नव तागुंरे. प्रभुपद० २
शरणागत दीन दास तमारो,
अपराध तणी क्षमा हुं मागुंरे. प्रभुपद० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय भगवन् देवा जय भगवन् देवा
भक्तिपराथि तमारी (२) करुं निश दिन सेवा. जयदेव०॥१॥
प्रभुनो पार अपार ऋषिमुनि नव पाम्या (२)
स्तुति गुण गाइ तमारी(२)मन थकि विश्राम्या. जयदेव०॥२॥
सर्व स्थले प्रभुवास सत्य करी जाणुं (२)
ए अति उत्तम विधिनुं (२) आवाहन मानुं. जयदेव०॥३॥
प्रेमपात्र परिपूर्ण भरुं श्रद्धा जलथी (२)
पाद्य अर्घ्य अर्चन विधि (२) करुं निर्मल मनथी. जयदेव०॥४॥
परमेश्वरप्रणिधान धरि नित्ये मनमां (२)
गंध पुष्प भक्तिनां (२) अर्पुं प्रभुपदमां. जयदेव०॥५॥
मंगलमय महाराज मंगल पद आपो (२)
कृपा करी मुज शीर्षे (२) हस्त वरद स्थापो. जयदेव०॥६॥
परमात्मानुं ध्यान हृदय विषे धारुं (२)
अति उपकार तमारा (२) कादि नव वीसारुं. जयदेव०॥७॥
दर्शन द्यो महाराज दिन वत्सल दाता (२)
विनय थकी विनवुंछुं (२) विश्वपितामाता. जयदेव०॥८॥



अंक ७ मो.

ललित.

परम ब्रह्मरे, प्राणतारक, प्रणत भक्तना, पापहारक;
चरणपंकजे, वंदिने सदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १

प्रभु अतर्क्य छो, तर्क शुं थशे, मति मनुष्यनी, तो भमी जशे,
नव करी सके, कोई कल्पना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. २
विदित छे तने, कृत्य तो बधुं, विनति शुं करुं, नाथने वधु,
तुज पदे धरी, शुद्ध भावना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ३
गणतरी नथी, दुष्कृती तणी, तदपि नाथनी, छे दया घणी,
नमि नमी करुं, नित्य वंदना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ४
विधि निषेधना, नीम तें किधा, नाहि कदापि में, लक्षमां लिधा,
सुमति सूचवो, सत्य चिद्घना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ५
प्रभु कृपा करी, रक्षणो करो, दिनजनस्थिती, लक्षमांधरो,
नथि शरण्य को, नाथ तुं विना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ६
परम देव हे, हे दयाघना, अनुग्रहो करोछो तमे सदा,
पुरि करो तमे, भक्तकामना, प्रभु हुं मागुंछुं पापनी क्षमा. ७
अति मलीनता, छे मती विषे, शुभ कृती थकी, शुद्ध तो थशे,
प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ८
मुज विराम छे, आपनो घणो, दुर करो दयानाथ, दुर्गुणो,
शुभ मनोरथो, धारुं हुं घणा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ९
प्रभु प्रणाम साष्टांग हुं करुं, हृदयमां रहुं, ध्यान हुं धरुं,
भवपति सुणो, स्वल्प प्रार्थना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १०

हे परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर ! तमे सत्य छो, पवित्र छो, ज्ञानमय छो, तमारो पार हुं पामर जीव पामी सकतो नथी. आ संसारमां सत्कर्म करवा तमे मने जन्म आप्यो छे, एम तमे आपेली विवेकबुद्धिवडे विचार करवाथी मने बोध थाय छे, पण हे मातपिता ! हुं तमारी इच्छा प्रमाणे चाल्यो नथी. मारां

पाछलां कृत्यनो विचार मारा मनमां करुंछुं, त्यारे मारा चित्तने अति क्लेश, खेद अने दुःख थायछे; मारी शी गति थशे ए विषे विचार करूंछुं तो हुं केवल भ्रमित तथा भयभीत थाउंछुं. घणी वेला तमने भूली जइने दुष्ट नठारां कर्मो में कर्यां छे; परोपकार, दया, क्षमा, तथा मारा भाइ मनुष्यजनने सुख थाय एवां कांइ पण पुण्यनां काम करवां जोइये तेवां में कर्यां नथी. उलटो तेओनो द्रोह करीने, तेमना उपर समानभाव राखवाने बदले, तेओने तुच्छ गण्या छे; तेओनुं द्रव्य लेवामां तथा तेओने दुःखी करवामां अनेक प्रकारना प्रपंच, कपट तथा छलभेद कर्या छे. मारां कुकर्म आ वेला संभारुं छुं तो मारा शरीरनां रोम उभां थाय छे, मने कंपारो छुटेछे. एटलोज मात्र विश्वास छे के, तमे पतितपावन, परमकृपालु अने क्षमावंत छो. ए विश्वासथी मारा मनने कांइक शान्ति थइ आशा थाय छे के, हुं मारां पापकर्मनो खरेखरो पश्चाताप करीने, हवेथी पाप नहि करुं एवी सत्य प्रतिज्ञा करीश तो, तमे मारां पापकर्मनी क्षमा आपशो. माटे हे परात्पर प्रभु ! तमने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करीने विनति करुंछुं के, तमे मारां पाछलां पातकोनी क्षमा आपी मारुं मन शुद्ध करो, मने सन्मार्ग बतावो, अने सदाकाल तमारी साची भक्ति तथा उपासना करुं अने तमारा उपकारोनुं स्मरण राखी तमारी इच्छा प्रमाणे चालुं, लोकहितार्थनां काम करुं, अने मारा आत्मानुं कल्याण थाय अने परलोकमां अक्षय सुख भोगवुं एवो हे करुणासिंधु प्रभु ! मने आशीर्वाद देजो. शांतिः शांतिः शांतिः

शिखरिणी.

परात्मा हे ब्रह्मन, भवजलधिउद्धारक प्रभु,
षडैश्वर्ये व्यापो, सकलदुखसंहारक विभु;
नमी साष्टांगे हुं, प्रणिपत करुंछुं प्रभुवरा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १
विना तारा कोई, विपतिभयत्राता अहिं नथी,
सदा सामुं जोई, अचळ सुख आपो जगपति;
पिता माता तारा, अनुग्रह दयामां नथि मणा, क्षमा पापो० २
जगद्वंद्या देवा, त्रिभुवन महीं शक्ति प्रसरी,
तमारा भक्तोने, कदि नव ज्रशो नाथ विसरी;
न जोशोरे दोषो, अवगुण अमारा अति घणा, क्षमा पापो. ३
कला तारी देवा, कदि नव कळाशे जिव थकी,
पराभक्ती सेवा, दिन निश करुं शुद्ध मनथी;
जगत्कर्ता मानुं, निरखि सघळी विश्वरचना, क्षमा पापो. ४
स्वयंभू छो स्वामी, नव कदि रहे गुप्त तमथी,
तने अंतर्यामी, विनति करियेरे विनयथी;
करो सन्मार्गोमां, प्रवृत मनवृत्ती प्रभु सदा, क्षमा पापो. ५
प्रभाते मध्याह्ने, वळि प्रभु दिनांतेज तमने;
सदा हुं एकांते, नमन करुंछुं निश्चल मने;
कृपासिंधू तारा, चरणथि न राखो दुर कदा. क्षमा पापो. ६
सहु प्राणी तारां, पृथिवि महि विस्तारथि रच्यां,
तथापी ते मध्ये, मनुप जनने तें करि दया;
दिधी छे सद्बुद्धी, सतत सतमार्गे विचरवा. क्षमा पापो. ७
निषिद्धाचारोमां, नवळुं मन मारुं नित भमे,

सदा सद्धर्मोमां, अति त्वरित वाळो चित तमे;
कुपुत्रो तो थाशे, नहि कुपित थाशे कदि पिता. क्षमा पापो. ८
क्रिया मारी खोटी, नव कदि चिते नाथ धरशो,
चुको कीधी मोटी, गणतरि करीने न गणशो;
निभावी ल्यो देवा, दिन गणि तमे एज प्रभुता, क्षमा पापो. ९
नथी शक्ती मारी, स्तुति गुण तमारा उचरवा,
अती हुं अज्ञानी, तदपिज करोछो बहु दया;
नथी किंचित् देवा, अम पतितउद्धार करवा, क्षमा पापो. १०
जगाधीशा तारो, अति सबल आधार अमने,
तमे ना वसिारो, चित थकि कदी भक्तजनने;
कृपादृष्टी राखी, भवभय निवारो विभुवरा, क्षमा पापो. ११
विनंती स्वीकारो, निजशरण राखी भवपति,
सदा सद्विद्यानी, अति विमल आपो प्रभु मति;
प्रभू अंते मुक्ती, समिप पदनी द्यो अविचला, क्षमा पापो. १२
शुभाशीर्वादो द्यो, कुशलसुखक्षेमार्थ अमने,
तथास्तू बोलीए, प्रति वचन उच्चारि तमने;
पुरो वाञ्छा मारी, सदय चित राखी प्रभु सदा, क्षमा पापो. १३



मालिनी.

प्रभुपद बहु मोटुं, शुद्ध चैतन्य तत्व,
सकल सबल व्याप्युं, नित्य तेनुं महत्व;
अजर अमर पोते, छो चिदानंद सर्व,
ऋषिमुनिजन सर्वे, छोडि दीधोज गर्व. १
अति गहन प्रभावे, विश्व विस्तार कीधो,

मनुष सरस जाणी, बुद्धिसंस्कार दीधो;
नमि नमि नमि निसे, भक्ति सन्मार्ग मागुं,
विनययुत थईने, नाथ हुं पाय लागुं. २

नहि नहि कदि जाणे, जीव तारा विचार,
नहि नहि कदि पामे, पार तारो अपार;
अकल सकल तारी, छे कलाओ अगाध,
शुभ गुणयुत वंदुं, सर्व लोकाधिनाथ. ३

करद्वय प्रसरीने, भक्तिमार्गे करीने,
अति विनय धरीने, प्रार्थना उच्चरीने;
हरख मन भरीने, हेतथी आदरीने,
नमुं नमुं नमुं निसे, ऊपकारो स्मरीने. ४

प्रभुपद प्रणमीने, याचना हुं करुंछुं,
स्मरण शुभ तमारुं, चित्तमां हुं धरुंछुं;
नबळी सघळी वाणी, ल्यो कृपाथी स्विकारी,
नहि नहि मति चाले, ए थकी पार मारी. ५

त्रिभुवन विभु व्यापी, विश्ववंद्या विधाता,
सकलकुशलदाता, सर्वना सत्य त्राता;
अतिशय सुखकारी, भक्ति आपो तमारी,
सतत शुभगुणोमां, वृत्ति राखो अमारी. ६

प्रभुपरमकृपाथी, मूक वाणी वदे छे,
प्रभुपरमकृपाथी, पंगु गीरे चढे छे;
प्रभुपरमकृपाथी, सर्व कल्याण थाय,
प्रभुपरमकृपाथी, मोक्षमार्गे जवाय. ७

त्रिभुवनपति तुने, वंदिये वारवार,

निश दिन प्रभु तारा, मानिये ऊपकार;
शरण नथिज बीजुं, सत्य आधार तारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथि तारो. ८

—∘—

उपेंद्रवज्रा.

तमे अमारा प्रभु मात तात, विदीत छे सर्व अमारि वात;
क्षमा करी किल्बिष सर्व कापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो. १
सुणी तमे प्रेम थकी अमारी, विनंति लेशो चितमां विचारी;
जणाय जे मागणि नाथ सारी, दयाथि लेशो प्रभु ते स्विकारी. २

—∘—

गायन.

पद.

भगवंत ब्रह्म प्रभु, परिपूर्ण व्याप्तविभु,
सबल तमारि शक्ति, त्रिभुवनमां जणाय;
अविचिंत्य इष्ट एक, किधी तें सृष्टि अनेक,
अकल अत्यद्भुत, तारि न कला कलाय. भगवंत०
प्रभु छो अनाथनाथ, अमे जोडी बेउ हाथ,
विनवीए विश्वनाथ, करुणा करो सदाय;
विश्वंभर विश्वपाल, दीनवत्सल दयाल,
जाणीने तमारां बाल, करो सर्वदा सहाय. भगवंत० १

पद.

परमात्मा परिपूर्ण प्रभु परमेश्वरने हुं प्रणाम करूं,

महच्छक्तिथी जग सरजाव्युं, भूमिजल फल पाषाण तरु;
ए अद्भुत कृति गहन गतिने, मंदमति हुं शुं विस्तरुं. १
परमात्मा०

जे बलथी आ विश्व प्रकाशे, जे थकि भासे सत्य खरुं;
ते विश्वंभर व्याप्त विभुनुं, ध्यान निरंतर चित्त धरुं. २
परमात्मा०

प्रेम थकी परब्रह्म तमारी, इच्छाओने अनुसरुं;
दया कृपा उपकार प्रभुना, चित्त थकी न कदी विसरुं. ३
परमात्मा०

साष्टांगे प्रभु चरण नमीने, विनति करी हुं कर प्रसरुं;
आ संसार विषे विश्वेश्वर, सत्कर्मोमां सदा हुं सरुं. ४
परमात्मा०

शरण रही परमेश तमारा, भक्तिपथे हुं सदा विचरुं;
विनय थकी जगवंद्य तमारुं, मंगल नाम मुखे उचरुं. ५
परमात्मा०

पद.

विनति करुं कर जोडी, त्रिभुवनत्रातारे, विनति करु करजोडी;
प्रभुमहिमागुणस्तुति गावाने, मंद अल्प मति मारी थोडी. विनति० १
करग्रहीने करुणानिधिप्रभुजने, कादि नव देशो प्रभु छोडी. विनति० २
पतितपावन गुण शुभ धारो, माटे प्रभु द्वार आवुं दोडी. विनति० ३
षड्विषयोनां अति दृढ बंधन, तत्क्षण नांखो तमे तोडी. विनति० ४

पद.

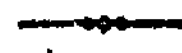
जगदीश्वरने हुं वंदुं प्रभु भव तारोरे, जगदीश्वरने हुं वंदुं;
शरणागतनुं रक्षण करशो, हे करुणाना सिंधु. जग० १

सप्रेमांतःकरण थकी हुं, नमुं प्रभु चरणारविंदु. जग० २
अवगुण उपर लक्ष न देशो दीनवत्सल दीनबंधु. जग० ३
पराभक्तिनी लेह मने लागी, प्रभुपदमां आनंदु. जग० ४



आरति.

जयदेव जयदेव जय विश्वाधारा जय विश्वाधारा
विश्वंभर अविकारा (२) विभु अपरंपारा जयदेव० १
सकल विश्वनानाथ सदा तमे भासो (२)
सर्व स्थलमां प्रभुनो (२) छे निश्चय वासो जयदेव० २
अंतर्ध्यान विधान अति प्रिय छे तमने (२)
अविहित निंद्य कृतिथी (२) दुर राखो अमने जयदेव० ३
सद्क्रिया सज्ज्ञान सत्संगो आपो (२)
अंतर्यामी अमारां (२) दुष्कर्मो कापो जयदेव० ४
करिये कोटि प्रणाम परमेश्वर चरणे (२)
कृपाकरी अमने प्रभु (२) राखो निज शरणे जयदेव० ५
प्रभु उपकार अपार स्मरण सदा करिये (२)
जनहितकारि क्रिया करि (२) भवसागर तरिये जयदेव० ६
प्रेमभक्तिथी ध्यान धरि प्रभु आराधे (२)
भवबाधाओ तेने (२) निश्चय नव बाधे जयदेव० ७
भक्त तणी संभाळ प्रभु निश दिन लेशो (२)
भव थकि पार उतारी (२) मुक्ति समिप देशो जयदेव० ८



अंक ८ मो.

भुजंगी.

कृपासागरा सर्व आनंददाता, प्रभु प्राणिना छो तमे सत्य त्राता;
स्तुती गूण गावा नियंता तमारी, नथी चालती कांइ शक्ती अमारी. १
कृपानाथ कीधा बहू ऊपकारो, कई वीधिये दाळिये पाड तारो;
सदा सर्वदा क्षेम आरोग्य आपो, अमारां महा संकटो दुःख कापो. २
जगत्तंत्र छे सर्व आधीन तारे, भरूंसो खरो ताहरो छे अमारे;
तमारी दयाथी रुडां कार्य थाय, महाविघ्न ने व्याधियो सर्व जाय. ३
तमे मात ने तात छो रे अमारा, अमे बालको पास आव्यां तमारां;
अतीशे किधा छे अमे नाथ दोषो, कृपादृष्टि राखी प्रभु ते न जोशो. ४
सदा ऊपकारो किधा ने करो छो, विनंती तमे सर्व लक्षे धरोछो;
तमारा विना को नथी रे समर्थ, तमारी कृपाथी थशे पूर्ण अर्थ. ५
अती निंद्य कर्मो प्रभू नित्य थाय, तमे जो गणो तो गती केम थाय;
तमे सर्व वस्तू थकी सत्य सारा, करो सर्व दोषो क्षमा नाथ मारा. ६
पराभक्तिथी वंदिये वारवार, प्रभु प्रार्थनाओ करो अंगिकार;
तमारुं किधुं ते न कोईथि थाय, प्रभू सर्व काले रहोछो सहाय. ७
नमस्कार स्वीकारि लेशो अमारा, स्मरीए सदा ऊपकारो तमारा;
विनंती अमारी तमे मानि लेशो, कृपादृष्टिथी आशिषो पूर्ण देशो. ८



हे परमपवित्र परमात्मा परमकृपालु परमेश्वर! हुं आ संसारना मोहपाशमां पडेलो छुं तेमांथी मुक्त करनार तुं समर्थ छुं; मारे साचो आश्रय मात्र तारो छे. तुं मारुं रक्षण करनार भयथी बचावनार छुं, ए मने मोटो आधार आशा तथा वि-

श्राम छे. कुटिलता क्रूरताथी भरेलो अने पापिष्ठ छुं ते तारा विना कोने शरण जाउं ? तारी दयानी छाया विना हुं क्यां जईने विश्राम पामुं ? हे दयासिंधु प्रभु ! हुं तारो छुं, तारी आगळ मारा मनना बधा उभरा कहाडीने अभिवंदनपूर्वक प्रार्थना करुंछुं के मारां पापकर्मोने बाळी नांखी मारुं मन पवित्र कर: सघळी दुर्वासना, सघळा पापसंकल्पो तथा सघळा दुर्विकारो मारा मनमांथी जडमूळथी काढी नांख. हे कारुण्यमूर्ति प्रभु ! हुं मारा मनमां विचार करुंछुं .तो तारी साथे मारे गंभीर, पवित्र, अने दीर्घ संबंध केटलो बधो छे, अने ते संबंध भूली जईने मैं केटलां बधां दुष्ट अने घोर कर्म कर्यां छे, मारां अधर्म, अनाचार केटलो छे. जो तारो दयालु स्वभाव न होत तो हुं कदी पण क्षमाने पात्र थात नहि. तारी शुभ प्रेरणा पाळवाने बंधायलो छतां घणी वेला ते उल्लंघी छे, तारा उपकारो भूली जईने कृतघ्नी थयोछुं, तें मने सारे मार्गे जवानी तथा भयथी बचवानी सूचना आप्या छतां तेमा उपर में लक्ष आप्यो नथी, तारी मारा उपर प्रीति छतां में तारा उपर प्रीतिभाव राख्यो नथी, मारी प्रीति संसारनां क्षणिक सुखो साथे अमर्यादे वळगी रही छे; आ बधो विचार करुंछुं तो तारा आगळ हुं एक शब्द पण उच्चार करवाने योग्य नथी. मारां दुरित कर्मथी लज्जा पामी धूजतो धूजतो तारी पासे उभो रह्यो छुं. अपराधी छुं. तुं मारुं रक्षण कर, मारो उद्धार कर. हुं पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने क्षमा मागुंछुं, ते कृपा करी मारी आ प्रार्थना स्वीकारीनें मने सद्विचार तथा सुमति आप; अपवित्र विचारथी मने वेगळो राख. खोटा संगथी मने छोडाव; धार्मिकपणाना खोटा ढोंग तथा दंभथी मने दूर राख;

मिथ्याभिमान तथा गर्व तथा प्रपंचथी मुक्त कर. जे क्रियाथी तारा उपरनी मारी प्रीति घटे एवी क्रियाथी मारुं मन निवृत्त कर. मारामां जे भूल खोड होय ते कहाडी नांखी नीति तथा सदाचारमां मारुं मन प्रवृत्त थाय एवी योजना कर; मारा मनमां खोटी वासना तथा खोटा संकल्प उत्पन्न थाय ते वेळा तारुं स्मरण करीने ते विचारोने मनमांथी कहाडी नाखवानी मने शक्ति आप; अध्यात्मिक सुख मळवानो हुं यत्न करुं तेमां तुं सहाय रहे. हे परात्पर भगवन् !

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेःस्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै परात्परायेति समर्पयामि ॥१॥

काया, वाणी, मन, इंद्रिय, बुद्धिवडे, आत्मावडे तथा प्रकृतिना स्वभाववडे जे जे कर्म करुंछुं ते हे परमेश्वर ! हुं तने अर्पण करुंछुं.

दयालु पिता ! सर्व रीते हुं तारो छुं; तुं मारुं सर्व काळ रक्षण कर.

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥२॥

तुं मारो मात पिता छुं, तुं मारो बंधु तथा तुं मारो मित्र छुं, मारी विद्या तथा द्रव्य तुं छुं; हे देव! तुं मारुं सर्वस्व छे.

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर ॥३॥

हुं अहर्निश सहस्रावधि अपराध करुंछुं; मने मारो दास जाणीने हे परमेश्वर ! मारा अपराध क्षमा कर. शांतिः शांतिः शांतिः

—०—

ललित.

जगतवंधरे, वंदिये तने, प्रणत प्राणियो, पामरो अमे;
प्रणिपतो प्रभू, लक्षमां धरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. १
सकल सिद्धिना, छो महोदधि, नव स्तुती थशे, रे यथाविधि;
अनुग्रहो दया, पूर्ण विस्तरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. २
अणचिंत्यां तमे, कार्य तो करो, विपति संकटो, भक्तनां हरो;
प्रभुप्रताप तो, छे खरेखरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ३
मुक जनो वदे, वाणि शुद्ध रे, गिरि उलंघशे, पंगु वृद्ध रे;
प्रभु कृपा तणो, सत्य आशरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ४
अनुग्रहो किधा, ने करो सदा, सघळि टाळशो, दुःख आपदा;
अति दया करीने ग्रहो करो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ५
नव गण्यो अमे, धर्मनो विधि, दुरित दुष्कृती, रे बहु किधी;
प्रभु बतावशो, पंथ पाधरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ६
पुत्र कुपूत तो, थाय यद्यपि, नव पिता करे, त्याग तो कदी;
नियम न्याय ए, राखशो खरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ७
प्रभु समर्थ छो, प्राणना पति, प्रणत भक्तने, द्यो रुडी मति;
पतितपावना, पाप संहरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ८
परमब्रह्म रे, प्रार्थना सुणो, अवगुणो कदी नाथ ना गणो;
प्रभु शुभाशिषो, नित्य उच्चरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. ९
प्रभु कृपा सुधा-दृष्टियो करो, मुज चिते सदा, सद्‌गुणो भरो;
घटित कामना, भक्तनी पुरो, करुण सागरा, रे कृपा करो. १०

सालिनी.

विश्वात्मा विश्वबंधा विधाता, सत्यानंता सच्चिदानंद कंदा;

श्रद्धा भक्ती ध्यान योगे हुं वंदुं, तारो मारे आशरो दीनबंधु. १
देवा तारुं छे अधिष्ठान सत्य, सर्ज्युं छे तें सृष्टिनुं सर्व कृत्य;
दीसे लीला सर्व आनंदकारी, विश्वे व्यापी पूर्ण शक्ती तमारी.२
शी शी शोभा सृष्टि केरी वखाणुं, सत्ता तारी सर्व ठामे हुं जाणुं;
जीवो सर्वे देहधारी विकारी, तेओथी शुं थाय स्तूति तमारी. ३
दोषो देखी ऊपकारो करोछो, प्राणीओने अन्न पानी भरोछो;
एवा स्वामी छो प्रभूरे कृपाळ, संभाळोछो भक्तने सर्वकाळ. ४
देवा तारी जो कृपादृष्टि थाशे, सत्कर्मोना शुद्ध मार्गे जवाशे;
आपो नित्ये दासने बुद्धि रूडी, कापो मारी वासना सर्व कूडी. ५
जाणो मारी गुप्त वातो सहूरे, लज्जा सर्वे हाथ तारे प्रभूरे;
ऊगारी ल्यो संकटोथी दयाळ, जाणी हुंने दास अल्पज्ञबाळ. ६
आव्यो तारे द्वार हुं दीन दास, काढो देवा ना मने तो निराश;
वारेवारे छे प्रभूने प्रणाम, पूरो भक्तोना तमे सर्व काम. ७
आपो आपो चित्तने शान्ति आपो, कापो कापो प्राणिनां कष्ट कापो;
धारो धारो प्रार्थना लक्ष धारो, तारो तारो विश्वसिंधूथि तारो. ८
कामक्रोधादीक बंधो न छूटे, नित्ये खोटां चित्त संकल्प ऊठे;
आ संसारे सत् क्रिया जो न थाय, निश्चे मुक्तीधाममां ना जवाय.९
अज्ञानी छुं सत्यमार्गे चढावो, दोषो मारा नाथ सर्वे शमावो;
मोहाब्धीथी पार हुंने जवानी, आपो देवा सत्य नौका कृपानी.१०
साष्टांगे हुं वंदिने वारवार, मानुं तारा सर्वदा ऊपकार;
कृत्यो मारां नाथ लक्षे न लेशो, सद्विद्या सज्ज्ञाननो बोध देशो.११
नीती नीमोनो सदा भंग थाय, तोए तारी प्रीति पूरी जणाय;
प्रेरो स्वामी सन्मतीओ सदाय, जेथी निश्चे मोक्षमार्गे जवाय. १२
सर्वात्माने शुं कहुंरे वधारे, सर्वे दोरी हाथ छे नाथ तारे;
प्राणीने छे सत्य आधार तारो, तेनां सर्वे संकटोने निवारो. १३

थाशे कीधा तु प्रभू जेम धारे, संकल्पो छे सत्य तारा बधारे;
तारुं धार्युं सर्वदा सिद्ध थाय, मिथ्या यत्नो जीवनां सर्व जाय. १४
लज्जा राखो दास हुं छुं तमारो, व्याधी कष्टो सर्व मारां निवारो;
वंदुं नित्ये नाथ बे हाथ जोडी, कामादीना नांखशो पाश तोडी. १५
सत्कर्मोथी चित्तनी शुद्धि थाय, भक्तिद्वारे मोक्षधामे जवाय;
ढोंगी वेशो वासना सर्व टाळी, अंतःशुद्धी छे तने नाथ व्हाली. १६
नीती मार्गे चालतां कष्ट थाय, तोए ते सन्मार्गने ना मुकाय;
इच्छा तारी मानि आधीन रे'वुं, माथे आवे कष्ट ते सर्व से'वुं. १७
एवी बुद्धी प्रेरशो प्राणनाथ, वाञ्छा पूरो दासनी मात तात;
अंते देवा तुं विना को नथी रे, त्राता मारो हे दयाना निधीरे. १८
रूडां कार्यो लोकनां जो न थाय, मिथ्या फेरो जन्मनो सर्व जाय;
आ विज्ञप्ती स्वल्प मारी स्विकारो, सत्कर्मोना सूचवी सद्विचारो. १९
आपत्काले धीरता नाथ आपो, भक्ती सेवामां प्रभू वृत्ति थापो;
द्रव्यादीनो लाभ संपूर्ण थाय, त्यारे पूरी तो परीक्षा जणाय. २०
विश्वस्वामी जो इशोरे सहाय, वृत्ती मारी गर्वथी ना भमाय;
सन्मित्रो आ सृष्टिमां जे अमारा, तेओने द्यो सद्गुणो बोध सारा. २१
शत्रूओनी दुर्मतीने सुधारो, सर्वे स्थाने शांतियोने वधारो;
जीवोनुं जे वस्तुथी थाय हीत, अंतर्यामी आपने छे विदीत. २२
सर्वे प्राणीनी स्थिती हाथ तारे, तारो चित्ते सत्य विश्वास धारे;
सृष्टिसृष्टा सत्य छो ते प्रमाणुं, सर्वे कर्मोना प्रभू साक्षि जाणुं. २३
मानी लेशो प्रार्थना नम्र मारी, आशा राखुं नाथ पूरी तमारी;
आ संसारे चित्तनी शांति पामुं, अंते तारा क्षेमधामे विरामुं. २४



ललित.

प्रभुपदे अम, पाय लागिये, दुरित कृत्यनी, माफि मागिये;

पतितपावना, प्रेम लावशो, अनिति दुष्कृतीथी बचावशो. १
शुभ गुणो सदा, नाथ आपशो, मनमलीनता, कापि नांखशो;
सुणि तमे प्रभू, नम्र वीनति, शरण राखशो, रे दयानिधि. २
प्रभु मनोरथो, मागिये अमे, घटित जे हशे, पूरशो तमे;
नव विसारशो, दासने कदा· सुनिति सन्मती, दाखशो सदा. ३

गायन.

पद.

जय जगवंद्य जय, जय भगवंत जय,
जय परब्रह्म जय, जगदीश धन्य छो;
अखंड अव्यक्त शुद्ध, चिद्घन नित्य मुक्त,
असंग अचिंत्य सत्य, अतर्क्य अनन्य छो. जय जगवंद्य०
प्रणमीए वारवार, मानी बहु उपकार,
कृपाथी करो उद्धार, वरिष्ठ वरेण्य छो;
शक्ति छे अति प्रबल, मति करो निर्मल,
आपो पद अविचल, सकलशरण्य छो. जय जगवंद्य० १

पद.

जय जय जगवंद्य दयासिंधु ऊपकारी.
मंगलमयमूर्ति महामंगलशुभकारी,
मंगलप्रद पूर्ण प्रभू मंगलगुणधारी. जय जय जगवंद्य० १
सृष्टिमां दिसे तमारी सर्व शक्ति भारी,
भक्तनी विनंति विश्वनाथ ल्यो स्वीकारी· जय जय जगवंद्य० २
पापकर्म सर्व कृपानाथ द्यो विसारी,

शरण राखिने दयाल द्यो मति सुधारी. जय जय जगवंद्य० ३
प्रणामि अमे पाप क्षमा मागिये तमारी,
आत्म उन्नति करो कृपाघना अमारी. जय जय जगवंद्य० ४

पद.

विनति प्रभु सांभळो मारी, दया धारी, विनति०
कर जोडी हुं प्रणाम करुंछुं, मागुं क्षमाओ तमारी;
आ भवमां सुख सन्मति आपो, अंते मुको न विसारी,
प्रभू बहु छो उपकारी. विनति० १
दया करी मानुष देह दीधो, प्रेरो मति शुद्ध सारी;
कर्तव्य कर्म करावो विश्वमां, रहो सहाये अमारी,
प्रार्थना चित्तमां धारी. विनति० २
क्षणे क्षणे उपकार करोछो, संकट सर्व निवारी;
प्रत्युपकार कंई पेरे वाळुं, अल्प हुं जीव विकारी,
प्रभु तारी सत्ता भारी. विनति० ३
षड्गुणयुतभगवंत तमे छो, भक्त तणा भयहारी;
भक्ति थकी निश्चय हुं पामुं, प्रभुपद मंगलकारी,
लज्जा तमे राखो मारी. विनति० ४
चित्त करुं चरणार्पण नित्ये, प्रभु शुभ नाम उचारी;
आ स्वल्प वाक्यथी विनति किधी जे, ते तमे लेशो स्वीकारी,
क्षति मारी सर्व विचारी. विनति० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगत्राता जय जय जगत्राता
सात्विक शुभ गुण भ्राता (२) दिनवत्सल दाता जयदेव० १

स्थिरचरव्याप्त महेश मंगलशुभकारी (२)
भवपति भक्त जनोना (२) भयसंकटहारी जयदेव० २
सृष्टवस्तुवत्‌नाथ नथि प्रतिमा तारी (२)
चिन्मय मंगल अविचल (२) अनुपम अविकारी जयदेव० ३
शिर साष्टांग प्रणाम करिये प्रभु तमने (२)
भव थकि पार उतारो (२) करुणा करि अमने जयदेव० ४
पतितोद्धारक नाथ पापक्षमा करशो (२)
अल्प जिवोना दोषो (२) नव लक्षे धरशो जयदेव० ५
सर्वोत्तम सर्वेश सर्वांतर्यामी (२)
सत्य सदाशिव स्वामी (२) निर्मल निष्कामी जयदेव० ६
अंतर्ध्यानथि नाथ आराधन करिये (२)
तुज करूणादृष्टि थकी (२) भवसागर तरिये जयदेव० ७
प्रभु द्यो आशीर्वाद सद्गुण आचरिये (२)
अति उपकार तमारा (२) नित्य अमे स्मरिये जयदेव० ८



अंक ९ मो.



ललित.

प्रभु परात्परा, प्राणना पति, प्रणमिने करुं नम्र वीनतिः
हृदय सत्य छो, सन्मतिप्रदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. १
अति अशक्त छुं भक्ति शुं करूं, मन मलीनताथी बहु भर्युं;
विभु विचारशो, दासदीनता, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. २
विकट घाटि छे, विश्वनाथरे, तुज विना ग्रहे, कोण हाथरे;

नव पडे मने, दुःख आपदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ३
जिव करे सदा, कर्म निंद्यरे, नव जुवो तमे, विश्ववंद्यरे;
विभु तमारि छे, ए वरिष्ठता, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ४
दिनजनास्थिती, लक्ष धारशो, भव थकी मने, नाथ तारशो;
जिव समस्तने, भक्तिमुक्तिदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ५
विनति हुं करुं-छुं यथामति, कुशलता करो, रे कृपानिधि;
मुज बतावशो, सन्मती सदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ६
हृदयमां मने, नाथ राखशो, नियम नीतिना, नित्य दाखशो;
दुर करो बधी, चित्तनी व्यथा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ७
चरणपंकजे, पाय लागुंछुं, दुरित कर्मनी, क्षांति मागुंछुं;
पतितपावना, पूर्णकामदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ८
परम प्रेमथी, प्रार्थना करुं, हृदयमां दया-सिंधुने स्मरुं;
नव विसारशो, दासने कदा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. ९
प्रभु तने महा, पूज्य जाणुंछुं, तुज अनुग्रहो, नित्य मानुंछुं;
नमुं नमुं नमुं छुं सहस्रधा, प्रभु करो कृपा-दृष्टि सर्वदा. १०

—॰—

हे विश्वेश्वर विश्वव्यापी शान्तरूप, सर्वनो प्रकाश करनार, सत्तावान, स्वतंत्र, सकल सुखना आपनार, सर्वना साक्षी, सत्य, पूर्ण, अजन्म, अमर, परब्रह्म परमेश्वर! हुं तने प्रेमथी प्रणाम करी मागुंछुं के, आ संसारमां मारो बधो काळ तारी सारी भक्ति तथा सेवामां काढुं एवी मने सुमति आप. तारा उपर प्रीति रखाव.ताराथी विमुख थवाय, तारा उपरनी प्रीति उठी जाय एवी कांइ पण वस्तु आ संसारमां मने आपीश नहि. मने सर्व वाते तारो पोतानो करी राख, के हुं निरंतर तारुंज अवलंबन राखीने रहुं. सुखमां तथा दुःखमां.

सारी अथवा दुर्बल अवस्थामां, नीरोगी अथवा रोगी होउं ते समयमां, तथा मारां गृहकृत्य तथा लौकिक व्यवहारनां काममां, ए सघळा प्रसंगमां तने सन्निध जाणीने तथा तारे आश्रये रहीने तने प्रिय लागे एवी वर्तणुक करुं, गमे ते ठेकाणे होउं, तथा गमे तेवो प्रसंग मारे माथे आवी पडे, परंतु हुं तने न छोडतां तारे निर्माण करेले नीतिने रस्ते चालुं अने तारा विना कोईनुं अवलंबन करुं नहि. तुं चिदात्मरूप, सृष्ट वस्तुथी भिन्न, तथा सर्वांतर्यामी एक अनादि अनंत ईश्वर छुं, एम मने तारी प्रेरणाथी समजायुं छे, माटे जे अधम भक्ति तथा नीची उपासनाथी तारा उपरना पूज्यभावमां अवरोध थाय, जेथी तारो महिमा घटे, तथा तारा उपरनी मारी प्रीति ओछी थाय, जेथी मारा मनोविकार तृप्त करवानी वासना वधे, तथा संसारना तुच्छ विषयो भोगववानी वृत्ति थाय, एवी उतरती जातिनां अर्चन विधानो हुं कदी करुं नहि, अने सदाकाल तारी सर्वोत्कृष्ट शुद्ध प्रेमभक्ति उपर लक्ष रहे एवो तुं मने उपदेश तथा प्रेरणा करतो रहेजे. हुं तने भूली न जाउं अने सदा एज स्मरण राखुं के आ संसारमां रहेवानो मारो मुख्य हेतु तारी कृपा तथा तारो प्रेम संपादन करवानो छे. लोक व्यवहारना काममां पण मारो खरो लक्ष तारा उपर राखीने व्यवहार चलावुं; मारा मनमां एवा स्वार्थलोभ के लालच उत्पन्न थाय के तेना उपर आसक्त थइने तने भूली जाउं, तो एवी वासनाओनो मारा मनमांथी समूल नाश करजे. सांसारिक भोग तथा सुख उपर अति आसक्ति न राखतां यथाघटित प्रीति राखीने तारा उपर पूर्ण अने साचो प्रेमभाव तथा दृढविश्वास रहे अने तारा सहवास विना बीजी कांई पण इच्छा न थाय एवी मारी वृत्ति

कर. हे दयालु पिता! हुं तने नम्रतापूर्वक विनति करुंछुं के आ संसारमां रहुं त्यांसुधी हुं तारी पराभक्तिमां तत्पर रहीने मरण समये तारा उपर लक्ष राखीने, शांत तथा आनंदमय चित्तथी मारो आत्मा तने अर्पण करुं एवी वृत्ति राखवामां तुं मने सामर्थ्य आप.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

वसंततिलका.

हे विश्वनाथ विभु सत्य समर्थ देव,
सर्वत्रव्यापि करुं नित्य तमारी सेव;
सर्वे स्थले वशि रह्या प्रभु आत्मराम,
साष्टांग नाथ तमने करु हुं प्रणाम. १
सर्वेश तारि करुणाथकि कार्य थाय,
निःशेष दुष्कृति जिवो तणि सर्व जाय;
देखुं दयानिधि दया सघळेज ठाम, साष्टांग नाथ० २
पादारविंद प्रभुना नमु जोडि हाथ,
कृत्यो महान करवा मति मागु नाथ;
राखुं निरंतर चित्ते प्रभु तारि हाम, साष्टांग नाथ० ३
जोता नथी जिवतणा अपराध पापो,
वात्सल्यभावथकि पोषण सर्व आपो;
माटे तमारुं करुणानिधि सत्य नाम, साष्टांग नाथ० ४
आस्तिक्यभावथि नमुं तमने त्रिकाल,
तारो त्रिलोकपति प्रेम थकी कृपाल;
पामुं परात्परपदे प्रभु हुं विराम, साष्टांग नाथ० ५

अज्ञानपाश करुणा करि कापि नांखो,
निसे प्रभु तम पदे मनवृत्ति राखो;
भक्तोनुं पालन करो प्रभु सर्वयाम, साष्टांग नाथ० ६
संसारमां सकल मंगल कार्य थाय,
संकष्ट विघ्न भय दुःख समस्त जाय;
अंते मळे समिपमुक्ति तणुंज धाम, साष्टांग नाथ० ७
विश्वेश छो सकल विश्व तणा विधाता,
त्राता तमे सकलमंगलशान्तिदाता;
सर्वे तमारि करुणा थकि थाय काम, साष्टांग नाथ० ८

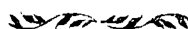
झूलणा छंद.

अखिल ब्रह्मांडना नाथने नित्य हुं
प्रेमभक्ति थकी पाय लागुं,
दुर्मती टाळि सन्मति सदा आपशो
एज वरदान भगवान मागुं;
विषय मोहाब्धिमां मग्न अतिशय हुं छुं
अंतमां शी गती नाथ थाशे,
प्रभुकृपा जो हशे तोज भवबंधथी
मुक्त थइ मुक्तिमार्गे जवाशे. १
निंद्य निष्ठुर किधां कृत्य में अति घणां
नाथ करवां क्षमा हाथ तारे,
दीनवत्सल दयानीधि निज दासनां
विपति भय संकटो तुं निवारे;
शरण छुं चरण मत प्रणमि प्रणिपत करुं

स्मरण हृदये धरुं नि[illegible]तारुं,
विनति चित्ते धरो [illegible]प प्रभु परहरो
प्रेमथी सांभळो स्त[illegible] मारुं. २
सत्य सच्चिद्घना साक्षि सर्वोत्तमा
सर्वदा क्षेमकल्याणदाता,
परम करुणा थकी प्राणि मात्रो तणा
चित्तने द्यो तमे शान्ति शाता;
अल्पमति छुं प्रभु स्तवन ते शुं करुं
नम्र भावे तने नित्य वंदुं,
नीति सन्मार्गमां बुद्धि मेरी सदा
सद्गती आपशो न्यायसिंधु. ३
धन्य तारी गती धन्य तारी कृती
शुकसनकादिको को न पाम्या,
ऋषिमुनी वेद मंत्रे स्तुतीओ करी
नेति अंते वदीने विराम्या;
प्रभु करो अनुग्रहो अवगुणो नव लहो
भक्तनो कर ग्रहो रे कृपाला,
धर्म धारण किधो निज प्रजा पाळवा
राखुं विश्वास हुं विश्वपाला. ४
सृष्ट वस्तू थकी भिन्न प्रभु छो तमे
शुद्ध चैतन्यरूपे विराजो,
ज्ञान इच्छा क्रिया सबल शक्ती थकी
विश्वमां पूर्ण प्रभुताथि गाजो;
भवपति प्रभु तने विस्तरी शुं कहुं
कृति नथी तुं थकी कांइ छानी,

विनय भावे तने विनती हुं जे करुं
सर्व लेशो तमे नाथ मानी. ५
द्वार तारे प्रभु आवि विनती करुं
नव कदी चरणथी विमुख करशो,
पतितपावन प्रभु प्रार्थनाओ सुणी
वरद शुभ हस्त मुज शीष धरशो;
योग्य नथि तदपि प्रतिपालना प्रभु करो
प्रेम राखो सदा दास जाणी,
ए कृपानाथ उपकार अति ताहरो
मानि नित्ये वदुं नम्र वाणी. ६
राखुं अभिलाष अविनाश पद पामवा
योग्यता आपवी हाथ तारे,
सर्व अपराध करशो क्षमा दासना
सत्य विश्वास आधार मारे;
नमि नमी नित्य प्रभु प्रार्थना हुं करुं
चित्तमां प्रेम लावी स्विकारो,
सिद्धि आपो सदा शुद्ध उद्योगमां
विघ्न आपत्ति सर्व निवारो. ७
दासना दोष पर रोष नव लावशो
भक्तनी सर्व छे लाज तुंने,
कामना मन तणी पूर्ण करिने सदा
शरण राखो महाराज मूने;
नित्य साष्टांग नमि नाथ तमने कहुं
राखि संपूर्ण प्रभु प्रेमभक्ति,
त्रिविध पुरुषार्थ संपूर्ण हुं भोगवी

पामुं तारी प्रभू समिपमुक्ति.



भुजंगी.

महाराज आनंददाता दयाल, दयादृष्टि छे आपनी सर्व काल;
क्षमा नाथ सर्वे करो पापकर्म, सदा आपशो नीतिना शुद्ध धर्म. १
सदा ऊपकारो तमारा जणाय, अमो जीवने नित्य संतोप थाय;
भरूंमो तमारो खरो छे अमारे, तमारा विना भक्तने कोण तारे. २
मनोर्थो अमे मागिये प्रार्थनामां, तमे नाथ जाणो किया योग्य तेमां;
कृपानाथ छो सर्व वाते समर्थ, करो पूर्ण स्वामी रूडा सर्व अर्थ. ३

गायन.

पद.

तत् सत् ब्रह्मपद, प्रणमुं हुं नित्य प्रत,
पूर्ण करो अर्थ सत्, करुणा करी कृपाल;
अखिल ब्रह्मांड विषे, प्रभुता तमारी दिसे,
वर्णन न पूर्ण थशे, अल्पमति छुं हुं बाल. ततसत्०
अपराध छे अगाध, मुक्ति केम थाशे नाथ,
क्षमा मागुं मात तात, दीनजनप्रतिपाल;
चित्त शान्ति आपो आप, सुणी दासनो विलाप,
उपकार छे अमाप, स्मरुं ते हुं सर्व काल. ततसत्० १

पद.

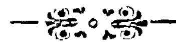
अपराध क्षमा करो मारो, हुं दास तमारो, अपराध०
अनंत कोटि ब्रह्मांड रचीने, सत्ता थकी विस्तारो;

सर्व स्थले करुणाओ देखुं, मानुं बहु उपकारो,
निराधारना आधारो. अपराध० १
सद्धर्मनीतिए विचरवा, आप्यो मनुष देह सारो;
दयाघना दयादृष्टि करीने, ज्ञान विवेक वधारो,
कदी चित्तथी न विसारो. अपराध० २
हुं अपराध अगाध करुंछुं, संकल्प दुष्ट विचारो;
निग्रहशक्ति कृपा करी आपो, मंद मतिने सुधारो,
प्रबल छे मनना विकारो. अपराध० ३
श्रवण करी विनति प्रभु मारी, आशीर्वचन उच्चारो;
दीनदयाल कृपा करी मारां, किल्बिष सर्व निवारो,
प्रभु विना एके न आरो. अपराध० ४
स्वयंभू जगकर्त्ता तमे छो, जड तुल्य नथी आकारो;
वेदशास्त्र पुराणो प्रमाणे, सत्य कहे सूत्रकारो,
प्रभु सृष्ट वस्तुथी न्यारो. अपराध० ५
अवगुण सामुं कदी नव जुवो, दुःख दारिद्र्य विदारो;
संकट समये सहाय करीने, सांनिध आवी पधारो,
लज्जा प्रभु मारी वधारो. अपराध० ६
तर्क करी ऋषि मुनियो विराम्या, पाम्या तमारा न पारो;
अल्प जीव हुं स्तुति शुं गाउं, भवसिंधुथी उतारो,
सफल करी जन्म अमारो. अपराध० ७
हे ईश्वर जगदीश्वर स्वामी, शक्ति सबल बहु धारो;
शरण थई चरणे हुं वंदुं, दीन जाणी उद्धारो,
एज छे धर्म तमारो. अपराध० ८

पद.

निर्गुना नाथरे तने नामि नमि करिये प्रणाम.

प्रभुता तारी त्रिभुवनमां व्यापी,
विभु तारो अमने सत्य विराम. नियंता नाथरे० १
विश्व तणो उद्भव जे थकी छे,
जेमां सर्व वस्तु पामे परिणाम. नियंता नाथरे० २
जीवप्रतिपालन नित्य करो छो,
प्रभु सच्चिद्घन अंतर्याम. नियंता नाथरे० ३
ए शुभ गुण उत्तम महिमानी,
स्तुति करे, ऋग् यजु अथर्व साम. नियंता नाथरे० ४
दुरित कृति नव लक्षमां लेशो,
धारो तमे करुणासागर नाम. नियंता नाथरे० ५
शरणागत सेवक जन तारा,
तारी खरी चित्तमां राखिये हाम. नियंता नाथरे० ६
श्रवण करी प्रणिपत अमारी,
प्रभु परिपूर्ण करो शुभ काम. नियंता नाथरे० ७
क्षमा करी अपराध अमारा,
आपो प्रभु सन्निध मंगल धाम. नियंता नाथरे० ८



आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगराया जय जय जगराया
अति अद्भुत अकलित छे (२) प्रभु तारी माया जयदेव० १
सकल वस्तुना नाथ छो सर्वे स्रष्टा (२)
जिव तणि सर्व कृतीना (२) छो निश्चय द्रष्टा जयदेव० २
मुज जिवतर छे नाथ हाथ वधुं तारे (२)
तुजविण कोइ नथी प्रभु (२) अन्य शरण मारे जयदेव० ३

कर जोडी परमेश पाय तने लागुं (२)
तुज सन्निध आवी प्रभु (२) पाप क्षमा मागुं जयदेव० ४
दया धर्मनुं मूल ए निश्चय मानुं (२)
सदा सुधर्माचरणे (२) राह सखे चालुं जयदेव० ५
ए सन्मति महाराज मुज दिनने आपो (२)
शुभ कीर्तन कारि प्रभुनां (२) जपुं मंगल जापो जयदेव० ६
दिनजनना प्रतिपाल दुःख सकल हरशो (२)
करुणाकर करुणा कारि (२) कर मारो धरशो जयदेव० ७
कारि प्रभुने हुं प्रणाम ध्यान धरुं चित्ते (२)
मंगलकार्य करावो (२) मुज हसने नित्ये जयदेव० ८



अंक १० मो.



भुजंगी.

नमुं हुं परब्रह्म सच्चित्स्वरूप, नमुं हुं सदा साक्षि आनंदरूप;
नमुं हुं प्रभु प्राणदाता दयाल, नमुं हुं तने सर्वदा सर्व काल. १
शरीरादिना धर्मने आप जाणो, नियंता तमे सर्वसाक्षी प्रमाणो;
महत्तत्व चिद्रूप छो विश्वकर्त्ता, नमुं हुं नमुं हुं नमुं सृष्टिभर्त्ता. २
सहू इंद्रियोना गुणोने जुवो छो, अधिष्ठाननुं ज्ञान बुद्धीथि थ्यो छो;
तमे एक अध्यक्ष छो विश्वनाथ, अती नम्र भावे नमुं जोडी हाथ. ३
सुषुप्ती समे इंद्रियो लीन थाय, तमे ते प्रसंगे रहो छो सहाय;
सहू ठाम ठामे कृपा देखुं तारी, पुरा गूण गावा नथी शक्ति मारी. ४
जगत्सृष्टिमां सर्व सत्ता तमारी, कृती सर्व देखुं हुं आश्चर्यकारी;

अमे पामरो प्राणियो दुर्विकारी, स्तुती शुं करे मंद बुद्धी अमारी. ५
रवींदुग्रहोंना तमे छोज कर्त्ता, महत्तत्वने आप पोतेज धर्त्ता;
अती आदरे मानवी तारि शिक्षा, नही मानशे पामशे दंड दीक्षा. ६
श्रुती वेदथी कोइ पाम्यी न पार, महीमा तमारो प्रभू छे अपार;
मती मंद शुं गूण गाउं तमारा, करो हे कृपालु क्षमा दोष मारा. ७
गुरू छो प्रभू छो तमे स्वामि मारा, स्मरुं हुं सदा ऊपकारो तमारा;
तमे सर्वविद्यासुबुद्धिप्रदाता, तमे छो प्रभू सर्वना सत्य त्राता. ८
अति स्वल्प आ प्रार्थना छे अमारी, कृपाथी तमे नाथ लेशो स्विकारी;
प्रभु प्रेमथि भक्तिनुं ज्ञान आपो, दया दृष्टिथी दासनुं दुःख कापो. ९



हे षडैश्वर्यगुणसंपन्न भगवान्! हुं सानंदांतःकरणथी तारी स्तुति करुंछुं; तारी अपार दयाना गुणानुवाद गाउंछुं. तुं मारुं प्रतिपालन करनार तथा सकल सुखनो आपनार छुं. तुं मने सन्मार्ग बतावनार, भयसंकटथी बचावनार, तथा परलोकमां मारा आत्मानुं कल्याण करनार छुं. तारी सत्ताथी सूर्य प्रकाश पामेछे, तारी सत्ताथी चंद्रमा शीतलताथी प्राणियोनां शरीर तथा मनने शान्ति आपेछे; तारा नियम प्रमाणे असंख्य तारा तथा ग्रहगणो आकाशमां प्रकाशी रह्या छे. आ भूमंडल जोतां पृथ्वी अति सुंदर वनस्पति, औषधि, अन्न, फूलफलादि सुखकारक

१ भगवान् एवुं परमेश्वरने विशेषण आप्युंछे. "भग" एटले गुण, षट् (छ)गुण ईश्वरमां रहेला छे माटे "षडैश्वर्य गुणसंपन्न" एवुं विशेषण भगवाननुं छे. छ गुणना नाम ॥ [१]ऐश्वर्यस्य समग्रस्य [२]धर्मस्य [३]यशसः [४]श्रियः। [५]वैराग्यस्यत्थ [६]मोक्षस्य षण्णां भगइतीरणा; ए छ गुण भगवान् शब्दना व्याख्या विष्णुसहस्त्र नामना भाष्यमां श्रीमन् शंकराचार्ये करी छे. अथवा बीजी भग शब्दनी व्याख्या पुराणमां करी छे ते ए छे के, [१]उत्पत्तिं [२]प्रलयंचैव [३]भूतानामा [४]गतिंगतिं [५]वेत्तिविद्या [६]मविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

वस्तुओथी भरपूर छे; ए सर्व तें अमारा सुखने माटे सरजावेलां छे; तुं महा समर्थ प्रभु आ भूगोल तथा बीजां अनेक ब्रह्मांडो धारण करी रह्योछे; तुं मने अन्न वस्त्र आपी मारुं पालनपोषण करेछे, सुख भोगववाने अनेक प्रकारना पदार्थो आपेछे. प्रत्येक श्वास लेतां वेला तारा अनुग्रह तथा दयानो मने अनुभव थाय छे; ज्यां ज्यां दृष्टि करुंछुं त्यां त्यां तारी दया देखाय छे; प्रति क्षणे तारुं सारापणुं तथा दयालुपणुं जोई सानंदाश्चर्य पामुंछुं.

जगत्नी रचना तथा तेनी नियमपूर्वक योजना तारा उपकारनुं स्मरण करावे छे तथा उत्साहपूर्वक तारी स्तुति करावे छे. हे विश्वंभर विश्वनाथ! तुं सर्व चैतन्योनुं चैतन्य छे; तुं मारुं संरक्षण करे छे; मारुं सर्व उपजीवन तारे हाथ छे. हुं क्षुधातुर थाउंछुं त्यारे तुं मने अन्नपान आपीने विश्रांति आपे छे, विपत्ति तथा दुःख मारे माथे पडेछे त्यारे मारां नेत्रमां आंसु भरेलां जोई जेम पिता पुत्रस्नेहथी पोतानां बालकोनुं आश्वासन करेछे ते प्रमाणे तुं मारां नेत्रनां आंसु तारा दयालु हाथथी लोहीने मारा मननुं समाधान करे छे; ज्यारे कोई वेला निराश थाउंछुं त्यारे तुं मने आशा तथा धैर्य आपे छे; आ संसारना लोक स्वार्थ अथवा द्वेषथी मारो त्याग करे छे त्यारे तुं मारी पासे आवीने मने सहाय थई मारा चित्तने आनंद आपे छे. मारी वृत्ति पापकर्म करवानी थाय छे त्यारे तुं मारा मनने चेतावे छे के आ कुकर्म न करवुं. आ तारी केटली बधी दया छे! एनो हुं विचार करुंछुं तो तारा उपकार कही बताववानी मारामां कांई पण शक्ति नथी. हुं किया शब्दोथी ए उपकार कही बतावुं? हुं तने भूली जाउंछुं अने तने खोळतो नथी तोपण तुं मारी संभाळ लेवानुं भूली जतो नथी. हुं दोष भरेलो छुं, तथापि तुं तारी

कृपाछाया नीचे मने राखे छे; अने जेमां मारुं सारुं तथा कल्याण थाय तेज तुं करे छे; हे दयाळ! तारी दयानुं कोण वर्णन करी सके? तारी मारा उपर अपार दया तथा अपरिमेय सुतवात्सल्यता छे. तारा उपकारस्मरणपूर्वक हुं तने साष्टांग प्रणाम करुंछुं.

हे दयासागर जगदीश्वर! आ भूगोळना सर्व देशमां लोकोने तारा शुद्ध, सत्य अने करुणामय स्वरूपनुं ज्ञान प्राप्त थाय; पाखंडी, ढोंगी, खोटा, अने नास्तिक पंथोना मत नाश पामे; अने सत्य धर्मना सूर्यनो उदय थईने सर्व कुटुंब, सर्व देशीजन, तारी शुद्ध उपासना करी तारा मंगळनामोच्चारण पूर्वक तारी प्रार्थना करो अने तारो प्रताप, तारो महिमा, जगत्‌मां विस्तार पामे एवुं करो. हे भगवन्! तव जयोस्तु जयोस्तु जयोस्तु

तारो जय हो जय हो जय हो.

दोहरा.

सत्ताथी जे व्याप्त छे, जेथी थाय प्रकाश;
सृष्ट वस्तुथी पार जे, परब्रह्म अविनाश. १
एवा श्रेष्ठ महेशने, प्रणमुं वारंवार;
दीन दास जाणी सदा, कृपा करो विस्तार. २

उपजाति.

जगत्‌बधुं जे बलथी प्रकाशे, जेना प्रतापे स्थितिमाज भासे;
कृपा दयाओ जगमां जणाय, जेनी कलाओ न कदी कलाय. ३
एवा परात्मा रहि साक्षीरूप, जुवे जगत्‌नी रचना अनूप;
नमुं नमुं ते प्रभु आदि देव, एकाग्र चित्ते करुं नित्य सेव. ४

अग्रे तमे छो वळि मध्यमां छो, प्रभू तमे अंत विषे रहोछो;
तमे किधीं छे रचनाज मारे, सृष्टी बधी हाथ प्रभू तमारे. ५

उपेंद्रवज्रा.

ऋषी मुनीओ नहि कोइ जाणे, स्वरूप जेनुं नहि को प्रमाणे;
कला जिवोथी न कदी कलाय, प्रभूमहीमा सघळे जणाय. ६
व्रतस्थ जे साधु जनो महान, करे अहोरात्र तमारुं गान;
महा मुनी मंगल मार्ग पामे, महा प्रभूना पदमां विरामे. ७

इन्द्रवज्रा.

हे विश्वना देव दयानिधान, आपो मने प्रेमथि दिव्य ज्ञान;
उत्कृष्ट ए अर्चननुं विधान, एकाग्र चित्ते धरुं तारुं ध्यान. ८

मंदाक्रांता.

विश्वाधीशा, विनयथि नमुं, नित्य पाये तमारे,
राखो स्वामी, शरण नथि को, अन्य आधार मारे;
भक्तिद्वारे, प्रभुपद मळे, एज विश्वास मारे,
सर्वात्मारे, विपति समये, आवजो शीघ्र वारे. १
कृत्यो सामुं, प्रभु नव जुवो, दोष असंत थाय,
देवा तारो, दिन जन गणी, नित्य रे'शो सहाय;
अंतर्यामी, अकलित कला, को थकी ना कलाय,
अल्पज्ञोथी, प्रभु क्यम करी, स्तुति तारी कराय. २
आ संसारे, भ्रमित जिवनी, भक्तिथी मुक्ति थाशे,
सर्वे तेनां, त्रिविधि जानितो, दुःख संताप जाशे;
सत्कर्मोने, अनुसरणथी, सत्य भक्ती गणाशे,

सखे तारा, अनुग्रह थकी, विश्वसिंधू तराशे. ३
अज्ञाने में, अगणित चुको, जे किधी ते शमादो,
ऐहीकामुष्मिक सुख थवा, शुद्ध क्रीया बतावो;
पूर्णात्मारे, प्रणत जनने, दीन जाणी निभावो,
आ संसारे, जनहित तणां, कार्य रूडां करावो. ४
'सत्ता तारी, जड चर विषे, पूर्णताथी प्रमाणुं,
स्रष्टा स्वामी, सगुण तमने, सर्वथी श्रेष्ठ मानुं;
अंतःशुद्धी, विण वधि वृथा, बाह्य क्रीया हुं जाणुं,
सर्वोत्कृष्टा, शुभफलप्रदा, प्रेमभक्ती वखाणुं. ५
विद्यादाता, अविहित क्रियाथी सदा दूर राखो,
सद्धर्मोनी, सदय चितथी, सन्मती नित्य दाखो;
दोषो मारा, प्रभु नव लहो, एज विश्वास आखो,
अज्ञानोना, अति दृढ तमे, पाशने कापि नांखो. ६
सर्वाध्यक्षा, सकल जगमां, शक्ति तारी अगाध,
साक्षी सर्वान्तरगत तमे, विश्वव्यापी अजात;
प्राणीओनुं, कुशल करता, छो तमे मात तात,
साष्टांगे हुं, अति विनयथी, वंदुं विश्वाधिनाथ. ७
प्रातःकाले, प्रभु करु तने, नित्य हुं वंदनाओ,
सत्क्रीयाओ सफलित थवा, राखुंछुं वाञ्छनाओ;
सायंकाले, प्रणमि करु हुं, प्रेमथी प्रार्थनाओ,
मागुं नित्ये, शयन समये, पूर्ण तारी कृपाओ. ८
माया तारी अतिगहन छे, को थकी ना पमाय,
देवा तारा अनुप पदनुं, माप कोथी न थाय;
शक्ती तारी, त्रिभुवन विषे, पूर्णताथी जणाय,
नित्ये तारी, परम करुणाथी जिवोथी जिवाय. ९

सप्रेमांतःकरणथि करुं, मानसी अर्चनाओ,
वारे वारे, नमन करिने, याचुंछुं याचनाओ;
श्रद्धा भक्ती, थकि तुज पदे, राखुं हुं भावनाओ,
मागुं निसे, मन वचनथी, सर्व पापक्षमाओ. १०
सत्तानी जो, करुं हुं तुलना, तुच्छ हुं प्राणि भासुं,
तारी देवा, अतिशय दयाथी हुं विश्वे निवासुं;
सृष्टी केरा, सबल नियमो, निरखि चित्ते उलासुं,
अंतर्यागे, यजन करिने, प्रेमभावे उपासुं. ११
वंदुं विश्वाधिपति तमने, विघ्न सर्वे निवारो,
बुद्धीदाता, सतत अमने, सूचवो सद्विचारो;
भक्तीभावे, विनति करुं ते, लक्षमां सर्व धारो,
विश्वोद्धारा, विभु करि कृपा, विश्वसिंधूथी तारो. १२

वंशस्थविल.

नमी नमी नाथ दयानिधी तने, प्रणाम सर्वे करिये सदा अमे;
दया करी दुःख बधां निवारशो, प्रसन्नताथी भवसिंधु तारशो. १
विनंति विश्वेश चिते विचारशो, यथीत जाणी प्रभु ते स्विकारशो;
सदा सुनीती सुमती बतावशो, कृपा करी पाप थकी बचावशो. २

गायन.

पद.

मंगल समय आज, स्मरीने जगाधिराज,
मळी भक्तनो समाज, स्तुतियो तमारी गाय;
जगत्तंत्र विश्वनाथ, सघळो तमारे हाथ,
शक्ति आपनी अगाध, सहु वस्तुमां जणाय. मंगल समय०

सत्कार्यमां सदाय, रहेशो तमे सहाय,
हरशो बधा अपाय, करुणाथी कार्य थाय;
प्रभुनुं प्रभुत्व जाणी, प्रेमभक्तिभाव आणी,
अमे सर्व अल्प प्राणी, प्रणमीए लागी पाय. मंगल समय० १

पद.

प्रभुता तमारी छे मोटी, प्रभु परमात्मारे प्रभुता०
जगरचना अति गहन कीधीछे, कृति नथी किंचित् खोटी प्रभुता० १
जड चैतन्य विषे प्रभु भासे, अद्भुत तारी हथोटी. प्रभुता० २
आ संसारे जन्म आपीने, जुवो अमारी कसोटी. प्रभुता० ३
कृपाघना करुणा करशो तो, नव लागे दुःख सोटी. प्रभुता० ४
तुज पद पंकजमध्य अमारी, वृत्ति निरंतर च्होंटी. प्रभुता० ५
करद्वय जोडी प्रभु तुज चरणे, करिये प्रणामो कोटी. प्रभुता० ६

पद.

परब्रह्म प्रणाम करुं तमने त्रिविधि परिताप शमावो सदा. पर०
सद्गुणथी भरपूर प्रभु सर्वेश्वर सत्य सुबुद्धिप्रदा,
अवगुण दोष असंख्य करुं करुणा विण नाथ गति न कदा.
परब्रह्म प्रणाम करुं० १

पद.

तारोरे दयाल मने दीन गणी तारोरे तारोरे०
शरण आवीने हुं, करुंछुं पोकारोरे दयाल०
दूर त्वरित करो दुर्मति प्रभु, बालक छुं अज्ञानरे,
बालक बालक बालकरे, क्षण क्षण क्षण मानुं
प्रभु उपकारोरे दयाल० १

 अंक ११ मो.

आरति.

जयदेव जयदेव जयजयजयकारी जयजयजयकारी
जगदुत्पादक पालक (२) शक्ती सबल धारी जयदेव० १
दृढतर छे विश्वास प्रभुपदमां अमने [२]
आशय भक्त जनोनो (२) सर्व विदित तमने जयदेव०. २
मंगलकारि महेश मंगलगुण आपो (२)
आशंकित सेवकनां (२) संहरशो पापो जयदेव० ३
जगतारक जगनाथ जगदीश्वर दाता (२)
संकट दुख भयहारक (२) सर्वजनत्राता जयदेव० ४
सगुणरूप साक्षात् साष्टांगे नमिये (२)
वाक्कायामनथी प्रभु (२) भक्ति विषे रमिये जयदेव० ५
प्राणपति परमेश प्रणिपतने सुणशो (२)
अनुग्रहथकी अमारा (२) अवगुण नव गणशो जयदेव० ६
पूर्ण कृपाथकि नाथ निर्मल मन करशो (२]
प्रेमल भक्ति तमारी (२) हृदय विषे भरशो जयदेव० ७
अति अद्भुत अचिंत्य छे प्रभुनी शक्ति (२]
आ लोके सुख आपो (२) परलोके मुक्ति जयदेव० ८



अंक ११ मो.

ललित.

प्रणमुं हुं परब्रह्म देवने, सुमति आपशो, सर्वदा मने;
प्रभु धरो षडैश्वर्य लक्षणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. १

परम ब्रह्मनुं, गान गाउंछुं, अति कृतार्थ हुं, नाथ थाउंछुं;
दिन तणा करो, नित्य पोषणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. २
अनुग्रहो करोछो तमे सदा, नव वळी सके पाड तो कदा;
प्रभु करो सदा, भक्त रक्षणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ३
अनितिदुष्कृती, में किधी अति, शरण छुं मने, द्यो रूडी मति;
दुर करो दयानाथ दुर्गुणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ४
भ्रमित छुं प्रभु, भ्रांतिसागरे, तुजविना नहीं हाथ को धरे;
सबल सेतु छे, तुं दया तणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ५
प्रभुप्रसादथी, पूर्णता मळे, प्रभुप्रसादथी, दनिता टळे;
प्रभुस्वभावमां, छे दया गुणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ६
भय विपत्ति संकष्टने समे, सहनशीलता, आपशो तमे;
दिनजनो तणां, दुःखने हणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ७
प्रभु कृपा द्रुमोनी लता निचे, सुखनिवास द्यो, रे दयानिधे;
नव जुवो तमे, जीवदूषणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ८
सुहृद बंधुनी, सन्मती करो, दुरजनो तणी, दुर्मती हरो;
सुचवशो मने, सर्व सद्गुणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. ९
शुभ पदाब्ज हुं, नित्य देवनां, प्रणमि अर्पुछुं, पुष्प प्रेमनां;
सकलशांतिनी, आशिषो भणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. १०



हे जगत्कर्त्ता कृपालु पिता! आ समये अमे अमारा हृदयमां तारुं मंगल ध्यान करीने तने प्रेम सहित प्रणाम करिये छिये. आ संसारमां अमने जन्म आपवानो तारो केवो रूडो अने गंभीर हेतु छे, अने अमारां कर्तव्य कर्म संबंधी उत्तर आपवानुं काम केटलुं भारे छे, तेनो अमे विचार करिये छिये त्यारे अमे केवल लज्जायमान तथा भयभीत थइये छीए, कारण के

अमारे अहीं आवीने जे करवुं जोइयें ते कांइ कर्युं नथी; तारा प्रत्ये अमारो शो धर्म छे, अमारा मित्र तथा मनुष्य भाइओ प्रत्ये अमारो शो धर्म, तथा अमारे पोते अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे शी रीते वर्तवुं जोइये, ते सघळा धर्म अमे जाणिये छिये, ते छतां ते धर्म जेवा जोइये तेवा बजावी सक्या नथी; सारासारविचार करवाने तें अमने विवेकबुद्धि आपी छे तथापि तेनी प्रेरणा प्रमाणे चालवाने अमे पूर्ण लक्ष आप्यो नथी, ए अमारो केटलो भारे अपराध छे! हे मंगलमय प्रभु! अमारा शरीरनी तथा मननी नबळाई तुं जाणंछे. अमारां कुकृत्य सामुं न जोतां तारा दयालु स्वभावथी अमारा उपर दयादृष्टि करीने अमारा सघळा अपराध क्षमा कर, अने अमारा आत्मानुं कल्याण थाय एवो मंगल मार्ग अमने बताव. अमे पतित छिये, तथापि तुं अमारुं रक्षण करे छे, ए तारो अमारा उपर मोटो उपकार छे. हे प्राणदाता प्राणरक्षक! अमे तारे शरण छिये. तें अमने जीव आप्यो छे. पितानी पुत्र उपर प्रीति होय छे, ते प्रमाणे तारा दीन रंक बालक उपर प्रेम राख. परिणामे सर्व प्राणियो तारा मंगल धामे आववानां छे. अमारा देह तथा आत्मानो संबंध छूटे त्यारे उजळे म्होए तारा पवित्र धामे आवी सकाय एवी वर्तणुके चालिये, तारी आज्ञा पाळिये, अने तने विसरी न जइये, एवी सदाकाल अमने प्रेरणा कर. सद्गुणी थवानो अमें श्रम तथा उद्योग करिये तेमां तुं सहाय रहे. तने सदाकाल सन्निध जाणीने अमे सद्धर्मे चालिये एवुं अमने सामर्थ्य आप. आ अमारी मागणी, हे जगदीश्वर! तुं कृपा करीने अंगीकार कर.

हे मंगलमय महाधिराज महासमर्थ सर्वव्यापक सच्चिदानंद

परब्रह्म परमेश्वर! अमे तारे पवित्र चरणे प्रेम सहित अभिवंदन करिये छिये. आ जगत् ताराथी उत्पन्न थयुं छे, अने तुं जीवोनुं रक्षण करे छे. अमे तने जोई सकता नथी, पण तुं अमने जुवे छे. आ जगत्मां तारा सरजेला सर्व पदार्थोमां तारी योजना तथा शरीर पिंजरमां गोठवेली घटित वस्तुओ तथा तेमां मूकेली यांत्रिक युक्ति, तथा आकाशमां ग्रहमंडलनी शोभा तथा तेओना भ्रमण तथा अस्तोदयना सुंदर नियमो निरखवाथी तारी अपार शक्ति, अपार डहापण, अने अपार करुणा छे एम अमने समजाय छे. तुं जाणे आ ब्रह्मांड रूपी पडदानी पाछळ रहीने करुणा भरेली विशाल दृष्टिथी तारी रचेली विश्वरचनाने जुवे छे. हे दयानिधि! अमे निर्मल मनथी तारुं ध्यान धरी तारो महिमा गाइये छिये. तारी साची अने प्रेम सहित भक्ति ए अमो जीवोनो धर्म छे; परंतु हे दिव्यपिता! अमे अमारा धर्मथी केटला बधा आडे रस्ते चढ्या छिये तेनो विचार करिये छिये त्यारे अमे केम बचीशुं, अमारी वले शी थशे, एवा विचारथी भयभीत थइये छिये. जाणे अजाणे थयेलां अनेक पापनी क्षमा मागी हवे पछी अपराध नाहि करवानुं वचन आपीए छिये. अमने रूडो मार्ग देखाड. तारी दया विना अमने पांशरो पंथ जडवानो नथी; माटे भूलां पडेलां तारां रंक बालकोनी दीनवाणी सांभळी अमने पवित्र अने रूडो मार्ग बताव. तथास्तु.



स्त्रग्धरा.

शांती रूपे विराजो, शुभवरद विभु, स्वामि विश्वाधिभूप,
सत्ता सर्वत्र धारो, सकल सुख करो, सर्वना साक्षि रूप;

भक्तोनुं श्रेय कर्त्ता, सकल भयहरा, भक्तिमार्गे जणाओ,
एवा कारुण्यमूर्त्ति, प्रभुपद नमिने, नित्य मागुं कृपाओ. १

शार्दूलविक्रीडित.

वंदुं हुं परमेश व्याप्त विभुने, वंदुं जगाधीशने,
वंदुं सर्वशरण्य सत्यपदने, वंदुं सदा ईशने;
वंदुं देव दयानिधी विभुवरा, वंदुं हुं विश्वेशने,
वंदुं हुं परमात्म पूर्ण प्रभुने, वंदुं परब्रह्मने. १
जेनी सर्व ऋषी मुनी स्तुति करे, स्तोत्रे महासुंदर,
वेदोथी महिमा महान उचरी, भक्तीपथे संचरे;
जेनुं ध्यान धरे निरंतर मने, योगी जनो जे बधा;
जेनो अंत अनंत पामि न सके, ते ब्रह्म वंदुं सदा. २
जे इच्छा थकि भूमि पर्वत जलो, तत्वो थयां दीपितां,
जेणे सूर्य शशी ग्रहादि भुवनो, कीधां बहू शोभितां;
जे सत्ता थकि राशि चक्र भगणो, भासे महामंडले,
ते विश्वेशतणी अचिंत्य गतिने, जीवो कदी ना कले. ३
जेणे विश्व विषे विचित्र कृतिथी, वस्तु स्रजावी बधी,
जेनी नित्य प्रते प्रजापर दिसे, प्रीती दयाओ घणी;
जे छे सत्य समर्थ कार्य करवा, कारुण्यमूर्त्ती सदा,
ते विश्वंभर सर्व पूर्ण करशो, भक्तो तणी कामना. ४
जेनी शक्ति समस्त विश्व प्रसरी, जेमां दया छे भरी,
जेमांथी अतिश्रेष्ठ सृष्टि निसरी, जेथी स्थितीमां रही;
जेनो पार अपार को नव कले, सत्ताथि व्यापे सदा,
एवा ब्रह्म समर्थ सत्य प्रभुने, नित्ये करुं वंदना. ५
विश्वाधीश वरिष्ठ नित्य तमने, हर्षे करीने नमुं,

अंतर्यामि समर्थ नाथ तमथी, शुं गुप्त राखी सकुं;
हुं अज्ञान प्रभू महान महिमा, विस्तारथी शुं कहुं,
वाणीनो हुं विलास मात्र करिने, विश्वास तारो ध .. ६
तारो नाथ अनाथ दीन मुजने, दृष्टी दयानी करो,
प्रेमेथी प्रतिपालना करि प्रभू, संताप सर्वे हरो;
आपोरे वरदान मान मुजने, सामीप्यमुक्ती तणुं,
सर्वज्ञ प्रभु शक्तिमान तमने, शुं हुं कहुं रे घणुं. ७
द्रव्यादी सुख प्राप्तिनी प्रभु मनी, जेवी रहेछे घणी,
तेवी वृत्ति हृदे निरंतर रहो, तारीज भक्ती तणी;
नित्ये ध्यान रहे तमारुं अमने, एवी मती आपशो,
राखीने शरणे सदा शिव तमे, संकष्ट सौ कापशो. ८
पूर्णात्मा परमेश ब्रह्म विभु जे, सर्वत्र व्यापी रह्या,
जेना सात्विक पूर्ण शुद्ध गुणने, सत्शास्त्रमां वर्णव्या.
एवा स्वामि समर्थ सत्य तमने, पाये हुं लागी सदा,
मागुंछुं शुभ धर्म कर्म करवा, सद्बुद्धि सद्वासना. ९
ब्रह्मांडाधिपती नमुं विनयथी, विद्यापती भूपति,
भक्ति ज्ञान विवेक शांति सुमति, आपी करो सद्गति;
पूरो सत्य सदर्थ सर्व जनना, विश्वास राखुं सदा,
दीनानाथ दयाथि दूर करशो, दारिद्र्य दुःखापदा. १०
स्वामी सर्व समर्थ सत्य सबली, संपूर्ण सत्ता धरो,
मिथ्या मानुषियत्न जाय सघळुं, ज्यारे कृपा ना करो;
माटे हुं निज दास आश धरिने, मागुं तमारी कृपा,
कार्यो श्रेष्ठ विषे सहाय रहिने, संतोष आपो सदा. ११
बांधीछे अवधी सहां लगि मती, जीवो तणी चालशे,
तेथी पार गये प्रणो भ्रम थशे, भ्रांती बहु भासशे;

माटे ते अवधीज मध्य रहिने धर्मध्वजा धारवी,
शिक्षाओ प्रभु तारि मान्य करिने, नीती न वीसारवी. १२
जोडीने प्रभु हाथ नाथ तमने, नित्ये करुं प्रार्थना,
प्रीती पूर्ण करो पुरो प्रभु तमे, सर्वे रुडी कामना;
कीधां कर्म अमे समस्त नबळां, संभाळि लेशो मने,
आव्योछुं शरणे कृपानिधि बधी, लज्जा रहीछे तने. १३
सर्वात्मा प्रभु तुं विना नहि विजो, आधार आश्रो धरुं,
प्रेमेथी तमने प्रणाम करिने, नित्योपकारो स्मरुं;
लज्जा छे तुज हाथ नाथ चितमां, दोषो न वीचारशो,
ऐहामुष्मिक आपिने सुख मने, संसारथी तारशो. १४
सर्वात्मा सकलेश्वरा सुखकरा, सर्वज्ञ सच्चिद्घना,
सर्वांतर्गत सत्य नित्य विभु छो, सन्मार्गबुद्धिप्रदा;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिप्रपालनगुणो, धारो तमे सर्वदा,
साष्टांगे नमि नाथ नित्य तमने, मागुं हुं पापक्षमा. १५

उपेंद्रवज्रा.

अपार लीला प्रभु छे तमारी, न चालशे त्यां गति तो अमारी;
तमे दयाळू अति ऊपकारी, स्थिती अमारी प्रभु ल्यो विचारी. १
विदीत छे सर्व अमारि वात, प्रसन्न रे'शो विभु विश्वनाथ;
मनोर्थ माग्या प्रभु प्रार्थनामां, स्विकारशो अर्थ घटीत तेमां. २
क्षमा करी नाथ समस्त पापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो;
प्रभू अमारा नहि दोष जोशो, कृपा करी आशिष पूर्ण देशो. ३



गायन.

पद.

सगुण समर्थ सत्य, प्रभुने स्मरुं हुं नित्य,
आपो धर्मनीतिव्रत, वंदुंछुं हुं वारवार;
निरंजन निराकार, नित्य शुद्ध निर्विकार,
शक्तिनो न पामुं पार, मानुं प्रभु उपकार. सगुण समर्थ०
भवपति भगवान, तमे पूर्ण बलवान,
विश्वमां विराजमान, विनति करो स्वीकार;
सुणी प्रार्थना त्वरित, मति द्यो मने पुनीत,
पावन करी पतित, करशो तमे उद्धार. सगुण समर्थ० १

पद.

जय जगत्राता, जगतप्रख्याता, त्रिभुवनत्राता;
तुज शुभ गुण ऋषिमुनिजन गाता, सन्मतिदाता. जय जगत्राता० १
एक तमे अद्वितीय अजाता, अकल अबाधा;
कर्ता अद्भुत, कृतिथी गणाता, विश्वविधाता. जय जगत्राता० २
साक्षि सदा सच्चिद्घन ज्ञाता, शुभ गुण धाता;
नव कदि मन बुद्धिथी कळाता, दिनजन नाथा. जय जगत्राता० ३
ब्रह्म परात्पर, मुक्तिप्रदाता, प्रमुख मनाता;
प्रेम थकी प्रणमुं पितु माता, प्रभु साक्षाता. जय जगत्राता० ४

पद.

जगदीशने शीश नमावुं, प्रभु-मन भावुं, जग०
में अवगुण अपार किधा जे, विगतथी शुं हुं गणावुं;
क्षमा-प्रभु करुणा करी करशो, वधु कहीने शुं जणावुं,

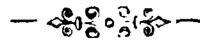
किंयुं अन्य शरण हुं लावुं. जगदीश० १
जेवी स्थितिमां अहिं मने राखो, तेवी स्थितिथी निभावुं;
विधि निषेधना नियमो मानुं, भक्तिनो भाव विभावुं,
तोज प्रभुने मन भावुं. जगदीश० २
दीनदयाल स्वभाव तमारो, ए मन धैर्य धरावुं;
प्रभु शुभ चरणे प्रेमभक्तिनां, पुष्प सदैव वधावुं,
दुरित कर्म सर्व हठावुं. जगदीश० ३
शमदमादिकसाधनतीर्थे, स्नान करी शुद्ध थाउं;
विश्वपतिनुं स्मरण करीने, नीतिपथे नित्य जाउं,
प्रभुकृपामृतफल खाउं. जगदीश० ४
वृत्ति स्वच्छ पवित्र राखीने, सर्व विकारो शमावुं;
ए शुभ शुद्ध मने मति आपो, मंगल गुण हुं गाउं,
अंते प्रभुधामे आवुं. जगदीश० ५



आरति.

जयदेव जयदेव जय मुक्तिदाता जय मुक्तिदाता
सर्वांतर्गत ज्ञाता (२) सृष्टितणा धाता जयदेव० १
लीला तारि अपार अति अद्‌भुत भासे (२)
अतुल पराक्रम तारुं (२) नव वर्णन थाशे जयदेव० २
अनुपम छे औदार्य उत्तम गति आपो (२)
विश्व विषे विश्वेश्वर (२) सद्धर्म स्थापो जयदेव० ३
सर्वाधार समर्थ शुभ सन्मतिदाता (२)
अति करुणामय गुणथी (२) प्रभु छो प्रख्याता जयदेव० ४
अवगुण दोष अपार मनमां नव धरशो (२)

सुतवात्सल्य स्वभावे (२) संरक्षण करशो जयदेव० ५
जगदाधीश दयाल द्यो चितने शांति (२)
करुणा करि करशो प्रभु (२) पापतणी क्षांति जयदेव० ६
सदाकाल सर्वेश सद्धर्मे रहिये (२)
ए निर्मल मति आपो (२) विनति करि कहिये जयदेव० ७
प्रेमभक्तिथी नाथ नित्य करिये सेवा (२)
पावन करि सेवकने (२) द्यो सद्गति देवा जयदेव० ८



अंक १२ मो.

अहो विश्वनियंता नाथरे, नमुं नमुं;
तमने जोडीने बेउ हाथरे, नमुं नमुं. १
सर्व प्राणीतणा मात तातरे, नमुं नमुं;
तमे जाणो अंतरनी वातरे, नमुं नमुं. २
परब्रह्म प्रभु परमेशरे, नमुं नमुं;
विश्वव्यापी विभु विश्वेशरे, नमुं नमुं. ३
सर्व सृष्टि तणा आधाररे, नमुं नमुं;
एक नित्य अखंड अपाररे, नमुं नमुं. ४
नमुं आद्य अनंत अविकाररे, नमुं नमुं;
नमुं विश्वपतिने वारंवाररे, नमुं नमुं. ५
तारी सत्ता सृष्टिमां जणायरे, नमुं नमुं;
कला तारी कोथी न कलायरे, नमुं नमुं. ६
महा मुनिनी मति तो भमायरे, नमुं नमुं;
स्तुति तारी ते हुंथी क्यम थायरे, नमुं नमुं. ७

दीनबंधु छो तमे दयावंतरे, नमुं नमुं;
तमे रहो सदा क्षमावंतरे, नमुं नमुं. ८
तमे सच्चिद्घन अविनाशरे, नमुं नमुं;
पुरो भक्तनी सर्व रुडी आशरे, नमुं नमुं. ९
तमे दयासिंधु छो दयालरे, नमुं नमुं;
सदा सेवकनी ल्यो संभाळरे, नमुं नमुं. १०
तमे सात्विकगुणनिधानरे, नमुं नमुं;
करो नित्य कुशल कल्याणरे, नमुं नमुं. ११
आवुं चरण समीप हुं बालरे, नमुं नमुं;
प्रतिपालन करो कृपालरे, नमुं नमुं. १२
प्रेमभावथी प्रभुपाय लागुंरे, नमुं नमुं;
पापकर्मनी क्षमा नित्य मागुंरे, नमुं नमुं. १३
मागुं कृपा तमारी महाराजरे, नमुं नमुं;
राखो दास तणी तमे लाजरे, नमुं नमुं. १४
एक आश्रय धारुं तारो सत्यरे, नमुं नमुं;
नथी केवानी वधु अगत्यरे, नमुं नमुं. १५
दुष्ट दुरित सर्व कर्म कापोरे, नमुं नमुं;
नीति धर्म तमे मने आपोरे, नमुं नमुं. १६
उपकार करो छो अत्यंतरे, नमुं नमुं;
शरणे राखो मने भगवंतरे, नमुं नमुं. १७
सर्व कार्य करवा छो समर्थरे, नमुं नमुं;
कृपाविना न सरे कांइ अर्थरे, नमुं नमुं. १८
तमे सत्य सर्वज्ञ शक्तिमानरे, नमुं नमुं;
मने आपो अभय वरदानरे, नमुं नमुं. १९
जय जय जय जगतातरे, नमुं नमुं;

जय जय अचिंत्य अजातरे, नमुं नमुं. २०
नमुं नमुं हुं नमुं दिन निशरे, नमुं नमुं;
कृति साधुं न जोशो जगदीशरे, नमुं नमुं. २१
मानुं तारो बहु उपकाररे, नमुं नमुं;
करो विनति तमे अंगीकाररे, नमुं नमुं. २२
करो दृत्ति विमल विश्वनाथरे, नमुं नमुं;
करो क्षमा महा अपराधरे, नमुं नमुं. २३
शिरसाष्टांग करुं हुं प्रणामरे, नमुं नमुं;
कृपासिंधु पुरो शुभ कामरे, नमुं नमुं. २४

हे ज्ञानसिंधु, हे दयासागर, हे परम कृपालु भगवान! अमे तारे शरणे आव्या छिये. तमने पगे लागी वरदान मागिए छीए के अमने सदाचार पाळवानी मति आपो. तमारी दयाथी अमने ज्ञान थयुंछे के साचाई, प्रमाणिकपणुं, न्याय, दया, क्षमादि सुनीतिना गुणो अमारामां हशे तोज अमे तारी कृपा संपादन करवाने लायक थइशुं. अमारी खातरी थइ छे के कुकर्मो करीशुं नहि, दुर्गुणो तजीशुं, अने सदाचार पाळी तारी भक्ति दृढ श्रद्धाथी करीशुं, तोज अमारुं कल्याण थशे; माटे सदाकाल सद्गुणो अमे पाळिये, कोइ साथे वैरभाव राखिये नहि, विपत्ति तथा दुःखनी वेला धीरज राखी तारो आश्रय मागिये, दोलत अधिकारादिना अभिमानथी चढी जइये नहि, सर्व मनुष्य भाइयो साथे सभ्यता, नम्रता, अने सलाह संपथी चालिये, दररोज तारी भक्ति तथा उपासना करीने तारी अमारा उपर दया कृपानो उपकार मानिये, गमे तेवुं संकट पडे पण तने अणगमतां काम करिये नहि एवी रीते रूडी चाले

चालवानुं अमने सामर्थ्य आप. हे करुणासागर! तारी अमारा उपर घणीज दया छे. कदि कोइ वखते अमने दुःख पडेछे, पण तेनो जो अमे पूरो विचार करिये तो ए दुःख पडवामां पण तारी दयानो संकेत होय छे. परम पिता ! तुं केवो दयालु छे ! तारो अमारा उपर दयाभाव छतां अमे तने भूली जइने अवळे रस्ते चालिये छिये. अमारां सत्कर्म घणांज थोडां छे, माटे तेनुं फल मागवानो अमारो कांइ दावो नथी, अने फलनी इच्छा राख्या विना सत्कर्मो करवां ए अमारो धर्म छे, तथापि अमे भूलीए छीए. अमारे तो एटलुंज बोलवुं जोइये के अमे अपराधी छिये, अमे अपराधी छिये.

आ संसारमां अमारे सदाकाल रहेवानुं नथी. अमारा भाविकालनी अमने खबर नथी. मरणवेला तारा विना अमारो कोई त्राता नथी. परलोकमां अमने सद्गति आपवानुं तारे पोतानेज हाथ छे. तुं सर्व शक्तिमान् छुं. तारा प्रसादथी मधुरवायु वाय छे, तारा प्रसादथी समुद्रमां तरंगो उछळे छे, तारा प्रसादथी आ सर्व विश्व प्रकाशी रह्युं छे. तने पूज्य मानी तारी भक्ति करवी ए अमारो धर्म छे. तारे कशानी अपेक्षा नथी. अमारुं आधीनपणुं बतावी तारी प्रार्थना करवी ए गुण अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे अमारा आत्मामां स्वाभाविक रीते तें मूकेलो छे; एवुं छतां अमे तारी प्रार्थना न करिये तो अमे ठगारां तथा धर्मभ्रष्ट कहेवाइये; माटे प्रेमपूर्वक तारी भक्ति तथा प्रार्थना करवानुं भूली जइये नहि एवी अमारा अंतःकरणमां चेतवणी आपतो रहेजे.

हे महाप्रतापी कृपालु परमेश्वर ! अमे साचा अने पवित्र अंतःकरणथी तारुं ध्यान करी, श्रद्धा रूपी चंदन अने भक्ति

रूपी अक्षत, तारे मंगलचरणे अर्पण करी तने प्रेमपुष्पनी माला चढावी अमे अमारी प्रार्थना समाप्त करिये छिये. तुं प्रसन्न चित्तथी अमारुं संरक्षण कर.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥



उपेंद्रवज्रा.

परात्परा ब्रह्मपदे हुं नित्ये, नमी विनंती करुं एक चित्ते;
सुणो तमे प्रार्थन मंत्र जापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. १
विना प्रभू तुं नथि कोइ अन्य, विना प्रभू तुं नथि को शरण्य;
विना प्रभू कोण सुणे विलापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. २
जगत्क्रिया तूं थकि सर्व चाले, विना प्रभू शक्ति न पत्र हाले;
प्रकाश पाम्या प्रभुना प्रतापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ३
दिसे तमारी सघळी लिलाओ, दिसे तमारी सघळी क्रियाओ;
दिसे तमारी करुणा अमापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ४
कृपाथकी मंगल कार्य थाय, कृपाथकी सर्व अरिष्ट जाय;
कृपाथकी जाय त्रिवीधि तापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ५
करुं तने अर्पण सर्व कर्म, निभावि ल्यो जाणि प्रभु स्वधर्म;
कृपा करी संकट सर्व कापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ६
दयाघना अंकित छुं तमारो, दयाथि दोषो सघळा निवारो;
शिरे अमारे वरहस्त थापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ७
सदा तने वंदन विश्वनाथ, अमे करीए प्रभु जोडि हाथ;
क्षमा करो नाथ समस्त पापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ८



शार्दूलविक्रीडित.

हे विश्वेश्वर हे जगत्रयगुरू, सर्वज्ञ सच्चिद्घना;
कौटुंबी जन मित्र बंधु सघळा, जे आ जगत्मां रह्या;
आ देशे वसता विदेश फरता, प्राणी समस्तो तणां,
पापो सर्व क्षमा करी प्रभु तमे, संतोष आपो सदा.

मालिनी.

प्रभुपरपद मोटुं मोक्षकल्याणदाता,
ऋषि मुनी जन सर्वे चित्तथी नित्य गाता;
करगारि प्रभु मागुं कष्टने कापी नांखो,
शरिरपतन वेला पाळिने पास राखो. १
अखिलभवपतीनी प्रार्थना पुण्यकारी,
सकलदुरितहारी सर्वदा श्रेयकारी;
भणि भजन करुंछुं चित्तने शान्ति आपो,
चरण शरण राखी संहरो सर्व तापो. २

सेनिका.

विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो, सर्वव्याप्त पूर्ण ब्रह्म सत्य छो;
प्रेम भक्तिथी नमुं परात्परा, सत्य ज्ञान आपशो प्रभू वरा.
सर्वकाल ध्यान तारुं हुं धरुं, नित्य धर्मकार्यमां हुं संचरुं;
मागुंछुं सहाय तारि चिद्घना, सिद्ध थाय वाञ्छितार्थ कामना.
नम्र भावथी विनंति हुं करुं, शीश प्राणनाथने पदे धरुं;
विश्वपाल छो समर्थ रे तमे, अल्प दीन सर्व जीव तो अमे.
अर्पु सर्व कर्म मात तातने, तारशो तमे मने अनाथने;

धैर्य सर्वदा दयाल आपशो, दासना समस्त दोष कापशो. ४
अल्प बुद्धि जीवनी विचारशो, सर्व विघ्न कष्टने निवारशो;
द्यो तमे मनी रुडी दयाघना, पापकर्मनी करो प्रभु क्षमा. ५
निघ्न कर्म नित्य नाथ थायछे, न्यूनता दयानि ना जणायछे;
ए तमारुं छे प्रभु प्रभुत्वरे, शुं स्तुती करुं हुं ते महत्वरे. ६
सृष्टिकार्य हाथ सर्व नाथने, जाणि ल्यो तमे अमारि वातने;
हाथ जोडिने करुं हुं वंदना, मानि ल्यो तमे अमारि अर्चना. ७
शान्ति सर्व विश्वमां सदा करो, भक्तनी विपत्ति आपदा हरो;
दीन दास जाणिने जगत्पति, आपशो कृपाथि नाथ सद्‌गति. ८

शालिनी.

स्वामी सर्वात्मा प्रभु प्राणनाथ, सर्वे जीवोना तमे मात तात;
अंतर्यामी आप जाणो अमारां, जे जे कीधां कृत्य सारां नठारां. १
माफी आपो दुष्कृतीनी दयाल, दृष्टी राखो प्रेमनी सर्व काल;
अर्थो माग्या प्रार्थनामां अमे जे, स्वीकारी ल्यो जे प्रभूने गमे ते. २
प्रीतीभावे वंदिये जोडि हाथ, शांती आपो विश्वमां विश्वनाथ;
भक्ती आपो शुद्ध साची तमारी, सत्कार्योमां वृत्ति राखो अमारी. ३

गायन.

पद.

नमुं नित्य विश्वपति, आपो मने शुद्धमति,
अगम्य तमारी कृति, कदि ना कलाय नाथ;
शरण तमारुं धरुं, वधु विनति शुं करुं,
विदित छे विश्वनाथ, तमने समस्त वात. नमुं नित्य०
विश्वमां करुं निवास, राखीने तमारी आश,

करशो नहि निराश, विभु मात तात भ्रात;
पूज्य जाणी आपुं मान, तमने कृपानिधान,
करो मने नीतिमान, प्रणमुं छुं प्राणनाथ. नमुं नित्य० १

पद.

विश्वनाथ तुं विना न को सहायकारी;
निर्मल निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी,
सच्चिद्घन साक्षी सर्वसंकटभयहारी. विश्वनाथ तुं विना० १
नित्य कृसथी दयाळ ल्यो तमे उगारी,
भवपति भवसिंधु थकी द्यो मने उतारी. विश्वनाथ तुं विना० २
सत्य देव एक एम श्रुति वदे पोकारी,
सत्य धर्म आपि मने राखो सदाचारी. विश्वनाथ तुं विना० ३
श्रवण करो सर्व तमे प्रार्थना अमारी,
सर्वदा रहो प्रसन्न परम उपकारी. विश्वनाथ तुं विना० ४

पद.

प्राणपति सुणो विनति अमारी,
विनति अमारी विज्ञप्ति अमारी. प्राणपति०
मंदमतिथी प्रभु स्तुति शी थाय,
अकळ गति छे गहन तमारी. प्राणपति० १
विदित तने अंतरनो आशय,
अतिशय शुं वदिये विस्तारी. प्राणपति० २
विपरीत कृतियो विभु नव जोशो,
करुणासागर छो उपकारी. प्राणपति० ३
मंगल कार्य करावो जगत्प्रभु,
जगदीश्वर द्यो भवथी उतारी. प्राणपति० ४

पद.

कृतिसामुं प्रभु कदि नव जुवो रे;
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं०
विषयमहोदधिमां हुं मग्न,
दयानिधि दया करी कर ग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० १
साष्टांगे तुज चरणे वंदी,
स्मरण करुं सदा प्रभु अनुग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० २
परमात्मा प्रभु प्रणत जनोनां,
मनवाञ्छित तमे परिपूर्ण करोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० ३



आरति.

जयदेव जयदेव जयसविता धाता जयसविता धाता
सर्वोत्तम पददाता (२) प्रणतजनत्राता जयदेव० १
शांताकार शरण्य शिव शुभ गुण धारो (२)
भवमोहाब्धि थकी प्रभु (२) कर ग्रहिने तारो जयदेव० २
रविशशिवन्हिप्रकाश ज्यां कदि नव जासे (२)
त्यां प्रभु स्वयंप्रकाशे (२) सच्चिद्घन भासे जयदेव० ३
ते परब्रह्म परेश पदपंकज प्रणमुं (२)
प्रेमाक्षत अर्पण करि (२) तत्पदमां विरमुं जयदेव० ४
अतिशय छे अपराध अति लज्जा पामुं (२)
केवल कृपास्वभावे (२) प्रभु जोशो सामुं जयदेव० ५

भवतारक भगवंत भक्ति करूं तारी (२)
ब्रह्मध्यानपरायण (२) वृत्ति रहो मारी जयदेव० ६
संध्या समये नित्य स्मरूं करुणासिंधु (२)
प्रेमथकी प्रणमी प्रभु (२) मंगलपद वंदुं जयदेव० ७
जगदाधार दयाळ शुभ दर्शन देशो (२)
ध्यानार्चनवंदनविधि (२) विभु मानी लेशो जयदेव० ८

अंक १३ मो.

ललित.

नमुं नमुं महाराजने नमुं, परम भक्तिना, रंगमां रमुं;
नव बिजो प्रभू, जाणुं हुं विधि, शरण राखशो, रे दयानिधि. १
हृदयमां रहुं, ध्यान हुं धरूं, प्रभु उपासना, प्रेमथी करूं;
सकल शांतिना, छो महोदधि, शरण राखशो, रे दयानिधि. २
परमतत्वहे, मंगलप्रदा, विनयपूर्वके, वंदुं हुं सदा;
प्रभु दया करी, द्यो रुडी मति, शरण राखशो, रे दयानिधि. ३
जगतमां सहू, वस्तुओ विषे, घटित योजना, नाथनी दिसे;
स्तुति नहीं थशे, अल्प जीवथी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ४
प्रभु कृपा दयानुं निधान छो, सकल प्राणिनुं, शांतिस्थान छो;
तुजपदे सदा, राखुं हुं रति, शरण राखशो, रे दयानिधि. ५
प्रणमिने पर-ब्रह्मने भजुं, दुरित वासना, सर्व हुं तजुं;
प्रभु बचावशो, पाप कर्मथी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ६
असत मार्गथी, वृत्ति वाळशो, दिन गणी दया, नाथ पाळशो;

शुभ क्रिया कदी, में नथी किधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ७
तुजविना मने, कोण तारशे, त्रिविधिदुःखने, कोण टाळशे;
पतित प्राणि छुं, मंद अल्पधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ८
सकल कार्यमां, तुं सहायता, अति अवश्य छे, रे जगत्पिता;
सकल सुक्रिया, थाय तुं थकी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ९
परम प्रेमनी, पुष्प अंजलि, प्रभुपदे समर्पु वळी वळी;
भवपती करो, आत्म उन्नति, शरण राखशो, रे दयानिधि. १०

ॐ परमात्मने नमः ।

हे जगत्कर्त्ता ! हे सर्व प्राणसना महापिता ! अमे तमारे शरणे आवी अमारा अपराधनी क्षमा मागीए छीए. अमे पामर प्राणी छीए. अमारी बुद्धि थोडी अने अमारुं ज्ञान छेक अल्प छे. तारी हजुरमां आववाने अमे केवल अयोग्य छीए. कमअकलथी अने दुष्ट बुद्धिथी अमे जाणे अजाणे अगणित पाप कर्यांछे, तेने माटे पश्चात्ताप करीने तमारी पासे माफ मागीए छीए. क्षणे क्षणे अमारी मति फरे नहि, आ पश्चात्तापनी असर अमारा मन उपरथी घसाई ना जाय, एवा उपाय कृपा करी अमने सुझाड. अमारा अज्ञाननो नाश थाय एवा तमारा तेजनो प्रकाश अमारा अंतःकरणमां करो. प्रभाते सूर्यनां किरणोथी जेम रात्रिनुं अंधारुं नाश पामेछे तेम तमारा ज्ञानरूपी किरणोथी अमारा मनना अंधारानो नाश करो, अने मुक्ति पामवानां साधन बतावो. तमारी प्रेरणा अने तमारी सहायता विना आ सर्वोत्तम कार्यने माटे अमारां सघळां प्रयत्न निष्फल जायछे; माटे हे दयानिधि ! करुणा करो. अमे दीनजनो तमारा भाविक भक्त उपर मेहेरमी नजरे जुओ. अमे भूलां प-

डेलां प्राणीओने खरे रस्ते चढावो. जेवो उपकार आज सुधी कर्योछे तेवोज हवे पछी करशो. निर्लज्ज थई घणी वार अमे तमारा उपकारने विसारी दीधोछे. दुःखमां तमने संभारीए छीए ने सुखने समये उन्मत्त थई तमने भूली जइए छीए. ए अमारी केवी मूर्खाइ छे. एवां पाप न करीए एवी अमारी इच्छा छे ते सफल करो. अमारी मूर्खाइनो पार नथी. हे प्रभु ! अमारा अपराध अने अमारा अज्ञाननो पार नथी. वहेम रूपी दैत्य अमारा आत्माने अधम गतिए पहोचाडेछे; अहंकार अने वहेम अमने ऊंधी मति सूझाडेछे. कांइ सुख थयुं, के द्रव्य मळ्युं, के यश मळ्यो, तो अमारी चतुराइथी, अमारा डहापणथी, अमारा नसीबथी, फलाणानी उपासनाथी के कृपाथी ते प्राप्त थयां एम मानी पापना ऊंडा खाडामां पडीए छीए. आ जगत्‌नो कर्ता, हर्ता, मालीक, अने नियंता तमारा विना बीजो कोइ नथी; अने तमारा करेला नियमो उपरांत कांइ थतुं नथी, ए भूली जई प्रेमभक्तिमां चूकीए छीए, ने बीजा कोइ उपर विश्वास राखीए छीए. एवा वहेम अने अंधाराना कुवामांथी अमने काढो ! ओ प्रभु ! अमने काढो अने तारो. वहेमरूपी नदीना वहेता पूरमां अमे, अमारा स्नेहीओ, अने अमारा देशीओ, तणाया जइये छीए; दया करो; प्रभु ! दया करो; दया करीने अमने उगारो. अमने वहेमनी जालमांथी छोडवो अने तमारा एकलाना आस्तिक भक्त करो. अमने खरी श्रद्धा आपो, अमने ढोंगना खाडामांथी काढो ने पुण्यने मार्गे चढावो. हे विश्वाधिपति महाराज ! अमारां एवां धन्य भाग्य क्यांथी के अमारी सघळी दुर्वासना, अमारा सघळा वहेम, अमारुं सर्व अज्ञान, नाश पामे अने अमे सद्‌गुणी थई तमारे एकलानेज शरणे आवी रहीए; मात्र तमारी एक-

लानीज पराभक्ति अने मानसिक सेवा पूजाथी पवित्र थई तमारी कृपा पामवाने योग्य थइए अने मोक्ष पामीए! हे दीननाथ, दयासागर, कल्याणकारी प्रभु! भाविक भक्तने तारनार भगवान्! अमारी आ दीन याचना सांभळो, अमारी आ अरज स्वीकारो. अमने परमार्थ बुद्धि आपो, अमारी मति निर्मल करो; अमे तमारी पराभक्ति अने अमारा देह आत्मानो वियोग थये आत्मानी भक्ति मागीए छीए ते आपो. तथास्तु.

वंशस्थविल.

नमी नमी नित्य जगादिनाथने, नमी नमी सत्य प्रभू अजातने;
नमी पराभक्तिथि ध्यान हुं धरुं, पदारविंदे अभिवंदना करुं. १
अतर्क्य शक्ति प्रभु को न पामशे, विचारना वेग बधा विरामशे;
तमे मने नाथ प्रसन्न रे'शो, सुनीतिनो बोध सदैव देशो. २
पळे पळे हुं बहु पातको करुं, तथापि तारी प्रभु आश हुं धरुं;
स्थिती तमे दासनि चित्त धारशो, कृपा करी नाथ भवाब्धि तारशो. ३
विना प्रभू को नथि अन्य तारक, विना प्रभू को नथि पापहारक;
तमे हरो सर्व विपत्ति आपदा, तमे करो रक्षण मारुं सर्वदा. ४
पदे पदे हुं तमने प्रमाणुंछुं, दया तमारी सघळे हुं जाणुंछुं;
उपासुं हुं प्राणपति प्रभू सदा, न पामुं हुं दुःख दयानिधी कदा. ५
असंख्य पापो प्रभु नित्य थाय छे, तथापि तारी करुणा जणाय छे;
अनन्य भावे करुं भक्ति ताहरी, मती करो निर्मल नाथ माहरी. ६
तमारि सत्ता थकि तो हलाय छे, तमारि सत्ता थकि तो चलाय छे;
कृपा करीने वरदान द्यो तमे, सहाय रे'शो प्रभु कष्टने समे. ७
प्रभु तमारो अपराधि हुं थयो, अनीतिना पंथ मते बहु गयो;

कृपानिधे पाप समस्त कापशो, सदा मने सन्मति नाथ आपशो. ८
समर्पुं तुंने निज सर्व कर्मरे, तमेज जाणो मुज चित्तमर्म रे;
दयाघना दास गणी दया करो, कदी उपेक्षा प्रभु नाथ ना करो. ९
कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करुं, प्रभुपदे मस्तक नित्य हुं धरुं;
दयाथि राखो शरणे मने प्रभु, विना दया हुं क्षण एक ना निभुं. १०
अहोनिशे नीतिविधान मानुं हुं, सदा तने सन्निध नाथ जाणुं हुं;
नमी नमी हुं प्रभु पाय लागुंछुं, क्षमा महादोष तणी हुं मागुंछुं. ११
तमेज मारा प्रभु मात तात छो, तमेज मारा सहु मित्र भ्रात छो;
विनंति सर्वे चितमां तमे धरो, कृपा करी पाप समस्त संहरो. १२

—————

रथोद्धता.

वंदुं नित्य परमात्म ब्रह्मने, वंदुं सत्य विभु विश्ववंद्यने;
वंदुं प्रेम थकि हुं कृपाघना, जाउं कोण शरणे प्रभु विना. १
दीनवत्सल तमे दयानिधि, स्तूतिनो हुं नव जाणुं रे विधि;
वारवार नमिने हुं चिद्घना, प्रेमथी करुं तमारि प्रार्थना. २
एक देव तमने उपासुंछुं, नित्य नाथ शरणे निवासुंछुं;
अल्पमंद प्रभु मारि छे मति, मात्र तारि करुणा थकी गति. ३
ब्रह्म पूर्ण प्रभु रे अनन्य छो, सर्व भक्त जनना शरण्य छो;
सृष्टिसूत्र प्रभु धारिने रहो, सर्वनी स्थिति तमे चिते लहो. ४
शक्ति छे सबल नाथ तारिरे, सर्जिछे सकल वस्तु सारिरे;
दीनवत्सल करो तमे दया, मागुं नित्य प्रभु पापनी क्षमा. ५
विश्ववंद्य विनती चिते धरो, भक्तनां विपति संकटो हरो;
मानुं नित्य प्रभुना अनुग्रहो, दास जाणि कर भक्तनो ग्रहो. ६
विश्वनाथ विभु विश्व संचरो, कृत्य सामुं कादि लक्ष ना करो;

मात तात तमने नमुं सदा, पामुं हुं न त्रिविधीनि आपदा. ७
वंदना करुं हुं प्रेमभक्तिथी, प्रेरशो प्रभु कृपाथि सन्मतिः
प्राणनाथ प्रतिपालना करो, रुडि आश प्रभु प्रेमथी पुरो. ८

गीति.

जय जय जय जगदीश्वर, ईश्वर अनुपम अतर्क्य अद्वितिय;
अविचल अनंत गुणमय, सच्चिद्घन शुद्ध छो अपरिमेय. १
सत्य तमे जगकर्त्ता, संशय नथि कांइ चित्तमां अमने;
शक्ति सबल मानीने, वंदन करिये क्षणे क्षणे तमने. २
आस्तिक भक्त जनांजे, प्रभुनुं अस्तित्व सत्य चित धारे;
नास्तिक ऊर्मि उपजतां, तत्क्षण तेने निवारि धिक्कारे. ३
अंतर निर्मल नथि तो बाह्याचाओ बधी वृथा जाय;
सत्य पराभक्ती छे, ते थकि प्रभुनुं प्रसन्न चित थाय. ४
भक्ति विना नथि मुक्ती, सत्य सकल एज शास्त्र सिद्धांत;
ए थकि प्रभुपद मळशे, टळशे भवविषयमोहनुं ध्वांत. ५
गीति स्तवे करुंछुं, प्रभुप्रार्थन हुं यथामती तारुं,
नम्र वचन उच्चारुं, मन थकि तमने कदी न वीसारुं. ६
अभिवंदन प्रभु चरणे, निशदिन करुं हुं सदा तने नाथ;
ऐहिक आमुष्मिक सुख, आपो अति चित प्रसन्न थइ तात. ७

उपजाति.

सच्चिद्घनानंद प्रभू समर्थ, करो सदा मंगलकार्य सत्य;
भक्तो मळी मंगल गीत गाय, रहो सदा नाथ तमे सहाय. १
दयाघना देव तमे अमारी, लेशो विनंती चितमां विचारी;
जणाय तेमांथकि योग्य सारी, कृपा करीने प्रभु ल्यो स्विकारी. २
प्रभू तमारी तुलना न थाय, सदा तमारी करुणा जणाय;
तमे महामंगल मार्ग दाखो, सत्संगतीमां दिनरात्र राखो. ३

मालिनी.

अवगुण अपराधो, छे अमारा अगाध,
क्यम करि परलोके, सद्‌गती थाय नाथ;
श्रवण करि अमारा, स्वामि सर्वे विलापो,
अतिशय करुणाथी, पापनी माफि आपो. १

गायन.

पद.

धन्य धन्य धन्य धन्य, धन्य आजनो सुदिन,
मळी सर्व भक्त जन, करिये अमे प्रणाम;
सद्गुण नियम धारी, स्तुति करिये तमारी,
अर्चा एज छे अमारी, तमने अंतर्याम. धन्य धन्य०
निर्मल आपो मति, विश्वंभर विश्वपति,
तमविना नाथ नथी, अमने बिजो विराम;
भरुंसो छे नाथ भारे, भगवंतनो अमारे,
करशो कृपाल तमे, परिपूर्ण रुडुं काम. धन्य धन्य० १

पद.

विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत, विधाता०
अतर्क्य अगोचर रूप तमारुं,
व्यापी रह्या सत्ता थकी भगवंत. विधाता० १
वेद स्तुति तारी करिने विराम्या,
पाम्या नहि तारो पुरो प्रभु अंत. विधाता० २
संरक्षण सर्व काल करो छो,

प्रभु दीनवत्सल छो दयावंत. विधाता० ३
कर्म तणुं भोक्तृत्व निश्चय छे,
शुभाशुभ क्रिया थशे फलवंत. विधाता० ४
परमात्मा समदृष्टि जुवो छो,
सरखा तमे गणो दरिद्री श्रीमंत. विधाता० ५
अवलंबन आधार तमारो,
राखी अमे रहिये सदा निश्चिंत. विधाता० ६
विधि निषेधनी आज्ञा मानी,
अमें अनुसरिये तारो भक्तिपंथ. विधाता० ७
अभिवंदन नम्र थइ अमे करिये,
कृपा करी रहो तमे क्षमावंत. विधाता० ८

पद.

अति अद्भुत कला प्रभु तारी०
महामुनिजन तुज पार न पाम्या, मति चाले नव मारी अति० ॥१॥
जग रचनामां प्रभु चमत्कृतीथी, शक्ति विपुल विस्तारी अति० ॥२॥
जीव तणा अपराध न जुवो, प्रभु छो अति उपकारी अति० ॥३॥
शुद्ध सत्व गुण श्रेष्ठ तमारो, जीव छे सर्व विकारी अति० ॥४॥
दया करी प्रभु दीन जनोने, द्यो भव सिंधु उतारी अति० ॥५॥

अंक १३ मो.

आरति.

जयदेव जयदेव जय शान्तिदाता जय शान्तिदाता
दिव्य पिता प्रभु त्राता (२) त्रिभुवन विख्याता जयदेव० १
एक अखंड अनंत अजरामर साचा (२)
स्तुति गावा प्रभु तारी (२) नव चाले वाचा जयदेव० २
सृष्टिनियम साक्षात् निरखी आनंदु (२)
जगकर्त्ता जाणी प्रभु (२) प्रेम थकी वंदुं जयदेव० ३
प्रभु सर्वज्ञ समर्थ शुभ सन्मति आपो (२)
कृपाघना करुणा कारि (२) क्षमा करो पापो जयदेव० ४
कृपाविना किंचित् कार्य नहि सरशे (२)
सद्गुणि भक्त तमारा (२) भवसागर तरशे जयदेव० ५
जगतारक जगवंद्य जगदीश्वर देवा (२)
मानि दयानिधि लेशो (२) दिन जननी सेवा जयदेव० ६
करुणादृष्टि दयाल दिनजन पर करशो (२)
घटित विनंति अमारी (२) चित्त विषे धरशो जयदेव० ७
मानि बहु उपकार प्रणमुं प्रभु चरणे (२)
कृपा करी सेवकने (२) राखो निज शरणे जयदेव० ८

अंक १८ मो.

भुजंगी.

नमीए सदा सच्चिदानंदरूप, नमीए सदा सर्वविश्वाधिभूप;
नमीए सदा दीनबंधु दयाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. १
तमे छो अमारा प्रभु अन्नदाता, तमे छो अमारा सदा सत्यत्राता;
पराभक्तिभावे अमे विश्वपाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. २
कृपाथी करो सर्व रूडुं अमारुं, कृपाथी करो सर्व सृष्टिनुं सारुं,
कृपाथी करो रक्षणो सर्व काल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल.३
तमे प्राणिना सांभळीने विलापो, करीछो कृपाथी क्षमा सर्व पापो;
अमे दीनता नम्रताथी त्रिकाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल.४
प्रभु प्रार्थना लक्षमां सर्व धारो, अमारां बधां संकटोने निवारो;
अमे पामरो प्राणियो अज्ञ बाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल.५
किधां पापकर्मो अमे उग्र भारे, तमारा विना कोण तेने निवारे;
करो नाथ दृष्टी दयानी विशाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल.६
कृपाथी तमे सांभळो विश्वनाथ, विनंती करी जे अमे जोडि हाथ;
विंटाई वळी विश्वनी मोहजाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल.७
करीए अमे अर्चनाओ तमारी,कृपाथी पुरो वाञ्छनाओ अमारी;
अमे अर्पिये प्रेमनी पुष्पमाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

हे जगतना स्वामी, महा प्रभु, प्राणनाथ ! अमारा खरा प्रेमथी करेला आ नमस्कार स्वीकारशो. अमारी तारा उपर दृढ श्रद्धा छे. अमे खरी श्रद्धाथी मानीए छीए के पृथ्वी, वायु,

अग्नि, प्राणी, पर्वत, सागर, वृक्ष, तत्वादिक सघळी वस्तुओनो, चंद्र, सूर्य, नक्षत्रोनो सृजनार तुं एकलो छे. ए सर्वने माटे तें नियमो रच्याछे. तारी तुल्य बीजुं कोइ नथी; पूजवा योग्य तारा विना बीजुं कोइ छेज नहि. आखा विश्वमां, असंख्य ब्रह्मांडोमां सर्वनो रक्षक, सर्वनो पाळनार, सर्वनो आधार तुंज छे. तारो महिमा अपार छे. तारी दयानो भंडार अखूट छे. तारा उपकार अनुप छे. तारी पवित्रता अने सारापणुं केम वर्णी सकाय? जे डहापणमां, कौशल्यमां, अने चतुराईमां परिपूर्ण छे, जेनामां कशी अपूर्णता नथी, कोइ खोड नथी, जे सर्व शक्तिमान् अने अति दयाळु तथापि न्यायी छे, जे सघळी जगाए छे, बधुं जुवेछे ने सांभळे छे, जे कांइ विसरतो नथी, कोइ बीजाने विद्यमान राख्या वगर तथा कोइ रूप धारण कर्या विना मात्र पोतानी इच्छाथी जे धारे ते करी सकेछे, एवा अति प्रतापी क्षमावंत भगवान्‌ने दंडवत् प्रणाम करी वंदन करीए छीए. तने योग्य जणाय तो अमारी प्रार्थना सांभळ अमारा अपराध क्षमा कर.अमे सुमति अने सुज्ञान मागीए छीए. इंद्रियोने अने मनोविकारने सुनीतिनी योग्य मर्यादामां राखवानी प्रेरणा कर अने शक्ति आप. तारी सहायता विना रूडां कर्म करवाने करेलां अमारां सघळां प्रयत्न व्यर्थ जायछे. अमारी धारणा अने अमारा संकल्पो खोटा छे. तारुं धार्युं मात्र सत्य छे. अमे मिथ्याभिमानी दुष्ट माणस आ लोकमां यश प्राप्त करवाने, मोटा कहेवडाववाने, अने भुंडां काम करवाने, केवा तत्पर थइयेछिये, केवो उमंग राखीयेछिये! लाभ मेळववाने अने स्वार्थ साधवाने केवा तत्पर रहीएछीए! अने रूडां पुण्यनां कर्म करवामां केवा मंद छीए, केवा धीमा छीए! इंद्रि-

यादिकनां क्षणिक सुख भोगववाने केटला आतुर छीए ! मरणनो भय भूली जई केवा प्रपंच करीए छीए ! अमारा अमर आत्माना मोक्षनी, तेना नित्यना सुखनी चिंता केटली थोडी राखीए-छीए ! आ संसारनी क्षणभंगुर मालमिलकत उपर अमर्याद आसक्ति राखी मायानी एटले अज्ञाननी मोहजाळमां लपटाईने बंधाई रह्या छीए. तारी वास्तविक भक्तिनां खरां साधन छोडी आडे मार्गे, पापने रस्ते जइयेछीए. अमने आंखो छे तोपण अंध छीए. अमे अज्ञानी छीए, अमे मूर्ख छीए. अमे पापना अंधारा कूवामां पड्या छिये, दया करी अमने एमांथी काढ. सत्यज्ञानरूपी अजवाळुं आप. तारी सत्य भक्ति, तारी अनन्य भक्ति, तारी पराभक्ति रूपी दीवो अमारा अंतःकरणमां प्रदीप्त कर. आ जगत्मां सत्य मार्गे चालीए, तारा उपर प्रेम राखीए, तारा आश्रय, डहापण अने सामर्थ्य उपर श्रद्धा राखीए, तारो भय राखीए, अने सुनीतिथी वर्तिये, तोज अमारा मननो मेल जाय. बीजा कोइ बहारना उपचारथी जवानो नथी. जलथी के बीजा कशाथी ते धोवावानो नथी. सरोवर, नदी के समुद्रना स्नानथी मन चोखुं थतुं नथी. ए मेल जाय तोज अमारां मन पवित्र थाय. अपवित्र मनथी करेली सेवा, मलिन अंतःकरण छतां करेली भक्ति तुं न स्वीकारे, माटे अमारां मन पवित्र करवानी अमारी मेहेनत सफळ कर. हे महा प्रभु ! अमारा उपर प्रसन्न था. अमारां मन निर्मल करी भक्तिरसथी भर के आ संसारमां रही पाप ना करीये अने पुण्यशाली थई मुक्ति पामीए. तथास्तु.

अनुष्टुप्.

नमुं परात्पर ब्रह्म, परमात्मा महेश्वर;
नमुं हुं जगदाधार, नमुं हुं जगदीश्वर. १
नमुं विश्वेश विश्वात्मा, नमुं हुं प्राणरक्षक;
नमुं हुं करुणाकांत, नमुं कल्याणकारक. २
नमुं सर्वजगद्व्यापी, नमुं प्राणपति प्रभु
नमुं चैतन्यरूपात्मा, सच्चिदानंद ईश्वर. ३
अनंत नित्य निर्लेप, सृष्टिकर्ता सदाशिव;
मुक्तिदाता नमुं नित्ये, नमुं हुं भक्तवत्सल. ४
जगन्नाथ जग त्राता, जगदुत्पत्तिकारक;
स्वयंभू सर्व लोकेश, नमुं सर्वत्र व्यापक. ५
नमुं सर्वाद्य अव्यक्त, सर्वांतर्यामि उत्तम;
न्यायकर्ता जगद्धाता, नियंता परमेश्वर. ६
विश्वंभर विभू वंदुं, वंदु हुं विश्वपालक;
जगद्वंद्य जगाधीश, प्राणदाता प्रजापति. ७
उपकारी कृपासिंधु, नीति सज्ज्ञानवर्धक;
नमुं ज्येष्ठ नमुं श्रेष्ठ, शरण्य शान्तिदायक. ८
भयत्राता भवाधीश, भक्ताभीष्टफलप्रद;
अद्वितीय अनाद्यंत, जयदाता जगत्पति. ९
नमुं नमुं प्रसन्नात्मा, प्रेरक द्योतनात्मक;
सर्वाधार सदा वंदुं, सर्वतत्वप्रकाशक. १०
नमुं सर्वेश सर्वात्मा, सर्वसिद्धिप्रदायक;
स्वतंत्र सर्वविद्वंदुं, वंदुं सत्वगुणान्वित. ११
शुद्ध मुक्त सदाशान्त, नमुं दुष्कर्मनाशक;
शक्तिमान ज्ञानवान् वंदुं, वंदुं विश्वार्त्तिहारक. १२

नमुं हुं सविता धाता, भक्तिदाता भवेश्वर;
सर्वसाक्षी सदा वंदुं, वंदुं सद्‌बुद्धिदायक. १३
नमुं देव महादेव, महामांगल्यकारक;
महत्तत्व नमुं नित्ये, सर्वलोकप्रकाशक. १४
नमुं नमुं जगत्स्वामी, सर्वाधीश नमुं नमुं;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिकर्ता, नमुं हुं करुणाकर. १५
अज एक अनाद्यंत, अविचिंत्य अगोचर;
नमुं साष्टांग हुं नित्ये, सत्य सर्वज्ञ तारक. १६
शत मंगल नामेथी, स्तुति कीधी यथामति;
स्वीकारी सर्व ते लेशो, आपशो नित्य सन्मति. १७
तमारे शरणे राखी, भक्तसंरक्षणो करो;
सदा वात्सल्य भावेथी, दुःख दारिद्र्यने हरो. १८
कोट्यावधि महादोषो, किधाने करूंछुं सदा;
तमारो दास जाणीने, करुणाथी करो क्षमा. १९
अनन्यभक्तिभावेथी, करुं हुं अभिवंदना;
प्रसन्न थइने पूरो, मनवाञ्छितकामना. २०

इंद्रवंशा.

स्वेच्छा थकी सृष्टि तमे प्रभू किधी, स्वेच्छा थकी ते उपसंहरो वधी;
अद्‌भूत छे देव तमारि तो कृति, चाले नहीं त्यां जिक अल्पनी गति. १
कोट्यावधी दोष किधा दयानिधि, जाणुं नहीं हुं उपशांतिनो विधि;
नित्ये मने सन्मतिनाथ आपशो, संसारसिंधू थकि पार पाडशो. २
स्त्रष्टा तमे सृष्ट पदार्थ सर्वना, साक्षी तमे छो प्रभु सर्व कर्मना;
सर्वेश सर्वांतरयामिने सदा, साष्टांग वंदी प्रभु मागुंछुं क्षमा. ३

आधार बीजो नथि नाथ तुं विना, निसे करुंछुं प्रभुपादसेवना;
भक्तो तणी सर्व विपत्तियो हरो, कल्याण मांगल्य तमे सदा करो. ४
पादारविंदे नमि पाय लागुंछुं, सत्कार्यमां नाथ सहाय मागुंछुं;
दृष्टी दयानी प्रभु निस राखशो, निःशेष दोषो सहु कापि नांखशो. ५
कौटुंबि मित्रो स्वजनो जनो बधा, पामे नही किंचित दुःख आपदा;
आरोग्यता आपि करो सहायता, राखो जगत्मां प्रभु सर्व शांतता. ६
नीति प्रमाणे अनुवर्तनो थशे, सारे कृपा पूर्ण तमारि तो थशे;
माटे विनंती करुं वार वार रे, स्वीकारवाने करशो न वाररे. ७
दुर्वासनाथी प्रभु दूर राखशो, सन्मार्ग सद्धर्म मने बतावशो;
संकष्ट मारां प्रभु सर्व कापशो, सामीप्यमुक्तीपद लाभ आपशो. ८

वसंततिलका.

विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत,
इच्छा अमारि सघळी घटिताघटीत;
भक्तो तणी विनति सर्व चिते विचारी,
लेशो हशे घटित जे प्रभु ते स्विकारी. १
पुत्रो पिता समिप आवि समस्त मागे,
तेमां थकी घटित अर्थज तात आपे;
ए न्याय राखि परिपूर्ण करो सदर्थ,
सर्वे सुकार्य करवा प्रभु छो समर्थ. २
सर्वे कुकर्म करुणा करिमे शमावो,
सद्धर्मकृत्य करवा सुमती बतावो;
भक्तो मळी स्तवन नित्य तमारुं गाय,
प्रेमे करी प्रभु रहो अमने सहाय. ३

गायन.

पद.

वंदुं परब्रह्मचरण, करुंछुं शुभनामस्मरण,
भजुंछुं भवदुःखहरण, मंगल दिन मानुं आज.
संगीत गीत गाउं, चिद्घन प्रत निख धाउं,
प्रणमी कृतार्थ थाउं, जय जय जगदधिराज. वंदुं०
अतिशय मुज दुष्टकृति, क्यम करी प्रभु पामुं गति,
थर थर थर कंपुं प्रभु, करुणा करी राखो लाज;
अविचळ प्रभु भक्ति आपी, त्रिविधिजनित कष्ट कापी,
मुज शिर वरहस्त थापी, करशो हितकारी काज. वंदुं० १

पद.

जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर अविचळशुभपददाता,
तत्व महत् थकि व्याप्त विभु त्रिगुणात्मक विश्वविधाता,
दुर्मति टाळि मति शुभ द्यो दयादृष्टि करि दीननाथा. जय जय हे०
प्रभु परमकृपाल, जनप्रतिपाळ, दीनजनबंधु, दीनदयाल,
चरण तमारे नमुं हुं त्रिकाल, करुणादृष्टि करो विशाल—
शरणागत सेवक सर्वे तुज मंगलयशगुणगाता. जय जय हे० १
प्रभु कृपानिधान, बहु बलवान, नव कोई भासे ब्रह्म समान,
पूज्य मानिने करुं शुभ ध्यान, कृपाघना मुज द्यो वरदान—
विश्वनाथ विश्वंभर विभु छो विश्वविषे विख्याता जय जय हे० २
सर्वांतर्यामी, प्रभु निष्कामी, विश्वस्वामी, अविचलधामी,
सत्य सदा सचराचरगामी, भक्ति विषे मुज वृत्ति विरामी,
दयानिधि दिनवत्सल देवा सदा करो सुखशाता जय जय हे० ३

परब्रह्म महेशा, प्रभु परमेशा प्रकृतिपरेशा, विभु विश्वेशा,
प्रणमुं तमने प्रभु दिननिशा, दूर करो मुज दुरित अशेषा–
दिव्यपिता परमेश्वर तमने निरखुं सदा साक्षाता. जय जय हे०४
जय अपरंपार, छो अविकार, भक्तजनोना प्रभु आधार,
अविचल पद आपो दातार, सदा तमारा स्मरुं उपकार—
आद्य निरंजन निर्मल अविचल त्रिभुवनना प्रभु त्राता. जय जय हे०५
जनमंगलकारी, बहु उपकारी, भक्त जनोना भवभयहारी,
यथामति आ विनति उचारी, कृपा करीने ल्यो स्वीकारी—
पूर्ण करो प्रभु आश अमारी आद्य अनंत अजाता. जय जय हे०६
सुखशान्तिप्रदाता, प्रभु प्रख्याता, प्रेमभावथी नमुं जगत्राता,
आद्य अनंत अखंड अजाता, सर्व कर्मना प्रभु छो ज्ञाता—
परमात्मा परलोक विषे प्रभु समीप मुक्तिफलदाता. जय जय हे०७
हुं शरण तमारे, आव्यो द्वारे, चढशो वारे, संकट भारे,
तुज विण प्रभु ते कोण निवारे, सर्व अर्थ सेवकना सारे—
सदा तने साष्टांग विधिथी नमुं नमुं नमुं पितु माता. जय जय हे०८

पद.

सच्चिद्घनना स्वरूपमां विरामुं रे सच्चिद्०
अंतरवृत्ति विमल थया विना,
बाह्याचरण सर्व छे नकामुं रे. सच्चिद्० १
कृपाघनां करुणादृष्टिथी,
जुवो नित्ये सेवक जन सामुं रे. सच्चिद्० २
नीतिसद्धर्माचरण थकी हुं,
सदा तारो प्रसाद पूर्ण पामुं रे. सच्चिद्० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय जगदुद्धारा जय जगदुद्धारा
अविनाशी अविकारा (२) विभु अपरंपारा जयदेव० १
नमी दंडवत् नाथ नित्य तमने भजिये (२)
मंगलकारी तमारुं (२) नाम मुखे जपिये जयदेव० २
सच्चिद्घन सर्वेश संरक्षण करशो (२)
प्रेमलभक्ति तमारी (२) मुज हृदये भरशो जयदेव० ३
त्राता त्रिभुवन नाथ सद्गुणना दाता (२)
दया करो दिनजन पर (२) दिव्य पिता माता जयदेव० ४
स्रष्टा सत्य समर्थ मंगल मति देशो (२)
स्तुतिवंदनप्रार्थनविधि (२) विभु मानी लेशो जयदेव० ५
अकल कला न कलाय करुणामय तारी (२)
दया करी मुज दिनने (२) मति आपो सारी जयदेव० ६
प्रेम थकी परमेश माफ करो पापो (२)
विश्व विषे विश्वेश्वर (२) सुख शान्ति आपो जयदेव० ७
विनति अमे महाराज करिये नित्य तमने (२)
घटित मनोर्थ हशे जे (२) प्रभु आपो अमने जयदेव० ८

अंक १५ मो.

ललित.

परम इष्टने, पादपंकजे, प्रति दिने पराभक्तिपूर्वके;
परम प्रेमनी, पुष्पअंजलि, सतत अर्पिये भक्तमंडली. १

प्रभु अमूर्तनी, मूर्तिभावना, भ्रमित जीवनी, क्लिष्ट कल्पना:
अखिल विश्वनो, आदि एकज, नव कदी थशे, व्यक्त मात्र ते. २
सकल वस्तुथी, भिन्न मयछो, सबल शक्तिथी, व्याप्त नित्यछो;
विदित जीवनां, कृत्य आपने, प्रभु क्षमा करो, सर्व पापने. ३
प्रभु परात्परा, पूर्ण छो तमे, परमभक्तिथी, पूजिये अमे;
अशुभ कर्मथी, दूर राखशो, सुनितिनो सदा, मार्ग दाखशो. ४
सकल सृष्टिना, नाथ नायक, सकल विश्वमां, शांतिदायक;
नमि नमी अमे, पाय लागिये, रुडि मती महाराज मागिये. ५
दुरित कृत्य तो, थायछे अति, अवकृपा तथापी थती नथी;
अनुग्रहो अमे नित्य मानिये, प्रभुकृपा थकी, शांति पामिये. ६
जय जगेश्वरा, क्षेमकारक, जय भवेश्वरा, भक्ततारक;
प्रभु सुणो तमे, नम्र प्रार्थना, पुरि करो रुडी, सर्व कामना. ७
शुभ उपासना, आज आ समे, करि प्रभुपदे, वंदिये अमे;
विनति सांभळीने तमे वधी, शरण राखशो, रे दयानिधि. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

श्री जगदीश्वर महाप्रभु परमपवित्र भगवानने साष्टांग नमस्कार करुंछुं. सर्व ब्रह्मांडना नाथ विश्वाधिपति महाराज! तमारे शरणे आव्योछुं. मारा अपराध क्षमा करो, मारां पाप बाळी नांखो. अने मने मुक्ति आपो. आ जगत्मां जीवुं त्यां सुधी तारी भक्ति शुद्ध भावथी करुं, तारी प्रीति अर्थे अने मारो धर्म जाणी परमार्थ करुं, सदाचरणवडे पुण्यशाली थाउं, अने तारा प्रेमने पात्र थई सद्गति पामुं, ए मारी मनकामना छे. एज मारे मागवुं छे. बीजुं शुं इच्छुं? बीजुं शुं मागुं? तारी कृपाथी बीजो कोई पदार्थ मोटो नथी. तुं मुज दीन उपर प्र-

सम्र था, एज मारे मागवानुं छे. मारे बीजुं कांई जोईतुं नथी. आ संसारनां सुख दुःख कर्मादि कारणोने संयोगे उत्पन्न थाय छे. ते बधां कारण मारा समजवामां आवतां नथी. हुं तो केवळ तारा उपर भरोंसो राखी रह्योछुं. जे साधनोनी बक्षीस तें करी छे तेनो रूडो उपयोग यथाशक्ति करीने सदा तारो पाड मानुं, अनित्य सुखो भोगवतां छतां ते उपर आसक्त ना थाउं. कल्याणकारी! तारा अनुग्रहरूपी नित्यनुं सुख संपादन करवाने आतुर रहुं, ए नित्यनुं सुख मेळववाने सदा उद्यममां रहुं, निरंतर मंड्यो रहुं, आ संसारनां क्षणिक सुखना लोभे अने क्षणिक दुःखना भयथी आडी वाटे न जाउं, सुख समये तारा सुनीतिना नियमोने आधीन रहुं, अने दुःखनी वेला खरा विश्वासथी चाली, श्रद्धापूर्वक तारी अनन्यभक्ति छोडुं नहि, अने तने दोष न देतां धीरजथी जे थाय ते सहन करुं, एवी मति आप. मारी आ अरजमां कांइ अयोग्य होय तो मारी भूल माफकरीश. अमे तारां अज्ञान बालक छीए. धनादिनी अने इंद्रियना भोगनी तृष्णा सुनीतिनी घटित मर्यादामां राखवानुं सामर्थ्य नम्रतापूर्वक मागीएछीए ते करुणा करी आप. सदुद्योगथी ने सत्य मार्गे जे मळे तेमां राजी रहीए, एवो संतोष आप. संकट समय सावध रही सद्धर्मनां कर्मो चूकीए नहि, खोटे रस्ते चढीए नहि एवी बुद्धि देनार सर्वशक्तिमान महापिता विना बीजुं कोई नथी. हे मायालु पिता! परब्रह्म परमात्मा! भक्तोना अंतःकरणमां ज्ञाननो प्रकाश करनार! मारा मनन‌ो अंधकार नाश करी मारी सकल दुर्वासना दूर कर; मने वहेमना दरीआमां डुबवा न देइश. मने पाखंडना खाडामांथी काढ, मने संसारसागरथी तार. तारा ज्ञानरूपी अमृत-

तुं मने पान कराव के मारो आत्मा तने पामे.
शांतिः शांतिः शांतिः

तोटक.

परब्रह्म परात्पर विश्वपति, नमिने तमने करुं छुं विनतिः
प्रभु व्यष्टि समष्टि विषे विचरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १
प्रभुता प्रभु तारि दिसे सघळे, तुज पार पुरो अमने न मळे;
प्रगट्यो परिपूर्ण प्रताप खरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. २
भुमिमंडल सुंदर शोभि रह्युं. तुज शक्ति थकी भरपूर थयुं;
प्रभुनाथ तमे भवताप हरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ३
गगने ग्रहराज विराजि रहे, प्रभुनी प्रभुतानुं प्रमाण कहे;
सचराचर सृष्टि विषे प्रसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ४
ग्रह गोळ विचित्र गतीथि फरे, परब्रह्म तणो प्रतिबोध करे;
प्रभु निर्मित नीम थकी न फरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ५
प्रभुना पदपंकजने प्रणमुं, शुभ ध्यान धरी मनमां विरमुं;
वरहस्त तमे मुज शीष धरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ६
शुभ मंगल नाम मुखेथि जपुं, निज कर्म बधां तमने अरपुं;
मुज चित्तविषे प्रभु भक्ति ठरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ७
अविनाश पदे अभिलाष धरुं, भवसागर नाथकृपाथि तरुं;
मुज चित्त थकी कदि ना विसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ८
मुज अंतरभाव थकी विनवुं, विभुनाथ तने वदवुं शुं नवुं;
शरणागत जाणि ग्रहोज करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ९
करुणाथकि दुःख विपत्ति टळे, करुणाथकि नाथ प्रसाद मळे;
करुणाथकि कार्य समस्त सरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १०
जिवना अवगूण तमे न गणो, मुज आश्रय आप कृपाज तणो;

प्रभुरे करुणामृतवृष्टि करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ११
अवलंबन सत्य प्रभुपदनुं, शुभ कार्य करो सघळा जननुं;
मुज चित्त विषे प्रभु शांति भरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १२
प्रभु अंतरयामि अनादि तमे, तमने स्तुनिती शुभ मार्ग गमे;
निज भक्त तणी रुडि आश पुरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १३
अपराध अगाध हुं नित्य करुं, प्रभु तारि कृपा थकि मात्र तरुं;
मुज मंद मती सघळी सुधरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १४
अभिवंदन विश्वपतीचरणे, करिने रहुंछुं प्रभुने शरणे;
शुभ आशिष नाथ सदा उचरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १५

—⁂—

भुजंगी

परात्मा प्रभु चिद्घना चित्स्वरूप, सदानंद आनंददाता अनूप;
अनिर्वाच्य शक्ती तमारी अपार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. १
नियंतृत्व कर्तृत्व सत्ता तमारी, दयासिंधु दीसो बहु ऊपकारी;
सहु शास्त्रनो एज सिद्धांत सार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. २
षडैश्वर्यसंपन्न स्वामी समर्थ, पुरो सेवकोना तमे सर्व अर्थ;
कृपाविण क्रीया न थाशे लगार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ३
रची कोटि ब्रह्मांडना सर्ग पोते, महाशक्तिथी व्याप्त छो पूर्ण ज्योते;
तमे प्राणदाता प्रभु निर्विकार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ४
तमारा प्रभु विश्वमां नीम साचा, अमो जीवना सर्व संकल्प काचा,
थशे जे किधुंछे तमे नीरधार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ५
अमे अल्प प्राणी बधा देहधारी, तमे ना जुओ दुष्कृतीओ अमारी;
क्षमावो अमारा सहु दुर्विकार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ६
तमे क्षेमकल्याणआरोग्यदाता, तमे सर्वनाछो प्रभु सत्यत्राता;
अमे दीनताथी उभा आवि द्वार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ७

प्रभूपादमां जोडिने बेउ हाथ, क्षमा पापनी मागिये विश्वनाथ;
उतारो विभु विश्वसिंधुथि पार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ८
सदाचार नीती अमे आचरीये, तमारा सदा ऊपकारो स्मरीए;
करो तेज भक्ती तमे अंगिकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ९
अमारी तमे वंदना मानि लेशो, कृपाधीश नित्ये शुभाशीष देशो;
करो सर्वदा भक्तने ऊपकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १०
कुटुंबी जनो सर्व मित्रो अमारा, रहे ते शरीरे सुखी सर्व सारा;
सदा सूचवो तेमने सद्विचार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ११
अमे रंक प्राणी अती दीन बाल, नमीए तने दीनबंधु दयाल;
अमारी करो आ विनंती स्विकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार.१२

गीति.

परमात्मा परमेशा, प्रणिपतपूर्वक प्रणाम करुं नित्ये;
आपो दान अभय मुज, दुस्तरभवसिंधुथी हुं तरुं सत्ये. १
करूणाकर कर धरशो, हरशो मुज सकल दुःख संताप;
प्रेमल दृष्टि थकी प्रभु, करशो मुज रंकनां क्षमा पाप. २
नित्य निरंतर देखो, सेवक जननी बधी कृती तात;
नविन नथी के'वानुं, जाणो मुज सकल हृदयगत वात. ३
शरण सुखप्रद तारुं, ग्रहण किधुं छे अमे जगाधीश,
विमुख विभू नव करशो, वंदन करिये तने हृदे. ४
अति उपकार तमारा, क्षण प्रतिक्षणमां दिसे दयासिंधु;
दिनवत्सल दिनबंधू, तुज शुभ चरणे सदा हुं अभिवंदुं. ५
भोगववां कृत कर्मो, ए प्रभु निर्मीत नियम छे नित्य;
लाभ समिप मुक्तीनो, मळशे सद्धर्म कृत्यथी सत्य. ६
नाम कृपासिंधू ते, सार्थक करशो दयानिधी देवा,

थर थर थर कंपुंछुं, किंचित तारी नथी किधी सेवा. ७
साष्टांगे नमुं तमने, कृति सामुं प्रभु कदापि नव जोशो;
राखो लाज अमारी, शरणागतना क्षमा करो दोषो. ८
भाव थकी प्रभु तमने, भजशे तेनां त्रिवीधि दुख टळशे,
ईश्वर प्रसाद मळशे, संचित सकल शुभ धर्म कृत फलशे. ९
जय जय जय करुणाब्धे, जयजयकारो करो तमे देवा,
प्रेमथकी परमेश्वर, सेवक जननी स्विकारशो सेवा. १०
नम्र विनंति अमारी, करुणा करिने तमे हृदे धरशो;
तेमां घटित हशे जे, ते ते इच्छा तमे पुरी करशो. ११
प्रेमाक्षत अर्पण करि, प्रार्थन करिये सदा अमे तमने,
सद्‌गति प्राप्त थवाने, सन्मति देशो दयानिधी अमने. १२
शरणे रही तमारे, ध्यान तमारुं हृदय विषे धरिये;
स्तवन भजन कीर्त्तन करि, शिरसाष्टांगे प्रणाम प्रभु करिये. १३



गायन.

पद.

शुभ गुण गाय गाय मंगल पद थाय थायरे,
शुभ गुण गाय०
सुंदर नरनारी मळि मंडल लागे प्रभुने पाय पायरे,
शुभ गुण गाय०

करुणामय दृष्टीथी तमारी,
दुरित कृति सर्व जाय जायरे,
धन्य धन्य धन्य धन्य, धन्य सान्निध्यन,
मंगल कृत नित्य थाय थायरे. शुभ गुण० १

पद.

नमुं जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर, परपद मंगल दाता;
जगदुद्धारक जनसुखकारक, दुःखपरिहारक त्राता. नमुं० १
षड्गुणयुत भगवंत तमे छो, विश्वतणा विभु धाता;
ऋषि मुनियो तुज शुभ महिमाना, मंगल यश गुण गाता नमुं०२.
एक तमे अद्वितीय स्वरूप, विश्व विषे विचरो छो;
सदा निरंतर भक्त जनोनी, प्रभु संभाळ करो छो. नमुं० ३
धन्य कृतीछे जगरचनानी, कदि नव जाय वखाणी;
यथाघटित नियमो बांध्याछे, करुणा चित्तमां आणी. नमुं० ४
शक्ति सबल सर्वेश्वर तारी, विश्व विषे रहि व्यापी;
मानविजनने घटित नियमथी, मतिमर्यादा आपी. नमुं० ५
सृष्ट वस्तुथी स्रष्टा भासो, परमात्मा भगवान;
त्रिगुण शक्ति तें धारि तथापि, सात्विक गुण प्रधान. नमुं० ६
मिथ्या भासित नथी थयुं आ, सृष्टि तणुं मंडाण;
अति चातुरिथी सर्व वस्तुमां, नियम कियो निर्माण. नमुं० ७
देहाकृतिमां अतिद्रुत जे यांत्रिक युक्ति जणाय;
ते थकि प्रभु कर्ता छो तेनां, मुख्य प्रमाण गणाय. नमुं० ८
ग्रहगण गगने गणितनियमथी, अति शोभाथी प्रकाशे;
उपग्रह ग्रहयुक्तियो अस्तोदय, निरखी चित्त उल्लासे. नमुं० ९
आस्तिकजन सानंदाश्चर्य, प्रभुमहिमाने माने;
वारवार विचार करीने, ब्रह्मपदे विश्रामे. नमुं० १०
अभिवंदन दीनवत्सल तमने, करिये वारंवार;
श्रवण करो करुणानिधि सर्वे, दीन जनना उच्चार. नमुं०११
भवसागरथी तरवा तारी, करुणारूपी नौका;
प्रेमथकी सन्मार्ग बतावो, तो तरिये निःशंका. नमुं०१२

विकट विभू भवपंथ घणोछे, जीवथी कदि न तराय;
दया सिंधु करुणा करशो तो, नहि ते दुस्तर थाय. नमुं० १३
क्षति अमारी प्रभु नव जोशो, दोष किधा छे भारे;
मातपिता शिशुना अवगुणने, चित्तमां कदि नव धारे. नमुं० १४
आ संसारे शुभ कर्मोनी, मति आपो जगदीश;
सदाचरणथी भक्ति तमारी, करिये प्रभु दिननीश. नमुं० १५
जगदीश्वर जगवंद्य तमारी, अकल कला न कलाय;
सत् संकल्पो छे प्रभु तारा, मिथ्या कदि नव थाय. नमुं० १६
भक्ति विना नीति निष्फल छे, कदि करवो न वियोग;
विना नीति भक्ती करवाथी, थाय न शुद्ध प्रयोग. नमुं० १७
सत्य वचन सद्धर्माचरणो, सद्विद्या सत्संग;
चित्तार्पण प्रभुचरणे करवुं, ए भक्तिनुं अंग. नमुं० १८
अवलंबन आधार तमारो, छे साचो भगवंत;
भय संकट संताप निवारो, करुणा कारि अत्यंत. नमुं० १९
विनय थकी साष्टांगे तमने, वंदन करिये नाथ;
कृपाघना करुणादृष्टीथी, क्षमा करो अपराध. नमुं० २०
शरण तमारुं ग्रहण किधुं छे, प्रभु करशो न निराश;
अविचल पद परमात्मा आपो, जाणि तमारो दास. नमुं० २१
जय जगदीश्वर जय परमेश्वर, जय परब्रह्म परेश;
प्रसन्न थइ प्रेरो सद्बुद्धी, विनवीए विश्वेश. नमुं० २२
प्रेम थकी आज्ञाओ तारी, सेवक जन जे पाळे;
परमात्मा पोतानो तेने, जाणि सदा संभाळे. नमुं० २३
मन वाणी कायाथी तमने, करिये कोटि प्रणाम;
ऐहिक सुख आपो प्रभु अमने, परलोके निज धाम. नमुं० २४

आरति.

जयदेव जयदेव जय सृष्टिकर्ता जय सृष्टिकर्ता
संकट भय दुख हर्ता (२) विश्वतणा भर्ता जयदेव० १
जय जगवंद्य दयाल जय करुणामूर्ति (२)
मंगल महिमा गावा (२) वाणि नथी पुरती जयदेव० २.
जय चैतन्यस्वरूप गुण गणना गणतां (२)
ऋषि मुनि सर्व विराम्या (२) लक्ष्य स्थले जातां जयदेव० ३
नथि धरता अवतार नथि प्रभुनी प्रतिमा (२)
विश्वेश्वर व्यापक प्रभु (२) चिद्घन परमात्मा जयदेव० ४
अंतर्यामि अजात अनुपम अविकारी (२)
मानसि मंगल अर्चा (२) प्रभुने प्रियकारी जयदेव० ५
मळिने भक्तसमाज आराधन करिये (२)
मुक्ति पदे मळवा प्रभु (२) आश सदा धरिये जयदेव० ६
दिनजन दोष दयाल नव लक्षे लेशो (२)
दुर्मति टाळि दयानिधि (२) प्रभु सन्मति देशो जयदेव० ७
करिये सर्व प्रणाम प्रेमथकी तमने (२)
पूर्ण कृपाथकि करशो (२) प्रभु पावन अमने जयदेव० ८

— ❦ —

कठण शब्दनो कोश.

—⊰⊱—

अखंड.	जेना भाग थाय नहि; जेना अंश थाय नहि ने होय नहि.
अखिल.	सर्व; कुल; बधुं.
अगम्य.	न पामी सकाय एवुं; न जणाय एवुं.
अगाध.	अपार; गहन.
अगोचर.	इंद्रियोना जाणवामां न आवे एवुं.
अग्रे.	आगळ, पहेलां.
अघ.	पाप; अपराध, गुन्हो.
आश्रित.	सेवक, दास, चाकर, नोकर.
अचिन्त्य.	विचारमां आवी सके नहि एवुं.
अजर.	जेने घडपण नहि ते.
अंजलि.	खोबो, पोश.
अजात, अज.	जन्म रहित. जेने अवतार नथी ते.
अतर्क्य.	विचारमां न आवी सके.जेनो तर्क थई न सके ते.
अतुल.	जेनी बरोबर बीजुं नहि ते.
अत्युग्र.	मोटुं, भारे, महा.
अदृश्य.	देखाय नाहि तेवुं.
अद्भुत.	आश्चर्य कारक, चमत्कारी.
अद्वितीय.	जेना जेवुं बीजुं नथी.
अधिष्ठान.	१ स्थिति. २ राज्य.
अध्यक्ष.	मुख्य, प्रमुख.
अध्यात्मिक.	आत्मानुं.

अनन्यभक्ति. एक ईश्वर विना बीजा कोइ देव उपर भक्ति न राखवी ते.

अनादि. आरंभ वगरनुं.

अनाद्यंत. जेनो आरंभ अने अंत नथी.

अनिर्वाच्य. कही सकाय नहि, वर्णवी सकाय नहि.

अनुकंपा. दया, करुणा.

अनुग्रह. कृपा, महेरबानी, उपकार.

अनुपम. जेने कोइ जोडे सरखावी सकाय नहि.

अनुभवुं. भोगवुं.

अनुवर्त्तन. पाछळ पाछळ चालवुं.

अन्तः अंतरनुं, मननुं, मांहेनुं, अंदरनुं.

अन्तर्गत. मनमांनुं, मनमां रहेलुं.

अन्तर्याग. मानसिक पूजा.

अन्तःस्थ. मनमां रहेलुं.

अन्य. बीजुं.

अन्योन्याकर्षण. एक बीजा तरफ खेंचवानो गुण.

अपरिमेय. मापी सकाय नहि तेवुं, मापमां न आवे एवुं.

अप्रतिम. जेनी मूर्त्ति नथी, जेनी छबी नथी.

अपाय. दुःख, कष्ट, सन्ताप.

अबाध. निर्दोष.

अब्धि. सागर; मोहाब्धि एटले मोहनो सागर.

अभाव. न होवुं.

अभिलाष. इच्छा, आशा, उमेद.

अभिवंदन. नमस्कार.

अभीष्ट. इच्छेलुं, सारुं. भक्ताभीष्ट एटले भक्तनुं इच्छेलुं.

अभेद्यपट.	भेद, प्रवेश न थाय एवो पडदो.
अभ्युदय.	चढती कला, सारो वखत.
अमर.	जेने मरण नहि.
अरिष्ट.	अमंगल, पीडा, संताप.
अर्चन.	सेवा, पूजा.
अर्थ.	सार, फल, लाभ.
अर्भक.	बालक, छोकरूं.
अल्पधी.	थोडी बुधिवाळुं.
अल्पज्ञ.	थोडुं जाणनार, अणसमजु. अल्प एटले थोडुं, ज्ञ जाणनार.
अवकृपा.	गेरमहेरबानी.
अवगणना	न गणकारवुं.
अवलंबन.	वळगी रहेवुं, पकडवुं, आश्रय, आशरो.
अविद्या.	अज्ञान.
अविनाश.	नाश नहि पामे तेवुं, सदाकाल रहे एवुं.
अविहित.	जे करवानुं कहेलुं नाहि ते; जे करवानो निषेध करेलो ते.
अव्यक्त.	गुप्त, अदृश्य, प्राणसनी दृष्टिवडे देखाय नाहिएवुं.
अस्तित्व.	होवापणुं.
आर्तिहारक.	आर्ति एटले दुःख, संताप. हारक एटल हरण करनार, लइ लेनार.
आशय.	हेतु, मतलब, भावार्थ, तात्पर्य.
आश्वासन.	दिलासो, धीरज.
इष्ट.	इच्छेलुं, प्रिय, वाहालुं, मारूं.
ईश.	धणी, स्वामी, राजा.

उत्पादक.	उत्पन्न करनार, सरजनार.
उद्भव.	उत्पत्ति.
उन्नति.	उंची अवस्था. उत्कृष्ट स्थिति.
उपकृति.	उपकार, पाड.
उपग्रह.	ग्रहनी पाछळ फरनार नानोग्रह. जेम चंद्र ए पृथ्वीनो उपग्रह.
उपशांति.	शांति.
उपसंहार.	समेटी लेवुं.
उपाधि.	मोह जाल. विषयो. पदार्थो. कारणो.
उपेक्षा.	विसारवुं, भूलवुं.
उभय.	बेउ.
ऊर्मि.	उछाळो, तरंग. मनोवृत्ति.
ऐहामुष्मिक.	आ लोक अने परलोकनुं. ऐहिक एटले अहींनुं, आ संसारनुं अने आमुष्मिक एटले परलोकनुं के मुआ पछीनुं.
औदार्य.	उदारपणुं.
औषधी.	वनस्पति.
कटाक्ष.	जराक नजर करवी. सहज जोवुं.
कन्द.	संग्रह. मूळ.
करुणाब्धि.	दयाना सागर.
कर्तृत्व.	कर्त्तापणुं.
कर्तुमकर्तुम् अन्यथाकर्तुम्.	कर्तुम् करवाने. अकर्तुम् न करवाने; अन्यथा कर्तुम्, बीजां रूप करवाने.
कर्त्तव्य.	करवा योग्य. (कर्त्तव्य कर्म एटले फरज, धर्म)

जे काम आपणे करवां जोइए ते.

कामद. इच्छा पूरी पाडनार.

कारुण्य. करुणा, दया.

किल्बिष. पाप.

क्लिष्ट. ताणी तोशीने बेसाडेलुं. खोटुं.

कुपित. कोपायलुं, क्रोधायमान थयेलुं.

कृतज्ञ. करेलो उपकार जाणनार.

कृतघ्न. करेलो उपकार भूलीजनार.

कृतकृतार्थ. आ जगत्मां जे करवानुं ते करी चूकेलो.

कृपा. महेर.

कृपाघन. घणी कृपावाळो.

क्रम. अनुक्रम.

गहन. न कळाय एवुं, न समजाय एवुं.

गुणान्वित. गुणयुक्त, गुण भरेलुं; आन्वित एटले युक्त के भरेलुं.

ग्रहगण. ग्रहोनां टोळां.

ग्रहयुति. एक ग्रह बीजा ग्रह के सूर्य उपर थइने जतो जणाय ते.

ग्रहराज. सूर्य.

घांटी. कठण मार्ग, मुशकेल वखत.

चमत्कृति. अचरत पमाडे एवां काम.

चिद्घन. मोटुं चैतन्य, परमेश्वर.

चिद्रूप. चैतन्यरूप, चिदात्मा.

जगत्त्रयगुरु. त्रण जगत्ना गुरु.

जगन्निवास. जगत्मां व्यापी रहेला.

जनित.	उत्पन्न थयेलुं, उपजेलुं.
तत्पद.	परमेश्वर, ते पद.
तदनुसार.	ते प्रमाणे, तेने अनुसरीने; तत् एटले ते, अनुसार, प्रमाणे.
तंत्र.	रचना; जगत्तंत्र एटले जगतनी रचना के गोठवण.
तोष.	संतोष.
त्राता.	तारनार, रक्षण करनार.
त्रिभुवन.	त्रिलोक जुओ.
त्रिलोक.	१ स्वर्ग, २ मृत्युलोक, ३ नरक.
त्रिविध.	त्रण प्रकारनुं, १ अध्यात्मिक, एटले शरीर अने मन संबंधी संताप, जेवा के खेद, शोक रोग इत्यादि. २ आधिभौतिक, सृष्टिना उत्पात, जेवा के भूकंप, रेल, दुष्काल, आग, इत्यादि. ३ आधि दैविक-अकस्मात् दैवीकोप, जेवा के विजळीनुं पडवुं, कोगळीयुं इत्यादि.
दिनमणि.	सूर्य.
दीक्षा.	उपदेश. दंड दीक्षा एटले सजारूपी उपदेश.
दुरित.	पाप, नठारुं.
दुष्कर्म.	खोटां काम, नठारां कर्म.
दुस्तर.	तरवुं कठण पडे, मुशकेलीथी तराय एवुं.
दृक्.	नजर, दृष्टि.
दृढतर.	अति दृढ.
द्योतनात्मक.	प्रकाशमान.
द्रष्टा.	जोनार.

द्रुम.	झाड.
द्वय.	बंने.
धन्यवाद.	उपकार.
धाता.	निर्माण करनार, पेदा करनार.
धृति.	धीरज.
ध्वजा.	झुंडो, नीशान, वावटो.
ध्वांत.	घोर अंधारुं.
निगम.	वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथ.
निग्रह.	वश करवुं.
निज.	पोतानुं.
नित्य.	सदाकाल के अनंत काळ सूधी रहेनार.
नित्यमेव.	सदा, रोज, नित्य.
निदान.	नक्की.
निंद्य.	निंदा करवा योग्य.
निधान.	भंडार.
निपात.	पडवुं.
निमग्न.	डुबेलुं, लपटायलुं.
नियंता.	नियम चलावनार, सर्व अधिकार चलावनार राजा, बधाब्रह्मांडने नियममां राखनार.
नियंतृत्व.	नियंतापणु
निवृत्त.	शान्ति पामेलुं.
निर्मित.	निर्माण करेलुं, ठरावेलुं.
निवारो.	दूरकरो, नाशकरो, कहाडी नाखो.
निशमणि.	चंद्र.
निःशेष.	बीलकुल, अशेष, बधुं, तमाम.

निषिद्ध.	मनाकरेलुं, जे करवानी ना कहीछे, अविहित, निंद्य.
निष्ठा.	श्रद्धा, विश्वास, अचल प्रीति.
निष्ठुर.	नठारुं, खोटुं, मारुं.
नेति.	एवो नथी, कशा जेवो नथी, कोइ जेवो नथी. न+इति—नेति ए श्रुति वचन छे.
नौका.	वहाण; नाव.
न्यूनता.	ओछापणुं, खामी.
पंकज.	कमल.
पंगु.	पांगळो.
पतन.	पडवुं, मरवुं.
पदारविंद.	(पादारविंद.) चरणकमल.
परब्रह्म.	मोटा ब्रह्म, परमेश्वर.
परमपद.	परपद, श्रेष्ठपद, उत्कृष्टपद, उत्तम स्थिति, मोक्षपद.
परमात्मा.	परमेश्वर.
पर.	उत्कृष्ट, उत्तम, दूर, भिन्न, जुदुं.
परात्पर.	सर्वथी श्रेष्ठ.
परात्मा.	मोटा आत्मा, परमात्मा.
पराभक्ति.	उत्तम प्रकारनी भक्ति.
परायण.	वळगेलुं. लागेलुं, तत्पर.
परेश.	मोटा ईश्वर.
पाणी.	१. हाथ, २. जल.
पादपद्म.	चरण कमल.
पादाब्ज.	चरण कमल.
पामर.	अज्ञानी, तुच्छ, हलकुं, नीचुं.

पारमार्थिक.	उत्तम अर्थ संबंधी.
पाश.	फांदो, जाल, बंधन.
पुंज.	ढगलो.
पूर्वक.	साथे, थी, जोडे.
पृथक.	जुदुं, निराळुं.
प्रकृतिपर.	सृष्टिथी अधिक, जगत्थी जुदुं.
प्रतिज्ञा.	वचन, कबुलात.
प्रदाता.	आपनार.
प्रणत.	नमेलुं, पगे पडेलुं.
प्रणमुं.	पगेलागुं.
प्रणिधान.	ध्यान, लक्ष.
प्रणिपत.	प्रणाम, नमस्कार.
प्रपालन.	पाळवानुं काम.
प्रभा.	तेज, महिमा, खूबी.
प्रभुत्व.	मोटाइ, वडाइ, प्रभुता.
प्रभुवर.	महाप्रभु.
प्रयास.	महेनत, श्रम, तस्दी.
प्रवृत्त.	परोवायलुं, लागेलुं.
प्रशंसा.	वखाण, तारीफ.
प्रसाद.	कृपा, महेरबानी.
प्राणायाम.	प्राण वायुने रूंधवो. श्वास खेंचीने मनोवृत्ति स्थिर करवी.
प्रेमल.	प्रेमवाळुं.
प्रेरशो.	मूझाडशो.
बलिष्ठ.	सर्वथी बलवान.

बाधा.	हरकत, अडचण, संकट.
भगण.	तारा, नक्षत्र.
भर्ग.	तेज, ज्ञान अने शक्ति.
भवधर.	संसारने धारण करनार, जगतने आधार आपनार.
भासे.	प्रकाशे.
भोक्तृता.	भोगववापणुं.
भ्रमित.	भमेलुं, भुलुं पडेलुं.
भ्रमण.	फरवुं, गति.
भ्रांति.	भ्रम. भूल.
मग्न.	डूबी गयेलुं, लपटाइ गयेलुं,
महत्व.	मोटाइ, प्रताप.
महन्त.	महापंडित, मोटा साधु.
महाशक्ति.	महा अने शक्ति एटले मोटी शक्ति.
महेश.	मोटा ईश्वर.
महोदधि.	महासागर.
माया.	१ शक्ति २ मोह; प्रपंच.
मुक्त.	छूटुं, उत्तम गति पामेलुं.
मूक.	मुगो, बोबडो.
यथा.	जे प्रमाणे, जेटलुं.
यद्वातद्वा.	जेम तेम.
याचवुं.	मागवुं, जाचवुं.
यातना.	दुःख, पीडा.
याम.	पहोर (रात्र दिवसना), गति करनारा.
युत.	युक्त.

रति.	प्रेम, स्नेह.
रवींदु.	सूर्य अने चंद्र.
रिष्ट.	माठुं, खोटुं.
लक्ष्य.	जोवानुं ते.
लता.	वेलो.
लिप्त.	गरक, लपटाइ गयेलुं, फसाइ गयेलं.
वत्सल.	वहालुं, प्रिय (भक्तवत्सल एटले जेने पोताना भक्त वहाला छे.)
वन्दु.	नमुं.
वंद्य.	नमवा योग्य.
वन्हि.	अग्नि.
वर.	वरदान, बक्षीस.
वरेण्य.	वखाणवा जोग.
वरद.	वरदान करनार.
वरिष्ठ.	सर्वोत्तम, सउथी मोटुं.
वाक् काया मनथी.	वाणी, शरीर अने मन एटले बोलवुं, करवुं अने धारवुं.
वाञ्छा.	इच्छा.
विकर्म.	दुष्ट काम.
विकासित.	खुलेली.
विकार.	बगडेली मनोवृत्ति.
विडंबना.	दुःख, संताप.
विदारो.	दूर करो.
विधाता.	मोटो निर्माण करनार, ठरावनार.

विधान. विधि, सेवानो प्रकार.
विनयभाव. नम्रता.
विपत्ति. दुःख, संकट, आपत्ति, आपदा.
विबुद्ध. वधारे बुद्धिवाळुं.
विभु. सर्व व्यापक, बधे ठेकाणे हाजर,
विमल. मेल वगरनुं, चोख्खुं.
विमुख. दूर, आघुं.
विराजमान. शोभायमान.
विराम्या. थाक्या.
विश्वाधीश. विश्वना अधीश एटले उपरी.
विश्वेश. विश्वना धणी, ब्रह्मांडना स्वामी.
विश्वंभर. जगत्नुं भरण पोषण करनारा.
विषय. इंद्रियोने भोगववानी वस्तु.
विषाद. खेद.
विहित. जे करवाने कहेलुं छे, सारां काम, घटारत.
विज्ञप्ति. विनति, अरज, मागवुं.
विज्ञान. विशेष ज्ञान.
वृथा. मिथ्या, फोगट, नकामुं.
वृष्टि. वरसाद.
व्रतस्थ. नियम पाळनारा.
व्यष्टि. पृथक् पृथक् वस्तु.
व्योम. आकाश.
शमदमादि. एटले शम, दम, तप, तितिक्षा समाधान, अने श्रद्धा. शम एटले मननी शांति, दम ए-

टले मननो निग्रह अथवा मननुं मारवुं, मनने कबामां राखवुं. तप एटले भक्ति करवामां काळ काढवो, तथा सारां कामनो विचार करवो तथा सारां काम करवां; तितिक्षा एटले आपत्तिनां के दुःखनी वेळा धीरज राखवी, गभरावबुं नहि, अने परमेश्वरनी इच्छाने आधीन रहेवुं. समाधान एटले मनने संतोषमां स्थिर राखवुं. श्रद्धा एटले ईश्वर एक छे अने तेज पूज्य छे, एवो दृढ विश्वास राखी ते प्रमाणे वर्त्तवुं.

शरण्य.	रक्षण करनार, पाळनार, बचावनार.
शशी.	चंद्र.
शान्ताकार.	शांन्ति रूप.
शाप.	दुःख थाय तेवी आज्ञा.
शिव.	कल्याण करनार, मंगळकारी.
शिशु.	बालक.
शीघ्र.	उतावळे.
श्रुति.	वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथ.
श्रेय.	कल्याण, शुभ, सारुं.
षडैश्वर्य.	छ ऐश्वर्य. (प्रार्थना गद्य १०.मीनी टीपमां जुवो)
सगुण.	जेनामां संपूर्ण अने सर्व सारा गुण छे.
संकल्प.	ठराव, जे वातनुं नकी कर्युं होय ते.
संचित.	एकठुं करेलुं, भेगुं करेलुं.

सर्ग. सृष्टि, रचना.
सतत. सदाकाळ, हमेश.
सद्धर्म. साचो धर्म, रुडो धर्म.
सद्य. तुरत.
सन्निध. पासे, समीप, नजीक.
सन्ध्या. परमेश्वरनुं ध्यान करवानो समय के संधि.
सन्मति. सारीबुद्धि, सारो विचार.
संपूज्य. रुडी रीते पूजवा लायक.
समष्टि. समुदाय.
समीप मुक्ती. मुवा पछी परमेश्वरनी पासे रहेवुं ए समीप मुक्ति.
संरक्षार्थ. सारा रक्षणने माटे.
सर्वविद्. बधुं जाणनार, सर्वज्ञ.
सर्वथा. हरेक रीते, बधे प्रकारे.
सर्वज्ञ. बधुं जाणनार.
सर्वात्मा. परमात्मा.
सर्वान्तर्यामी. सर्वना अंतःकरणनी वात जाणनार, सर्वना मनमां पेसीने जोनारा.
सर्वादि. सउथी पहेला,
सर्वोत्कृष्ट. सउथी सारो.
सविता. उत्पन्न करनार, जगत्कर्त्ता.
संसाराब्धि. संसार सागर.
संस्कार. कर्म, काम.
सहनशीलता. खमी रहेवानो गुण.

सहस्रधा.	हजारवार.
संहार.	नाश. संहार करवो एटले नाश करवो.
स्वयंभु.	स्वतःसिद्ध, कोइनाथी उत्पन्न थएला नाहि.
स्वर्गापवर्ग.	मोक्षधाम, परमसुखधाम.
स्वल्प.	नानुं, सहेलुं, टूंकुं.
सात्विक.	सारुं शान्त प्रकृतिनुं.
साधु.	सद्गुणी माणस.
सानंदाश्चर्य,	आनंद साथे आश्चर्य, हरखनीजोडे अचंबो
साष्टांग.	आठ अंगथी.
सिंधु.	समुद्र, दरीओ, सागर.
सुखप्रद.	सुख आपनार.
सुतवात्सल्य.	पुत्रप्रेम, बापनुं छोकरां उपर हेत.
सुधा.	अमृत,
सुरवर.	देवमां मोटा, सुर एटले देव, वर एटले मोटा, के उपरी.
सुषुप्ति.	घोर निद्रा, भरउंघ.
सृजाव्या.	उत्पन्न कर्या.
सृष्ट्युत्पत्ति.	जगत्नुं पेदा थवुं.
सेतु.	पुल.
स्तव.	स्तोत्र, स्तवन.
स्थिरचर.	जड चैतन्य.
स्रष्टा.	सृजनार, बनावनार, परमेश्वर.
हर, हर्त्ता.	लेइ लेनार, नाश करनार.
हरि.	पाप हरण करनार परमेश्वर. संस्कृत कोशमां

हरि शब्दनो अर्थ विष्णु के कृष्ण कर्यो छे, पण गूजरातना जूना अने नवा कविओए ए शब्दने जगत्कर्ता अने नियंता परमेश्वरने अर्थ वापर्यो छे. प्रार्थना समाजना बधा ग्रंथोमां एज अर्थ राख्यो छे, हरि एटले परब्रह्म परमेश्वर.

हितार्थ.	फायदाने वास्ते; हित एटले गुण के फायदो; ने अर्थ एटले, वास्ते.
हुताशन.	अग्नि.
क्षणध्वंसी.	क्षणमां नाश पामे एवु क्षणभंगुर.
क्षणु, अणु.	पळ, जरावार.
क्षति.	नुकसान, दुःख, पीडा.
क्षांति.	क्षमा, माफी.
क्षेमधाम.	सुख मळवानुं ठेकाणुं; क्षेम एटले खेम के सुख ने धाम एटले ठेकाणुं.

जाहेरखबर.

अमदावाद प्रार्थना समाजना पुस्तकोनुं तथा बीजी समाजो तरफथी वेचवा आवेलां पुस्तकोनुं मूल्य तथा मळवानां ठेकाणां.

ईश्वर प्रार्थना माळा आवृत्ति चोथी.	१-०-०
धर्मतत्त्व पु. १ लुं आंक. १, २,३,४,५,६,७, दरेकनो.	०-१-०
एजन पु. २ जु आंक. १, २,३,४,५, दरेकनो.	०-१-०
स्त्री सुबोध आंक. १,२,३,४, दरेक.	०-०-३
प्रार्थना पोथी भाग १,२,३, द.	०-०-६
मंगलस्तोत्र.	०-०-९
धर्म विवेचन.	०-३-६
अनुष्ठान पद्धति.	०-५-०
गायन भाग २ जो.	०-६-०
आरति भाग १-२ जो दरेकनी.	०-०-३
एजन मोटा अक्षरनी.	०-०-६
ईश्वर नित्योपासना.	०-०-१
अरजी.	०-०-१
ईश्वर प्रार्थना माळा हिंदी तथा अभंगमां.	०-२-०
ईश्वरप्रार्थनामाळा आंक ६ ठो.	०-१-०
बोधवचन.	०-२-०
वर्षारंभ निमित्त ईश्वरस्तुति तथा प्रार्थना	०-०-३
वास्तु निमित्त ईश्वरप्रार्थना	०-१-०
एजन नानी	०-०-६
रोगशान्त्यर्थ प्रार्थना	०-०-६
होळी विषे	०-१-०
प्रतिज्ञापत्र	०-१-०
बाबु सत्येंद्रनाथ ठाकोरनो ईश्वर उपासना विषेउपदेश	०-१-०
एजन भ्रातृभाव विषे	०-१-०
एजन परकाल विषे	०-२-०
खेडा प्रार्थनासमाजनो रिपोर्ट	०-२-०

आ ग्रंथो अमदावाद ट्रेनिंग कोलेजनी सामे प्रार्थना स-

माजना मंदीरमां रोकडी कीमते मळशे. ते शिवाय गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटीनी ओफीसमां, राजकोटमां विज्ञानविलास ओफीसमां, वडोदरामां रा. लल्लुभाइ दलपतरामनी पासे; मुंबइमां रा. दामोदरदास ईश्वरदास बुकसेलरनी दूकाने, सुरतमां रा. लल्लुभाइ जमनादास (ठेकाणुं केळांपीठमां) नी पासे; तथा सुरत प्रार्थनासमाजना सेक्रटरी पासे; भुजमां रा. केशवराम पीतांबरनी पासे ए सिवाय नौसारी, भरुच, अंकलेश्वर, पेटलाद, नडीआदमां त्यांना प्रार्थनासमाजना सेक्रेटरी पासे रोकडी कीमते मळशे. दश करतां वधारे राखनारने कमीशन सेंकडे १० टका अथवा पोष्टेज बेमांथी एकज मजरे आपवामां आवशे. ते करतां ओछी राखनारने बेमांथी कांइ पण आपवामां आवशे नहि.

— ❧ —